विक्रम संवत् 2080 ▪ अगहन (मार्गशीर्ष)/पौष मास(10) ▪ 01 दिसम्बर 2023 ▪ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2021-23, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20

ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

2024 - जनता हर बैरियर तोड़कर समर्थन करेगी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्री लालकृष्ण आडवाणी जी के जन्मदिन पर शुभकामनाएं दीं।

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने रीवा में सार्वजनिक सभा को संबोधित किया।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने रथ यात्रा में भाग लिया।

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने रथ यात्रा से प्रचार किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने तिरुमाला में श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में पूजा-अर्चना की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारतीय वायुसेना के मल्टीरोल फाइटर जेट तेजस में उड़ान भरी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने उत्तराखंड में टनल से बचाए गए श्रमिकों से बातचीत की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्री कृष्ण जन्मस्थान मंदिर मथुरा में दर्शन और पूजा की।

अनुक्रमणिका

वर्ष-55, अंक : 10, भोपाल, दिसम्बर 2023

संपादकीय ▶ संजय गोविन्द खोचे 04

- मोदी पर भरोसा अटूट

कवर स्टोरी 05

- 2024 - जनता हर बैरियर तोड़कर समर्थन करेगी

- **मोदी गारंटी पर भरोसा :** 09
  - » विजय ऐतिहासिक है, अभूतपूर्व है विकसित भारत की नींव मजबूत...
- **मोदी मैजिक :** 12
  - » मध्यप्रदेश में चला मोदी मैजिक ...
- **विकसित भारत-संकल्प यात्रा :** 14
  - » दशकों से उपेक्षित वर्ग के पास खुद चलकर गई सरकार...
- **महा उत्सव का समापन - नए संकल्प :** 18
  - » सौगंध मुझे इस मिट्टी की, हम भारत भव्य बनाएंगे...
- **गारंटी पूरी होने की गारंटी :** 21
  - » गरीबों के लिए 4 करोड़ घर बनाए, खुद के लिए एक भी नहीं बनाया...
- **सुरक्षा बलों का राष्ट्र निर्माण में योगदान :** 24
  - » सीमाओं पर जवानों के कारण भारत सुरक्षित...
- **संपूर्ण संस्कृति का उत्सव :** 27
  - » ब्रज 'लाल जी' और 'लाड़ली जी' के प्रेम का साक्षात् अवतार है...
- **मन की बात :** 29
  - » परिवर्तनों का नेतृत्व 140 करोड़ जनता कर रही है...
- **कविता : अटलजी की जयंती पर विशेष :** 34
  - » कोटि चरण बढ़ रहे ध्येय की ओर निरन्तर...
- **पुण्यतिथि :** 36
  - » ठाकरेजी के जीवन को मैंने स्वयं देखा है: लालकृष्ण आडवाणी...
  - » प्रमुख लोगों की दृष्टि में डॉ. अंबेडकर
- **जयंती :**
  - » धर्मो रक्षति रक्षित: पं. मदन मोहन मालवीय 38
  - » सोमनाथ मंदिर के पुर्नरूद्धार पर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का प्रेरक उद्बोधन...
  - » मौन कर्म साधक परमपूज्य बालासाहब देवरस...
- **विचार प्रवाह :** 41
  - » राष्ट्र और राज्य...

मुख्य व्रत-त्यौहार

5. काल भैरवाष्टमी 7. भ. महावीर दीक्षा कल्याणक 8. उत्पन्ना एकादशी व्रत 10. प्रदोष व्रत 11. शिव चतुर्दशी व्रत, पाक्षिक प्रतिक्रमण 12. स्नानदान श्राद्ध अमावस्या 14. चन्द्रदर्शन 16. विनायकी चतुर्थी व्रत 18. चम्पा षष्ठी, बैगन छठ 19. नन्दा सप्तमी 23. मोक्षदा एकादशी व्रत, मौन ग्यारस 24. प्रदोष व्रत, अनंग त्रियोदशी 25. रोहिणी व्रत, पाक्षिक प्रतिक्रमण 26. स्नानदान व्रत, दत्त पूर्णिमा, 28. कुमुहूर्त्ता प्रारम्भ 30. गणेश चतुर्थी व्रत

मुख्य जयंती-दिवस

3. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती, विश्व दिव्यांग, भोपाल गैस त्रासदी दि. 4. स्वामी ब्रह्मानंद लोधी जयंती 10. श. वीर नारायण सिंह बलि. दिवस 15. सरदार पटेल पुण्यतिथि 17. गुरू तेगबहादुर श. दि. 18. गुरू घासीदास जयंती 20. संत गाडगे महाराज निर्वाण दिवस 22. श्रीनिवास रामानुजन जयंती 24. राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस, दादा धूनी वाले निर्वाण दिवस 25. पं. अटल बिहारी वाजपेयी जयंती, पं. मदनमोहन मालवीय जयंती 29. म. छत्रसाल परमधाम वास दिवस

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

हमें एक ऐसा भारत बनाना है जो हमारे पूर्वजों के भारत से भी अधिक गौरवशाली हो।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

मोदी पर भरोसा अटूट

जनता ने बड़े धैर्य से सूझबूझ के साथ अपना निर्णय सुनाया| एक तरफ तेलंगाना में भाजपा के सिपाहियों ने मुख्यमंत्री जी को मात दी| वोटो के प्रतिशत में शानदार बढ़ोत्तरी दर्ज की| विधानसभा में भाजपा की स्थिती मजबूत की| तो दूसरी तरफ छत्तीसगढ़, राजस्थान व मध्य प्रदेश के मतदाताओं ने सिद्ध किया कि मोदी जी दिलों पर राज करते हैं|

2023 के पांच राज्यों के चुनाव में जन-जन की अदालत में मतदाताओं के पास दो ही विकल्प थे। या तो मोदी जी को चुनें या मोदी विरोधियों को । एक तरफ मोदी जी के विरोधियों के पास 70 साल की विरासत थी, तो दूसरी तरफ मोदी जी के सेवा काल के 9 साल, निर्णय जनता की अदालत को करना था। जनता ने बड़े धैर्य से सूझबूझ के साथ अपना निर्णय सुनाया। एक तरफ तेलंगाना में भाजपा के सिपाहियों ने मुख्यमंत्री जी को मात दी। वोटो के प्रतिशत में शानदार बढ़ोत्तरी दर्ज की। विधानसभा में भाजपा की स्थिती मजबूत की। तो दूसरी तरफ छत्तीसगढ़, राजस्थान व मध्य प्रदेश के मतदाताओं ने सिद्ध किया कि मोदी जी दिलों पर राज करते हैं। अब महत्वपूर्ण प्रश्न आता है मोदी जी दिलों पर राज क्यों करते हैं। ऐसा क्या है कि मोदी जी का विकल्प नहीं है। मोदी जी का जादू क्यों चलता है?

इसका उत्तर खोजने के लिए पीछे के कार्य का विश्लेषण करना होगा। एक तरफ कांग्रेस ने वोट बैंक की राजनीति की, देश के हितों को नजर अंदाज किया। जनता की उन्नति की जगह परिवार पूजा को महत्व दिया। विदेशी ताकतों के सामने हथियार डाले, देश की सीमाओं से समझौता किया, युवाओं को उनके हाल पर छोड़ा, देश के आर्थिक स्थिती कंगाली की तरफ ले गए, तुम भी खाओ मुझे भी खाने दो को प्राथमिकता दी, ईमानदारी, पारदर्शिता भाषणों तक सीमित रही, महिला सम्मान केवल चुनावी वादा रहा, ऐसी अनेकों बातें हैं जिनके कारण जनमानस निराश हो चुका था, घोटाला ब्रेकिंग न्यूज थी, कांग्रेस के कारनामों से जनता ऊब चुकी थी, अंधकार से बाहर निकालने के लिए बेचैन थी, नए रास्ते को तलाश रही थी, विकल्प खोज रही थी, कांग्रेस से मुक्ति पाना चाहती थी, विकल्प में भाजपा के सिपाही मोदी जी के पास 12 साल के गुजरात की सेवा का, विकास का, जिम्मेदारी का, ईमानदारी का, पारदर्शिता का रिकॉर्ड था, जनता ने भरोसे को प्राथमिकता दी, अब मोदी जी की बारी थी मोदी जी ने हर परिस्थिति में जनता का साथ निभाया, जनता की अपेक्षाओं, आकांक्षाओं पर खरे उतरे, चाहे सीमाओं की रक्षा की बात हो,सेना के मनोबल का विषय हो, आतंकवाद के संपूर्ण समापन व समाधान की बात हो, काले धन पर अंकुश लगाना हो, डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर हो, गरीब लोगों के बैंक में खाता खुलवाना हो, खुले में शौच से मुक्ति हो, गरीब किसानों को साहूकारों के चंगुल से मुक्ति करवाना हो, विदेशों में आपदा में फंसे भारतीयों को सकुशल वापसी करवाना हो, स्वच्छता की बात हो, आधुनिक रेलवे या रेलवे के आधुनिकीकरण का विषय हो, इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास या आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर बनाना हो, 70 साल से बिजली से मोहताज गांव को दूर दराज के होने के बाद भी देश का कोई भी कोना ऐसा नहीं जहां बिजली ना पहुंच पाई हो, नल से जल, ऑप्टिकल फाइबर का विस्तार, मेट्रो रेल का विस्तार, नौकरी में भर्ती में पारदर्शिता, 33 लाख करोड़ रुपए का खातों में हस्तांतरण के बाद भी जीरो लीकेज, कोरोना काल में देशों का नेतृत्व,135 करोड़ लोगों को आपदा से बाहर निकाला और 100 देशों को वैक्सीन भेज कर बड़े भाई की भूमिका निभाई। विदेशी निवेश कोरोना काल में भी देश के दरवाजे पर खड़ा था। आत्मनिर्भर भारत से देश के कारीगरों, मेहनतकशों को नया मौका दिया। इस तरह कितने उदाहरण हैं जो जनता को मजबूर करते हैं कि मोदी जी दिलों पर राज करें। यह बात तो स्वयं सिद्ध है कि मोदी जी जनता के दिलों पर राज करते हैं । अब जब लोकसभा के चुनाव की बात आती है तो भारतीय जनता पार्टी 2019 में 2014 से ज्यादा जनता का समर्थन पाकर सीटों का इजाफा करती है।

किसी भी राजनीतिक दल की पहचान उसके नेता से होती है। नेतृत्व को देखकर जनता वोट करती है । पांच राज्यों का चुनाव भाजपा ने मोदी जी के नाम पर लड़ा, और मोदी जी ने भी जनता के सामने जनता के विश्वास को बनाए रखने की **''मोदी गारंटी''** पेश की जनता ने मोदी गारंटी को गारंटी पूरा होने की गारंटी माना। जनता ने वोट मोदी गारंटी पर दिया, बढ़-चढ़ कर दिया, समाज के हर वर्ग ने दिया, हर क्षेत्र से या कोने-कोने से भाजपा को वोट मिला, इस बढ़े वोट से मोदी जी की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। जनता के बढ़े हुए उत्साह को आशीर्वाद मानकर और तेजी से कार्य करना पड़ेंगे पर मोदी जी तो पहले ही कह चुके हैं जनता की अपेक्षा ही हमारा संकल्प है, और संकल्प सिद्धि तक चैन से नहीं बैठना है। मां भारती को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदान करना है । मोदी जी ने तो कहा है जिन्हें कोई नहीं पूछता-मोदी उन्हें पूछता भी है और पूजता भी है। पंडित दीनदयाल जी का अंत्योदय का सिद्धांत भी तो यही कहता है। समाज की अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति के विकास से ही देश आगे बढ़ सकता है। तभी तो मोदी जी ने समाज के गरीब, बेसहारा, असहाय लोगों को बैंक से जोड़ा। बैंक में पैसा भी भेजा, देश का कोई भी गरीब भूखा ना सोए इसलिए 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज दिया। बीमारी में उधार या साहूकारों के चंगुल में ना पड़कर घर दुकान बेचने से बचाने के लिए आयुष्मान कार्ड लाए- जिससे 5 लाख रुपए तक का मुफ्त इलाज संभव हो पाया। घर-घर शौचालय बनवाऐ, माता-बहनों के सम्मान की रक्षा की। मुफ्त रसोई गैस कनेक्शन देकर महिलाओं को धुएं से मुक्ति दी, माता बहनों के स्वास्थ्य की रक्षा की। प्रधानमंत्री आवास योजना चला कर 4 करोड़ गरीब परिवारों को पक्का आवास दिया। आवास ही नहीं दिया आवास में पीने का पानी, बिजली कनेक्शन, शौचालय, गैस का कनेक्शन देकर संपूर्ण सुविधाऐं भी दीं। क्या नहीं किया।

गरीब, बेसहारा, महिला, युवा उन्नति पर केंद्रित सरकार चलाई। महिलाओं का नौकरी में, शिक्षा में स्थान सुनिश्चित करने के साथ-साथ नारी शक्ति वंदन अधिनियम के द्वारा लोकसभा, विधानसभा में भी आरक्षण देकर स्थान सुनिश्चित किया । तभी तो मोदी की गारंटी, गारंटी पूरा होने की गारंटी है। 2024 में और बड़े बहुमत से फिर सरकार बनाने की गारंटी है।

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

2024 - जनता हर बैरियर तोड़कर समर्थन करेगी

2014 में जब सरकार बनी थी, और हमारा सेवाकाल शुरू हुआ था, उस वक्त थीम थी-Reshaping India यानि कि आने वाले समय में भारत में बहुत कुछ बदलेगा, Reshape होगा।

2019 में जब सरकार पहले से भी ज्यादा बहुमत के साथ वापस आई, तो उस समय थीम थी- Conversations for a Better Tomorrow. दुनिया को संदेश दिया कि भारत एक बेहतर भविष्य के रास्ते पर आगे बढ़ रहा है। अब 2023 में जब देश में अगले वर्ष होने वाले चुनावों की चर्चा हो रही है, तो थीम है- Beyond Barriers...

- ''2024 के आम चुनाव के नतीजे बाधाओं से परे होंगे''।
- ''स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जो ज्वार उठा, उसने जनता में जोश एवं सामूहिकता की भावना भर दी और कई बाधाओं को तोड़ दिया''।
- ''चंद्रयान 3 की सफलता ने प्रत्येक नागरिक में गर्व और आत्मविश्वास की भावना पैदा की है और उन्हें हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है ''।
- ''आज हर भारतीय आत्मविश्वास से भरा हुआ है ''।
- ''जनधन बैंक खाते गरीबों के बीच मानसिक बाधाओं को तोड़ने और उनके गौरव एवं आत्मसम्मान को फिर से मजबूत करने का माध्यम बने ''।
- ''सरकार ने न सिर्फ लोगों का जीवन बदला है, बल्कि गरीबों को गरीबी से उबरने में भी मदद की है''।
- ''सामान्य नागरिक अब स्वयं को सशक्त एवं प्रोत्साहित महसूस करने लगा है''।
- ''आज के भारत के विकास की गति और पैमाना इसकी सफलता का प्रतीक है''।
- ''जम्मू एवं कश्मीर में अनुच्छेद 370 को निरस्त करने से प्रगति और शांति का मार्ग प्रशस्त हुआ है''।
- ''भारत ने रिकॉर्ड घोटालों से रिकॉर्ड निर्यात तक एक लंबा रास्ता तय किया है''।
- ''स्टार्टअप हो, खेल हो, अंतरिक्ष हो या प्रौद्योगिकी, भारत की विकास यात्रा में मध्यम वर्ग तेज गति से आगे बढ़ रहा है''।
- ''नव-मध्यम वर्ग देश के उपभोग में वृद्धि को गति दे रहा है''।
- ''आज, गरीब से गरीब व्यक्ति से लेकर दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति तक, यह मानने लगे हैं कि यह भारत का वक्त है''।

2014 में जब सरकार बनी थी, और हमारा सेवाकाल शुरू हुआ था, उस वक्त थीम थी- Reshaping India यानि कि आने वाले समय में भारत में बहुत कुछ बदलेगा, Reshape होगा। 2019 में जब सरकार पहले से भी ज्यादा बहुमत के साथ वापस आई, तो उस समय थीम थी- Conversations for a Better Tomorrow. दुनिया को संदेश दिया कि भारत एक बेहतर भविष्य के रास्ते पर आगे बढ़ रहा है। अब 2023 में जब देश में अगले वर्ष होने वाले चुनावों की चर्चा हो रही है, तो थीम है- Beyond Barriers... और मैं जनता के बीच रहने, जीने वाले वाला इंसान हूं,

पॉलिटिकल आदमी हूं तो और जनप्रतिनिधि हूं तो मुझे उसमें कुछ एक संदेश दिखता है। आम तौर पर ओपिनियन पोल, चुनावों के कुछ हफ्तों पहले आते हैं और बताते हैं, क्या होने वाला है। लेकिन साफ संकेत है कि देश की जनता इस बार सारे बैरियर्स तोड़कर हमारा समर्थन करने वाली है। 2024 Election Results will be beyond barriers.

'Reshaping India' से 'Beyond Barriers' तक के भारत के इस सफर ने आने वाले उज्ज्वल भविष्य की नींव गढ़ दी है। इसी नींव पर विकसित भारत का निर्माण होगा, भव्य और समृद्ध भारत का निर्माण होगा। लंबे समय तक, भारत और हम भारतीयों को अनेक Barriers का सामना करना पड़ा है। हम पर हुए हमलों और गुलामी के लंबे कालखंड ने भारत को बहुत सारे बंधनों में बांध दिया था। स्वतंत्रता आंदोलन के समय जो एक ज्वार उठा, जो जज्बा पैदा हुआ, सामूहिकता की जो भावना पैदा हुई, उसने ऐसे कई बंधनों को तोड़ दिया था। आजादी के बाद उम्मीद थी कि यही momentum आगे भी जारी रहेगा, लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा हो नहीं पाया। अनेक तरह के बंधनों में बंधा हुआ हमारा देश, उस रफ्तार से आगे नहीं बढ़ पाया, जितना उसका सामर्थ्य था। एक बहुत बड़ा Barrier मानसिकता का था, Mental Barriers. कुछ Barriers real थे, असल में थे। कुछ Barriers perceived थे, बनाए गए थे, और कुछ Barriers exaggerated, बढ़ा-चढ़ाकर हमारे सामने हौवे की तरह प्रस्तुत कर दिए गए थे। 2014 के बाद से ही भारत, लगातार इन बंधनों को तोड़ने के लिए मेहनत कर रहा है। हमने अनेक बाधाएं पार की हैं और अब हम 'Beyond Barriers' की बात कर रहे हैं।

- **आज भारत हर Barrier तोड़ते हुए चांद पर वहां पहुंचा है, जहां कोई नहीं पहुंचा है।**
- **आज भारत हर चुनौती को पार करते हुए डिजिटल ट्रांजेक्शन में नंबर वन बना है।**
- **आज भारत, हर बाधा से निकलकर, मोबाइल मैन्यूफैक्चरिंग में लीड ले रहा है।**
- **आज भारत, स्टार्ट अप्स की दुनिया में टॉप तीन में है।**
- **आज भारत, दुनिया का सबसे बड़ा Skilled Pool अपने यहां बना रहा है।**
- **आज भारत, जी-20 जैसे आयोजनों में अपना परचम लहरा रहा है।**
- **आज भारत अपने को हर बंधन से मुक्त करके आगे बढ़ रहा है। और**
- **आपने सुना ही होगा- सितारों के आगे जहां और भी है। भारत, इतने पर ही रुकने वाला नहीं है।**

जैसा मैं अभी कह रहा था, सबसे बड़ा बैरियर तो हमारे यहां Mindset का ही था, मेंटल बैरियर्स थे। इसी माइंडसेट की वजह से हमें कैसी-कैसी बातें सुनने को मिलती थीं। इस देश का कुछ हो ही नहीं सकता...इस देश में कुछ बदल ही नहीं सकता...और, अपने यहां सब ऐसे ही चलता है....अगर लेट आए तो भी कहते थे- Indian Time, बड़े गर्व से कहते थे। करप्शन का, अरे उसका तो कुछ हो ही नहीं सकता है साहब, जीना सीख लो...कोई चीज सरकार ने बनाई है तो उसकी क्वालिटी खराब ही होगी ही होगी साहब, ये तो सरकारी है...कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं, जो पूरे देश को मेंटल बैरियर तोड़कर बाहर आने के लिए प्रेरित करती हैं। गांधी जी ने दांडी यात्रा में उठाया तो एक चुटकी भर नमक था, लेकिन पूरा देश खड़ा हो गया, हम आजादी प्राप्त कर सकते हैं लोगों का ये विश्वास बढ़ गया था। अभी चंद्रयान की सफलता से कोई 140 करोड़ देशवासी अचानक वैज्ञानिक नहीं बन गए हैं, Astronaut नहीं बन गए हैं। लेकिन पूरे देश में एक आत्म विश्वास से भरे हुए माहौल को आज भी हम अनुभव कर रहे हैं। और क्या निकलता है- हम कर सकते हैं, हम हर सेक्टर में आगे जा सकते हैं। आज हर भारतीय बुलंद हौसले से भरा हुआ है। स्वच्छता का विषय याद होगा आपको। कुछ लोग कहते थे कि लाल किले से पीएम का स्वच्छता की बात करना, टॉयलेट की बात करना, इस पद की गरिमा के खिलाफ है। सैनिटरी पैड, ऐसा शब्द था जिसे लोग, खासकर पुरुष सामान्य बोलचाल की भाषा में भी बोलने से बचते थे। मैंने लालकिले से ये विषय उठाए। और वहीं से माइंडसेट बदलने की शुरुआत हुई। आज स्वच्छता एक जन-आंदोलन बन गया है। आप याद करिए, खादी को कोई पूछता तक नहीं था। बहुत, यानि हम जैसे नेताओं का विषय रह गया था, वो भी चुनाव में जरा लंबा कुर्ता पहनकर पहुंच जाना यहीं हो गया था। लेकिन अब पिछले 10 साल में खादी की बिक्री तीन गुना से ज्यादा बढ़ गई है।

जनधन बैंक अकाउंट्स की सफलता देशवासी जानते हैं। लेकिन जब हम इस योजना को लेकर आए थे, तो कुछ एक्सपर्ट्स ने कहा था कि ये अकाउंट खोलना संसाधनों की बर्बादी है, गरीब इनमें एक पैसा भी नहीं डालेगा। बात केवल पैसे की नहीं थी। बात थी मेंटल बैरियर तोड़ने की, माइंडसेट बदलने की। ये लोग गरीब के उस अभिमान को, उस स्वाभिमान को, कभी समझ ही नहीं पाए, जो जनधन योजना ने उस गरीब में जगाया। उसे तो बैंकों के दरवाजे तक जाने की हिम्मत नहीं होती थी, वो डरता था। उसके लिए बैंक अकाउंट होना भी अमीरों की चीज थी। जब उसने देखा कि बैंक खुद उसके दरवाजे तक आ रहे हैं, तो उसमें एक विश्वास जगा, एक स्वाभिमान जगा, उसके मन में एक नया बीज पनपा। आज वो बड़े अभिमान से अपनी जेब में से रूपे कार्ड निकालता है, रूपे कार्ड का इस्तेमाल करता है। और हम तो जानते हैं, आज से 5-10 साल पहले स्थिति ये थी कि किसी बड़े होटल में बड़े-बड़े लोग खाना खा रहे हैं तो उनके बीच में भी कंपटीशन रहता था, वो जब बटवा निकालता था तो चाहता था कि वो देखें कि उसके बटवे में 15-20 कार्ड हैं, कार्ड दिखाना भी फैशन था, कार्ड की संख्या status विषय था। मोदी ने उसको गरीब की जेब में डालकर के रख दिया। मेंटल बैरियर कैसे तोड़े जाते हैं।

आज गरीब को लगता है कि जो अमीर के पास है, वो मेरे पास भी है। इस बीज ने वटवृक्ष बनकर कितने ही फल दिए हैं। AC कमरों की नंबर और नैरेटिव वाली दुनिया में रहने वाले लोग, गरीब के इस मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण को कभी नहीं समझ पाएंगे। लेकिन मैं एक गरीब परिवार से आया हूं, गरीबी को जीकर यहां आया हूं, इसलिए जानता हूं कि सरकार के इन प्रयासों ने कितने सारे बैरियर्स को तोड़ने का काम किया है। माइंडसेट में ये परिवर्तन देश के भीतर ही नहीं, बाहर भी आया है। पहले आतंकी हमला होता था, तो हमारी सरकारें दुनिया से अपील करती थीं कि हमारी मदद करिए, वैश्विक मत बढ़ाने के लिए जाना पड़ता था। आतंकियों को रोकिए। हमारी सरकार में आतंकी हमला हुआ, तो हमले का जिम्मेदार देश दुनिया भर से खुद को बचाने के लिए गुहार लगाता है। भारत के एक्शन ने दुनिया का माइंडसेट बदला। 10 साल पहले दुनिया सोचती थी कि भारत Climate Action के संकल्पों में बाधा है, एक रूकावट है, negative है। लेकिन आज भारत दुनिया के Climate Action के संकल्पों को Lead कर रहा है, अपने Targets को समय से पहले हासिल करके दिखा रहा है। आज माइंडसेट बदलने का प्रभाव हम स्पोर्ट्स की दुनिया में भी देख रहे हैं। लोग खिलाड़ियों को कहते थे, खेल

तो रहे हो लेकिन करियर में क्या करोगे, नौकरी का क्या करोगे? सरकारों ने भी खिलाड़ियों को भगवान भरोसे छोड़ दिया था। ना उनकी ज्यादा आर्थिक मदद होती थी और ना ही स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर पर ध्यान दिया जाता था। हमारी सरकार ने इस बैरियर को भी हटाया। अब आज एक के बाद एक टूर्नामेंट में, हमारे यहां मेडल्स की बारिश हो रही है।

भारत में सामर्थ्य की कमी नहीं है, संसाधनों की कमी नहीं है। हमारे सामने एक बहुत बड़ा और Real Barrier रहा है- गरीबी का। गरीबी को Slogans से नहीं Solutions से ही लड़ा जा सकता है। गरीबी को नारे से नहीं, नीति और नीयत से ही हराया जा सकता है। हमारे यहां पहले की सरकारों की जो सोच रही उसने देश के गरीब को सामाजिक और आर्थिक रूप से आगे नहीं बढ़ने दिया। मैं मानता हूं, गरीब में खुद इतना सामर्थ्य होता है कि वो गरीबी से लड़ सके और उस लड़ाई में जीत सके। हमें उसे सपोर्ट करना होता है, उसे मूलभूत सुविधाएं देनी होती हैं, उसे Empower करना होता है। इसीलिए हमारी सरकार ने इन बाधाओं को तोड़ने के लिए, गरीब को Empower करके, उस काम को हमने सर्वोच्च प्राथमिकता के रूप में लिया। हमने ना सिर्फ लोगों का जीवन बदला, बल्कि गरीबों को गरीबी से उबरने में मदद भी की। इसके परिणाम आज देश स्पष्ट देख रहा है। सिर्फ 5 वर्षों में 13 करोड़ से ज्यादा लोग गरीबी से बाहर आए हैं। यानि हम कह सकते हैं कि 13 करोड़ लोगों ने अपनी गरीबी के Barrier को तोड़ा और देश के Neo Middle Class में शामिल हुए हैं।

भारत के विकास के सामने एक बहुत बड़ा Real Barrier रहा है, परिवारवाद और भाई-भतीजावाद का। वही आदमी आसानी से आगे बढ़ पाता था जो किसी खास परिवार से जुड़ा हो या फिर किसी शक्तिशाली आदमी को जानता हो। देश के सामान्य नागरिक की कहीं कोई पूछ नहीं थी। चाहे खेल हो, विज्ञान हो, राजनीति हो या पद्म सम्मान हों, देश के सामान्य मानवी को लगता था कि अगर वो किसी बड़े परिवार से नहीं जुड़ा है तो उसके लिए सफल होने की संभावना बहुत कम है। लेकिन आपने बीते कुछ सालों में देखा है कि इन सभी क्षेत्रों में देश का सामान्य नागरिक, अब Empowered और Encouraged feel करने लगा है। अब उसे इसकी चिंता नहीं होती कि उसे किसी ताकतवर आदमी के यहां चक्कर लगाने होंगे, उसकी सहायता लेनी होगी। Yesterday's Unsung Heroes are Country's Heroes today!

भारत में वर्षों तक आधुनिक Infrastructure की कमी हमारे विकास के रास्ते में एक बड़े और Real Barrier के समान रही है। हमने इसका समाधान निकाला है, भारत में दुनिया की सबसे बड़ी Infrastructure Building Drive शुरू हुई। आज देश में अभूतपूर्व Infrastructure Development हो रहा है। मैं आपको कुछ उदाहरण दूंगा, जिससे आपको भारत की स्पीड और स्केल का अंदाजा लगेगा।

- साल 2013-14 में हर दिन 12 किलोमीटर हाइवे बनते थे। मेरा सेवाकाल शुरू होने से पहले की बात कर रहा हूं। 2022-23 में हमने लगभग प्रतिदिन 30 किलोमीटर हाइवे हर दिन बनाए हैं।
- 2014 में देश के 5 शहरों में मेट्रो रेल की कनेक्टिविटी थी। 2023 में देश के 20 शहरों में मेट्रो रेल कनेक्टिविटी है।
- 2014 में देश में करीब 70 ऑपरेशनल एयरपोर्ट्स थे। 2023 में यह संख्या लगभग 150 तक पहुंच गई है, यानि ये आंकड़ा डबल हो गया है।
- 2014 में देश में करीब 380 मेडिकल कॉलेज थे। 2023 में हमारे पास 700 से अधिक मेडिकल कॉलेज हैं।
- 2014 में ग्राम पंचायतों तक सिर्फ 350 किलोमीटर ऑप्टिक फाइबर पहुंचा था। 2023 तक हमने करीब 6 लाख किलोमीटर ऑप्टिक फाइबर बिछाकर ग्राम पंचायतों को जोड़ा है।
- 2014 में 55 प्रतिशत गांव ही पीएम ग्राम सड़क योजना से जुड़े थे। हमने 4 लाख किलोमीटर से ज्यादा सड़कें बनाकर ये आंकड़ा 99 percent तक पहुंचा दिया है।
- 2014 तक भारत में करीब 20 हजार किलोमीटर रेल लाइनों का इलेक्ट्रिफिकेशन होता था। 70 साल में 20 thousand किलोमीटर रेल लाइनों का इलेक्ट्रिफिकेशन। जबकि हमारी सरकार ने 10 साल में करीब 40 हजार किलोमीटर रेल लाइनों का इलेक्ट्रिफिकेशन किया है।

ये आज के भारत की स्पीड है, स्केल है और भारत की सक्सेस का प्रतीक है।

बीते वर्षों में हमारा देश कुछ perceived Barriers से भी बाहर निकला है। एक समस्या हमारे यहां Policymakers, हमारे Political Experts के दिमाग में भी थी। वो ये मानते थे कि Good Economics, Good Politics हो ही नहीं सकती। अनेक सरकारों ने भी इसे ही मान लिया और इसके कारण देश को राजनीतिक और आर्थिक दोनों ही मोर्चे पर मुश्किलें बनने लगी। लेकिन हमने Good Economics और Good Politics को एक साथ लाकर के दिखाया है। आज सब ये स्वीकार कर रहे हैं कि Good Economics, Good Politics भी है। हमारी बेहतर आर्थिक नीतियों ने देश में तरक्की के नए रास्ते खोले हैं। इससे समाज के हर वर्ग का जीवन बदला और इन्हीं लोगों ने हमें इतना बड़ा बहुमत देने के लिए स्थिर सरकार के लिए वोट दिया है। चाहे जीएसटी हो, चाहे बैंकिंग क्राइसिस का समाधान हो, चाहे कोविड संकट से निकलने के लिए बनाई गईं नीतियां हों...हमने हमेशा उन नीतियों को चुना जो देश को Long Term Solution दें, और सिटिजन्स को Long Term फायदे की गारंटी दें।

Perceived Barriers का एक और उदाहरण है, महिला आरक्षण बिल। दशकों तक लटकने के बाद ऐसा लगने लगा था कि ये बिल कभी पास नहीं होगा। लेकिन अब ये बाधा भी हमने पार कर ली है। नारी शक्ति वंदन अधिनियम आज एक सच्चाई है।

आपसे बात करने, शुरुआत में मैंने एक और विषय कहा था exaggerated Barriers की भी बात की थी। हमारे देश में कुछ बाधाएं, कुछ समस्याएं ऐसी भी रही जिन्हें पहले की सरकारों द्वारा और पंडितों के द्वारा, विवाद करने वाले लोगों के द्वारा अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए ऐसा बड़ा हौवा खड़ा कर दिया था, ऐसा बड़ा बना दिया था, उदाहरण के लिए, जब भी कोई आर्टिकल 370 को जम्मू-कश्मीर से हटाने की बात करता था तो अनेकों बातें मैदान में आ जाती। एक तरह से मनोवैज्ञानिक दबाव बना दिया था कि अगर ऐसा हुआ तो आसमान जमीन पर आ जाएगा। लेकिन 370 की समाप्ति ने उस पूरे इलाके में समृद्धि और शांति और विकास के नए रास्ते खोल दिए हैं। लाल चौक की तस्वीरें बताती हैं कि कैसे जम्मू-कश्मीर का कायाकल्प हो रहा है। आज वहां Terrorism का अंत हो रहा है, Tourism लगातार बढ़ रहा है। जम्मू-कश्मीर, विकास की नई ऊंचाइयों पर पहुंचे, इसके लिए भी हमारा कमिटमेंट है।

हम तक ब्रेकिंग न्यूज पहुंचाने वाले मीडिया की प्रासंगिकता बहुत अधिक रही है। समय-समय पर ब्रेकिंग न्यूज देने की परंपरा तो ठीक है, लेकिन ये Analysis भी जरूरी है कि पहले किस तरह की ब्रेकिंग न्यूज होती थी और अब क्या होती है। 2013 से 2023 के बीच भले ही एक दशक का समय बीता हो, लेकिन इस दौरान

आए बदलावों में जमीन और आसमान का अंतर है। जिन लोगों ने 2013 में Economy को कवर किया है, उन्हें याद होगा कि कैसे Rating Agencies, भारत की GDP ग्रोथ फोरकास्ट का Downward Revision करती थीं। लेकिन 2023 में बिल्कुल विपरीत हो रहा है। अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं और Rating Agencies अब हमारी ग्रोथ फोरकास्ट का Upward Revision कर रही हैं। 2013 में बैंकिंग सेक्टर की खस्ता हालत की News आती थी। लेकिन अब 2023 में हमारे बैंक अपने Best Ever Profits और Performance को दिखा रहे हैं। 2013 में देश में अगस्ता वेस्टलैंड हेलिकॉप्टर घोटाले की खबर छाई रहती थी। लेकिन 2023 में अखबार और न्यूज चैनल्स में चलता है कि भारत का Defence Export अब Record High पर पहुंच गया है। 2013-14 की तुलना में इसमें 20 गुना से ज्यादा की बढ़ोत्तरी हुई है। Record Scams से Record Exports तक, हमने एक लंबा रास्ता तय किया है।

2013 में आपको ऐसे कई National और International Publications मिल जाएंगे, जो ये Headline देते थे कि कठिन आर्थिक स्थितियों के कारण मिडिल क्लास के सपने तबाह हो गए हैं। 2023 में बदलाव कौन कर रहा है? चाहे स्पोर्ट्स हो, स्टार्टअप हो, स्पेस हो या टेक्नॉलाजी हो, देश का मिडिल क्लास हर विकास यात्रा में सबसे आगे खड़ा नजर आता है। बीते कुछ वर्षों में भारत के Middle Class ने तेजी से प्रगति की है। उनकी Income बढ़ी है, उनका आकार बढ़ा है। 2013-14 में करीब 4 करोड़ लोग इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करते थे। 2023-24 में यह संख्या डबल हो गई है और साढ़े 7 करोड़ से अधिक लोगों ने इनकम टैक्स रिटर्न फाइल किए हैं। Tax Information से जुड़ी एक स्टडी बताती है कि 2014 में जो Mean Income साढ़े चार लाख रुपए से भी कम थी, वो 2023 में 13 लाख रुपए तक बढ़ गई है। इसका मतलब है कि भारत में लाखों लोग Lower Income Groups से Higher Income Groups की ओर बढ़े हैं।

पिछले दिनों एक लेख छपा था जिसमें इनकम टैक्स डेटा से जुड़े अनेक Interesting Facts बताए गए थे। एक बड़ा ही दिलचस्प आंकड़ा सालाना साढ़े 5 लाख रुपए से लेकर 25 लाख रुपये की तनख्वाह पाने वालों का है। साल 2011-12 में इस सैलरी ब्रेकेट में कमाने वालों की टोटल इनकम को जोड़ दें तो ये आंकड़ा था- करीब पौने तीन लाख करोड़ रुपए। यानि तब भारत में साढ़े पांच लाख से पच्चीस लाख सैलरी पाने वालों की कुल सैलरी जोड़ दें तो वो पौने तीन लाख करोड़ रुपए से भी कम थी। 2021 तक ये बढ़कर साढ़े 14 लाख करोड़ हो गई है। मतलब इसमें 5 गुना बढ़ोत्तरी हुई है। इसकी दो वजहें स्पष्ट हैं। साढ़े पांच लाख से 25 लाख रुपए तक सैलरी पाने वालों की संख्या भी बहुत बढ़ी है और इस ब्रेकेट में लोगों की सैलरी में भी काफी वृद्धि हुई है। और ये Analysis सिर्फ Salaried Incomeपर आधारित है। अगर इसमें Business से हुई इनकम, House Property से हुई कमाई, दूसरी Investments से हुई कमाई और इसको जोड़ दिया जाए तो ये आंकड़ा इससे भी ज्यादा बढ़ जाएगा।

भारत में बढ़ता हुआ मिडिल क्लास और कम होती हुई गरीबी, ये दो फैक्टर्स एक बहुत बड़ी इकॉनॉमिक सायकिल का आधार बन रहे हैं। जो लोग गरीबी से बाहर निकल रहे हैं, जो Neo Middle Class का हिस्सा बन रहे हैं, वो लोग अब देश की Consumption Growth को गति देने वाली बहुत बड़ी force के रूप में उभर रहे हैं।

इस डिमांड को पूरा करने की जिम्मेदारी हमारा मिडिल क्लास ही उठा रहा है। अगर एक गरीब को नए जूते खरीदने का मन करता है तो मिडिल क्लास की दुकान से खरीदता है मतलब कि इनकम मिडिल क्लास की बढ़ती है, जीवन गरीब का बदलता है। ये एक बढ़िया cycle के समय में से भारत आज गुजर रहा है। यानि देश में कम हो रही गरीबी, मिडिल क्लास को भी फायदा पहुंचा रही है। गरीब और मिडिल क्लास के ऐसे ही लोगों की आकांक्षा और इच्छा शक्ति, आज देश के विकास को शक्ति दे रही है। इन लोगों की शक्ति ने ही भारत को 10वीं अर्थव्यवस्था से 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना दिया है। और अब यही इच्छा शक्ति हमारे थर्ड टर्म में भारत को दुनिया की टॉप 3 अर्थव्यवस्था में शामिल कराने जा रही है।

इस अमृत काल में देश 2047 तक विकसित भारत बनने के लिए काम कर रहा है। हर बाधा पार करते हुए हम अपने लक्ष्य तक पहुंचने में सफल होंगे।

आज गरीब से गरीब व्यक्ति से लेकर दुनिया के सबसे अमीर इनवेस्टर्स तक ये मानने लगे हैं कि ये भारत का वक्त है- This is Bharat's Time. हर भारतीय का आत्मविश्वास ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। इसके बल पर हम किसी भी बैरियर, के पार जा सकते हैं। और 2047 में थीम होगी- Developed Nation, What Next? ▪

पिछले 9 वर्ष में एमबीबीएस सीटों में 79 प्रतिशत और एमडी में 93 प्रतिशत की वृद्धि हुई

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार ने चिकित्सा शिक्षा को किफायती और सुलभ बनाने के लिए अनेक उपाय किए हैं, ताकि कोई योग्य उम्मीदवार स्वयं को नुकसान में महसूस न करे। केवल 9 वर्ष में एमबीबीएस सीटों की संख्या 79 प्रतिशत बढ़कर 51,348 से 91,927 हो गई, जबकि एमडी सीटों की संख्या 93 प्रतिशत बढ़कर 31,185 से 60,202 पर पहुंच गई।

एक लंबी छलांग लगाते हुए, 2014 में 145 सरकारी मेडिकल कॉलेजों से, भारत में अब 260 ऐसे सरकारी मेडिकल कॉलेज हैं, जबकि 9 वर्ष में देश में एम्स की संख्या 23 हो गई है। भारत सुरक्षात्मक स्वास्थ्य देखभाल में विश्व में अग्रणी बनकर उभरा है।

आयुर्वेद का समर्थन करना वोकल फॉर लोकल होने का एक जीवंत उदाहरण है।

आयुर्वेद का समर्थन करना वोकल फॉर लोकल होने का एक जीवंत उदाहरण है। अन्वेषक और चिकित्सक इस प्राचीन ज्ञान को आधुनिकता के साथ जोड़ रहे हैं और आयुर्वेद को वैश्विक स्तर पर नई ऊंचाइयों पर ले जा रहे हैं।

अभूतपूर्व अनुसंधान से लेकर गतिशील स्टार्टअप तक, आयुर्वेद कल्याण के नए मार्ग पर आगे बढ़ रहा है।

विजय ऐतिहासिक है, अभूतपूर्व है विकसित भारत की नींव मजबूत

चुनावों में नारी शक्ति ये ठानकर निकली कि भाजपा का परचम लहराएगी। और जब देश की नारी शक्ति किसी का सुरक्षा कवच बन जाए, तो कैसी भी ताकत उसे नुकसान नहीं पहुंचा सकती। नारी शक्ति वंदन अधिनियम ने, देश की माताओं-बहनों-बेटियों के मन में नया विश्वास जगाया है।

देश की हर महिला में ये भरोसा जगा है कि भाजपा सरकार में उनकी सक्रिय भागीदारी को नई बुलंदी मिलने वाली है। हर बहन-बेटी को साफ-साफ लगता है कि बीजेपी ही नारी गरिमा, नारी सम्मान, नारी सुरक्षा की सबसे बड़ी गारंटी है।

- जीत ऐतिहासिक और अभूतपूर्व है, सबका साथ-सबका विकास की भावना जीती है।
- ''इस हैट्रिक ने 24 की हैट-ट्रिक की गारंटी दे दी है''।
- इस चुनाव में देश को जातियों के आधार पर बांटने की कोशिश की गई। मैं लगातार कह रहा था कि मेरे लिए देश में चार जातियां ही सबसे बड़ी हैं-नारी शक्ति, युवा शक्ति, किसान और गरीब परिवार।
- महिलाओं को आश्वस्त करना चाहता हूं कि उनसे किए गए सभी वादे शत-प्रतिशत पूरे होंगे, ये मोदी की गारंटी है।

विजय ऐतिहासिक है, अभूतपूर्व है। सबका साथ-सबका विकास की भावना जीती है। विकसित भारत के आव्हान की जीत हुई है। आत्मनिर्भर भारत के संकल्प की जीत हुई है। वंचितों को वरीयता के विचार की जीत हुई है। भारत के विकास के लिए, राज्यों का विकास, इस सोच की जीत हुई है। ईमानदारी, पारदर्शिता और सुशासन की जीत हुई है।

मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ के लोगों ने भाजपा पर भरपूर स्नेह दिखाया है। तेलंगाना में भी बीजेपी के प्रति समर्थन लगातार बढ़ रहा है। जब अपने परिवारजनों से इतना प्यार मिलता है, विश्वास मिलता है तब जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। मन में यही भाव है। माताओं-बहनों-बेटियों, युवा साथियों, किसान भाई-बहनों, गरीब परिवारों ने जो निर्णय किया है, जो बढ़-चढ़कर समर्थन दिया है इसके लिए नतमस्तक हूं।

इस चुनाव में देश को जातियों में बांटने की बहुत कोशिशें हुई। लेकिन मेरे लिए देश में चार जातियां ही सबसे बड़ी जातियां हैं। और मैं जब चार जातियों की बात करता हूं...हमारी

- **नारी शक्ति,**
- **युवा शक्ति,**
- **किसान और**
- **गरीब परिवार,**

इन चार जातियों को सशक्त करने से ही देश सशक्त होने वाला है। बड़ी संख्या में ओबीसी साथी, आदिवासी साथी, इसी वर्ग में आते हैं। और इन चुनावों में, इन चारों जातियों ने भाजपा की योजनाओं और भाजपा के रोडमैप को लेकर बहुत उत्साह दिखाया है।

- आज हर गरीब कह रहा है- वो खुद जीता है।
- आज हर वंचित के मन में भावना है- कि ये चुनाव वो खुद जीता है।
- आज हर किसान यही कहता है ये चुनाव हर किसान जीता है।
- आज हर आदिवासी भाई-बहन ये सोचकर खुश है कि उसने जिसे वोट दिया वो विजय उसकी अपनी है।
- आज फर्स्ट टाइम वोटर बड़े गर्व के साथ कह रहा है मेरा पहला वोट मेरे विजय का कारण बना है।
- आज इसी जीत में हर महिला अपनी जीत देख रही है।
- आज इसी जीत में बेहतर भविष्य का सपना देखने वाला हर युवा अपनी जीत देख रहा है।
- आज हर वो नागरिक इसे अपनी सफलता समझ रहा है, जो 2047 में भारत को एक विकसित राष्ट्र देखना चाहता है।

इन चुनावों में नारी शक्ति ये ठानकर निकली कि भाजपा का परचम लहराएगी। और जब देश की नारी शक्ति किसी का सुरक्षा कवच बन जाए,

तो कैसी भी ताकत उसे नुकसान नहीं पहुंचा सकती। नारी शक्ति वंदन अधिनियम ने, देश की माताओं-बहनों-बेटियों के मन में नया विश्वास जगाया है। देश की हर महिला में ये भरोसा जगा है कि भाजपा सरकार में उनकी सक्रिय भागीदारी को नई बुलंदी मिलने वाली है। हर बहन-बेटी को साफ-साफ लगता है कि बीजेपी ही नारी गरिमा, नारी सम्मान, नारी सुरक्षा की सबसे बड़ी गारंटी है। उन्होंने देखा है कि बीते 10 वर्षों में भाजपा ने उन तक टॉयलेट, बिजली, गैस, नल से जल, बैंक में खाते, ऐसी बुनियादी सुविधाएं पहुंचाने के लिए कितनी ईमानदारी से काम किया है। वो देख रही हैं कि कैसे बीजेपी, घर-परिवार में, समाज में उनकी आर्थिक भागीदारी बढ़ाने के लिए, उन्हें रोजगार-स्वरोजगार के नए अवसर देने के लिए निरंतर काम कर रही है। नारी शक्ति का विकास, बीजेपी के विकास मॉडल का महत्वपूर्ण स्तंभ भी है। और इसलिए इन चुनावों में महिलाओं ने, बहनों-बेटियों ने एक प्रकार से भाजपा की विजय की पूरी जिम्मेवारी अपने हाथ में उठा ली थी और भरपूर आशीर्वाद दिया है। पूरी विनम्रता से देश की हर बहन-बेटी को यही कहूंगा कि आपसे जो वायदे बीजेपी ने किए हैं, वो शत-प्रतिशत पूरे किए जाएंगे और ये मोदी की गारंटी है। और मोदी की गारंटी यानि...गारंटी पूरा होने की गारंटी।

चुनाव नतीजों ने एक और बात स्पष्ट की है। देश का युवा सिर्फ और सिर्फ विकास चाहता है। जहां भी सरकारों ने युवाओं के खिलाफ काम किया है, वो सरकारें सत्ता से बाहर हुई हैं। चाहे राजस्थान हो, छत्तीसगढ़ हो, या तेलंगाना हो.... ये सारी सरकारें पेपर लीक और भर्ती घोटालों के आरोपों में घिरी हुई थीं। परिणाम ये हुआ, कि इन तीनों ही राज्यों में सत्ता में बैठे दल अब सरकार से बाहर हैं। आज देश के युवा में ये भरोसा लगातार बढ़ रहा है कि बीजेपी ही उसकी आकांक्षाएं समझती है, उसके लिए काम करती है। देश का युवा ये जानता है कि बीजेपी की सरकार युवा हितैषी होती हैं, युवाओं के लिए नए अवसर बनाने वाली होती है।

देश का आदिवासी समाज भी अब खुलकर अपनी बात रख रहा है। ये वो आदिवासी समाज है, जो कांग्रेस की नीतियों की वजह से सात दशक तक पीछे रहा, जिसे अवसर नहीं दिए गए। इनकी जनसंख्या 10 करोड़ के आसपास है। गुजरात के चुनाव परिणामों में भी ये देखा है। जिस कांग्रेस ने आदिवासी समाज को कभी पूछा तक नहीं, उस आदिवासी समाज ने कांग्रेस का सफाया कर दिया। यही भावना एमपी, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में भी देखी है। इन राज्यों की आदिवासी अंचल की सीटों पर कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया है। आदिवासी समाज आज विकास के लिए आकांक्षी है। और उन्हें भरोसा है कि इस आकांक्षा को सिर्फ और सिर्फ भाजपा सरकार ही पूरा कर सकती है।

भाजपा कार्यकर्ताओं की भाजपा और कमल के प्रति निष्ठा, समर्पण, अतुलनीय है। डबल इंजन सरकार का मैसेज कार्यकर्ताओं ने पूरी ईमानदारी से जन-जन तक पहुंचाया। इसी का परिणाम मिला। राष्ट्रीय अध्यक्ष, नड्डा जी जिस प्रकार अपनी नीति-रणनीति को अमल में लाए, ये विजय उसका भी परिणाम है।

मेरा राजस्थान के लोगों पर भरोसा था, वहां की जनता पर भरोसा था और हम नतीजे देख रहे हैं। मध्य प्रदेश ने भी हमें फिर दिखाया है कि भाजपा के सेवाभाव का कोई विकल्प नहीं है। दो दशक से वहां भाजपा की सरकार है और इतने वर्षों के बाद भी भाजपा पर भरोसा लगातार मजबूत ही हो रहा है।

छत्तीसगढ़ के चुनाव की पहली सभा में मैंने खुद कहा था कि मैं आपसे कुछ मांगने नहीं आया हूं, मैं तो आपको 3 दिसंबर के बाद सरकार बनेगी तो शपथ समारोह में निमंत्रण देने के लिए आया हूं। छत्तीसगढ़ के परिणाम से साफ है कि हर परिजन ने उस बात को स्वीकार किया है। मैं तेलंगाना की जनता और तेलंगाना के भाजपा कार्यकर्ताओं का विशेष आभार व्यक्त करता हूं। हर चुनाव में तेलंगाना में भाजपा का ग्राफ लगातार बढ़ रहा है।

इन चुनाव परिणामों की गूंज सिर्फ एमपी, राजस्थान और छत्तीसगढ़ तक सीमित नहीं रहेगी। इन परिणामों की गूंज दूर तक जाएगी। पूरी दुनिया में इन चुनाव परिणामों की गूंज सुनाई देगी। ये चुनाव परिणाम, भारत के विकास पर भरोसा दुनिया के भरोसे को और मजबूती देगा। ये चुनाव परिणाम, दुनिया भर के निवेशकों को भी नया विश्वास देगा। भरोसा ये कि आजादी के अमृतकाल में विकसित भारत का जो संकल्प हमने लिया है, उसे जनता जनार्दन का लगातार आशीर्वाद मिल रहा है। आज दुनिया देख रही है कि भारत का लोकतंत्र और भारत का वोटर, दोनों कितने परिपक्व हैं, कितने मैच्योर हैं। आज दुनिया देख रही है कि भारत की जनता, पूर्ण बहुमत के लिए, स्थिर सरकार के लिए सोच-समझकर वोट कर रही है।

भाजपा ने सेवा और सुशासन की राजनीति का नया मॉडल देश के सामने प्रस्तुत किया है। हमारी नीति और निर्णयों के मूल में सिर्फ और सिर्फ देश है, देशवासी है, भारत माता की जय यही हमारा मंत्र है। इसलिए भाजपा सरकारें सिर्फ नीतियां नहीं बनातीं, बल्कि हर हकदार, हर लाभार्थी तक वो पहुंचे, ये भी सुनिश्चित करती है। भाजपा, परफॉर्मेंस और डिलिवरी की राजनीति देश के सामने हकीकत बनकर के लेकर आई है। भारत का मतदाता जानता है कि स्वार्थ क्या है, जनहित और राष्ट्रहित क्या है। दूध का और पानी का भेद देश जानता है। जैसे-तैसे जीतने के लिए हवा-हवाई बातें करना और लोभ-लालच की घोषणाएं करना, ये मतदाता पसंद नहीं करता। मतदाता को उसका जीवन बेहतर करने के लिए एक स्पष्ट रोडमैप चाहिए, एक विश्वसनीयता चाहिए, एक भरोसा चाहिए। भारत का वोटर ये जानता है कि जब भारत आगे बढ़ता है, तो राज्य आगे बढ़ता है, हर परिवार का जीवन बेहतर होता है। इसलिए वो बीजेपी को चुन रहा है, लगातार चुन रहा है। और कुछ लोग तो कह रहे हैं कि आज की इस हैट्रिक ने 24 की हैट-ट्रिक की गारंटी दे दी है।

जनादेश ने ये भी साबित किया है कि भ्रष्टाचार, तुष्टिकरण और परिवारवाद को लेकर देश के भीतर, देश के हर नागरिक के दिल में जीरो टॉलरेंस बन रही है। देश को लगता है कि इन तीनों बुराइयों को खत्म करने में अगर कोई प्रभावी है, तो वो भाजपा ही है। भाजपा की केंद्र सरकार ने देश में भ्रष्टाचार के विरुद्ध जो अभियान छेड़ रखा है, उसको भारी जनसमर्थन मिल रहा है। ये उन दलों, उन नेताओं को वोटर की साफ-साफ चेतावनी है, जो भ्रष्टाचारियों के साथ खड़े होने में जरा भी शर्म अनुभव नहीं करते उन लोगों को देश की जनता ने साफ-साफ संदेश दे दिया है। और ऐसे लोग, जो भांति-भांति के तर्कों से भ्रष्टाचारियों को कवच देते हैं, कवर-अप करने की कोशश करते हैं.... ऐसे लोग, जो भ्रष्टाचार पर कड़ा प्रहार करने वाली जांच एजेंसियों को बदनाम करने में दिन-रात जुटे हुए हैं...वे समझ लें ये चुनाव नतीजे भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई का भी जनसमर्थन है। ये चुनाव नतीजे, कांग्रेस और उसके घमंडिया गठबंधन के लिए भी बहुत बड़ा सबक है। सबक ये है कि सिर्फ कुछ परिवारवादियों के मंच पर एक साथ आ जाने से, फोटो कितनी भी अच्छी क्यों न निकल जाए देश का भरोसा नहीं जीता जाता। देश की जनता का दिल जीतने के लिए राष्ट्रसेवा का जज्बा होना चाहिए, वो घमंडिया गठबंधन में रत्ती भर भी नजर नहीं आता है। गाली-गलौज, निराशा, निगेटिविटी, ये घमंडिया गठबंधन को मीडिया की हेडलाइन्स जरूर दे सकती हैं, लेकिन जनता के दिल में

स्थान नहीं दिला सकती।

नतीजे उन ताकतों को भी चेतावनी है, जो प्रगति और जन कल्याण की राजनीति के खिलाफ खड़े रहते हैं। जब भी विकास होता है, कांग्रेस और उसके साथी विरोध करते हैं। जब हम वंदे भारत ट्रेन लॉन्च करते हैं, तो कांग्रेस और उसके साथी उसका मजाक उड़ाते हैं। जब हम आयुष्मान भारत लॉन्च करते हैं, तो कांग्रेस और उसके साथी इसमें रोड़ा अटकाते हैं। जब हम गरीबों के लिए घर बनाते हैं, तब कांग्रेस और उसके साथी रुकावटें डालते हैं। जब हम गरीबों तक नल से जल पहुंचाते हैं, तो कांग्रेस और उसके साथी इसमें भ्रष्टाचार का रास्ता बनाने में लग जाते हैं। जब हम ग्रामीण विकास के लिए फंड भेजते हैं, तो कांग्रेस और उसके साथी इसे गरीबों तक पहुंचने में रुकावटें डालते हैं। ऐसी सभी पार्टियों को आज गरीबों ने चेतावनी दी है - सुधर जाइए, वरना जनता आपको चुन-चुनकर के साफ कर देगी। आज ऐसी पार्टियों के लिए सबक है कि केंद्र सरकार की गरीब कल्याण की योजनाओं और उनके लिए भेजे जा रहे फंड के बीच में आने की कोशिश मत करो, ये जनता का आदेश है वरना जो बीच में आएगा उसे जनता हटा देगी। लोकतंत्र के हित में, मेरी कांग्रेस और उसके साथियों को नम्रतापूर्वक सलाह है। कृपा करके ऐसी राजनीति ना करें जो देश विरोधी ताकतों को बल दे, जो देश को बांटना चाहते हैं ऐसे लोगों को मजबूती न दे, जो देश को कमजोर करने वाले विचारों को गति दे।

भारत की अर्थव्यवस्था का हर पहिया पूरी गति से घूम रहा है। कुछ लोग कह रहे थे कि विश्व में मंदी का असर भारत पर पड़ेगा। लेकिन भारत ने हर आकलन से कहीं बेहतर प्रदर्शन किया है। आज भारत दुनिया की सबसे तेजी से विकसित होती आर्थिक ताकत है। आज भारत का आत्मविश्वास, भारत के लोगों का आत्म-विश्वास, अभूतपूर्व स्तर पर है। आज भारत में, आज देश में रिकॉर्ड GST कलेक्शन हो रहा है। कृषि उत्पादन में नए रिकॉर्ड बन रहे हैं। भारत के शेयर मार्केट पर भरोसा चरम पर है। आज भारत के निर्यात के नए रिकॉर्ड बन रहे हैं। UPI ट्रांजेक्शन के नए रिकॉर्ड बन रहे हैं। त्योहारों में खरीद के नए रिकॉर्ड बन रहे हैं। गाड़ियों की सेल के नए रिकॉर्ड बन रहे हैं। आज भारत में सीमेंट प्रोडक्शन बढ़ा है, कोयला प्रोडक्शन बढ़ा है। आज भारत में स्टील उत्पादन बढ़ा है, बिजली उत्पादन बढ़ा है। दुनिया भर की कंपनियां भारत में मैन्युफेक्चरिंग करने के लिए आतुर हैं। हवाई यात्रा करने वालों की संख्या उच्चतम स्तर पर है होम लोन के सेक्टर में भी बहुत अधिक वृद्धि दिख रही है।

भारत का फिजिकल इंफ्रास्ट्रक्चर पूरी तरह से ट्रांसफॉर्म हो रहा है। चारों तरफ एक्सप्रेस वे का, इंडस्ट्रियल कॉरिडोर्स का जाल बिछ रहा है। भारतीय रेल आज अपने ट्रांसफॉर्मेशन के सबसे बड़े दौर से गुजर रही है। आज देश में नए रेलवे स्टेशन बन रहे हैं, आधुनिक ट्रेनें आ रही हैं। गति नई है। संकल्प नए हैं। और मैं देशवासियों को कहना चाहता हूं, हर देशवासी को कहना चाहता हूं, और मैं मेरे ट्रैक रिकॉर्ड के आधार पर कहना चाहता हूं, बड़ी ईमानदारी के साथ कहना चाहता हूं.. बड़ी जिम्मेदारी से कहना चाहता हूं... आपके सपने... **आपके सपने मेरे देशवासियों, आपके सपने मेरा संकल्प है।** आपके सपनों को पूरा करने का मेरा जो संकल्प है वो मेरी साधना भी है और मेरी तपस्या भी है।

भारत का डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर दुनिया में श्रेष्ठता की तरफ बढ़ रहा है। भारत आज दुनिया में 5G नेटवर्क के मामले में अग्रणी देशों में पहुंच चुका है। आज भारत में गांव-गांव तक ऑप्टिकल फाइबर पहुंच रहा है। आज देश के सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर पर भी अभूतपूर्व गति से काम हो रहा है। हर गरीब को मुफ्त राशन वाली योजना अगले 5 साल के लिए बढ़ा दी गई है। भाजपा सरकार में 4 करोड़ गरीब परिवारों के पक्के घर बन चुके हैं। हम हर गरीब परिवार को पक्की छत देने के संकल्प की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। घर-घर नल से जल देने का अभियान तेज गति से चल रहा है। देश में रिकॉर्ड गति से नए अस्पताल बन रहे हैं, मेडिकल कॉलेज बन रहे हैं, कॉलेज और यूनिवर्सिटीज की संख्या बढ़ रही है।

भारत आगे बढ़ रहा है, भारत का नागरिक आगे बढ़ रहा है। भारत के लोग इस momentum को बनाए रखना चाहते हैं। अब इससे पीछे नही हटना है। और पीछे हटना ये तो मोदी को कभी स्वीकार नहीं हो सकता है। भारत के लोग stability चाहते हैं, स्थायित्व चाहते हैं। भारत के लोग विकसित भारत की यात्रा को गति देना चाहते हैं। मैं देश के प्रत्येक युवा का आव्हान करता हूं- वो विकसित भारत का एंबेसडर बने। वो विकसित भारत के संकल्पों का नेतृत्व करे। मैं भाजपा कार्यकर्ताओं से भी कहूंगा- प्रत्येक भाजपा कार्यकर्ता, नमो एप पर जाएं और कम से कम 10 लोगों को विकसित भारत का एंबेसडर बनाएं। हमें आज एक ऐसी पीढ़ी तैयार करनी है, जिसका सपना हो विकसित भारत, जिसका संकल्प हो विकसित भारत। जिसकी साधना हो विकसित भारत, जिसका समर्पण हो विकसित भारत।

विकसित भारत के निर्माण के लिए ये बहुत जरूरी है कि कोई भी नागरिक पीछे नहीं छूटे। इन चुनावों में मैंने लगातार कहा है कि हर लाभार्थी तक पहुंचकर भाजपा सरकार उसे सरकारी योजनाओं का लाभ देगी। इसके लिए केंद्र सरकार ने 14 नवंबर यानि, जनजातीय गौरव दिवस, यानि भगवान बिरसा मुंडा की जयंती से विकसित भारत संकल्प यात्रा शुरू की है। योजनाओं से वंचित लोगों को जोड़ने के लिए सरकार खुद लोगों के दरवाजे पर दस्तक दे रही है। जिन क्षेत्रों में ये यात्रा पहुंच रही है, वहां लोग खुशियां मना रहे हैं कि कि मोदी की गारंटी वाली गाड़ी, हमारे गांव आ रही है। मैं आज विजय के इस समारोह से, हर बीजेपी कार्यकर्ता को सलाह दूंगा, आग्रह करूंगा। अब आज से आपको मोदी की गारंटी वाली इस गाड़ी के आगे-आगे चलना है। मोदी की गारंटी वाली गाड़ी, देश की सफलता की गारंटी बनेगी, और ये भी मोदी की गारंटी है। और आपको एक और बात याद रखनी है- जहां दूसरों से उम्मीद खत्म होती है, वहां से मोदी की गारंटी शुरू होती है।

विधानसभा चुनाव के नतीजों ने पॉजिटिव एनर्जी का एक ऐसा प्रवाह शुरू किया है, जिसे आज पूरा देश महसूस कर रहा है। इस शक्ति ने विकसित भारत के लिए तैयार हुई नींव को और मजबूत कर दिया है। हमें ये ऊर्जा बनाए रखनी है, हमें ये शक्ति बढ़ाते रहना है। हमें 140 करोड़ भारतीयों के विश्वास को जगाए रखना है। हमें जन-जन को अपने साथ जोड़ना है। हमें हर मन को समझना है। हमें सबको साथ लेकर चलना है। हमें हर एक को अमृत काल की विकास यात्रा का साथी बनाना है। जो हमसे दूर हैं, हमें उनके पास पहुंचना है। जिन्हें संदेह है, हमें उनमें भरोसा जगाना है। भाजपा के कार्यकर्ताओं पर जिम्मेदारी और बढ़ गई है। क्योंकि नकारात्मक शक्तियां अब तेजी से एकजुट होने का प्रयास करेंगी। देश को बांटने वाली ताकतें अब एड़ी-चोटी का जोर लगाएंगी। समाज में खाई पैदा करने वाले अब नए मौके तलाशेंगे। हमें उनसे मुकाबला भी करना है, उनके फेक नैरेटिव का जवाब भी देना है। लेकिन उससे बढ़कर, हमें जनता के यकीन को बनाए रखना है।

सबके प्रयास से ही हम अपने संकल्पों की सिद्धि कर सकते हैं। मुझे देश की अमृत पीढ़ी पर पूरा भरोसा है। हमारा लक्ष्य एक है, साधना एक है, सपना एक है। भारत विकसित होकर रहेगा। ▪

मध्यप्रदेश में चला मोदी मैजिक

विष्णु दत्त शर्मा

- एमपी के मन में मोदी, मोदी के मन में एमपी को प्रदेश की जनता ने साकार किया।
- गृहमंत्री श्री अमित शाह जी के टास्क को कार्यकर्ताओं ने पूरा किया।
- अल्पसंख्यकों ने जताया मोदी जी पर भरोसा।
- कर्मचारियों ने कांग्रेस का नहीं दिया साथ, कांग्रेस की गुंडागर्दी को जनता ने दिया नकार।
- मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की डबल इंजन की सरकार, रणनीति व सामूहिक नेतृत्व से मिली ऐतिहासिक जीत।
- वोट शेयर के लक्ष्य को पूरा करने में बूथ के कार्यकर्ताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मध्यप्रदेश के विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को मिली अभूतपूर्व जीत ने भारत की राजनीति में एक नया इतिहाए रचा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का नेतृत्व और भारतीय राजनीति के आधुनिक चाणक्य व केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह की कुशल रणनीति और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी के मार्गदर्शन से यह ऐतिहासिक जीत भारतीय जनता पार्टी को मिली है।

प्रदेश के वरिष्ठ नेतृत्व मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश चुनाव प्रभारी श्री भूपेंद्र यादव, केंद्रीय मंत्री व प्रदेश चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक श्री नरेंद्र सिंह तोमर, केंद्रीय मंत्री व प्रदेश चुनाव सह प्रभारी श्री अश्विनी वैष्णव, केंद्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, श्री प्रहलाद सिंह पटेल, श्री फग्गन सिंह कुलस्ते, पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव श्री कैलाश विजयवर्गीय, प्रदेश के मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा सहित भाजपा के सभी

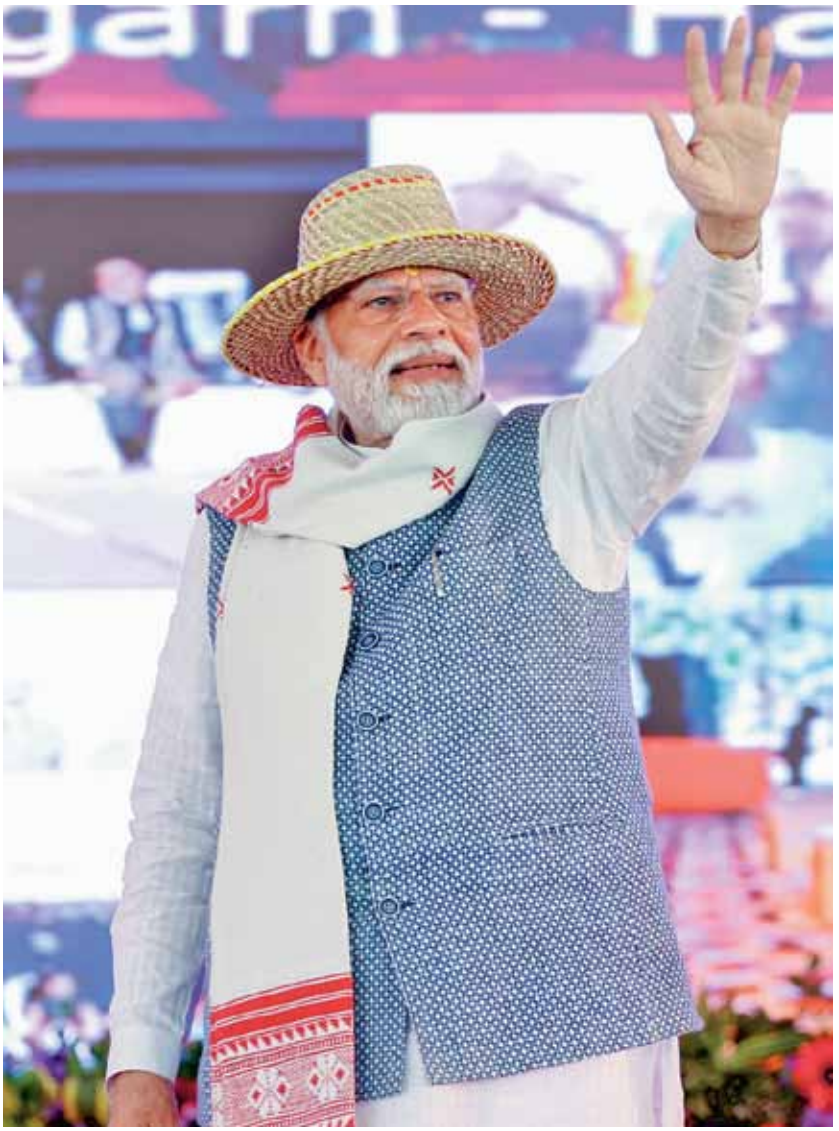

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भोपाल में देश भर के 10 लाख बूथों के कार्यकर्ताओं को मेरा बूथ सबसे मजबूत अभियान के तहत बूथ जीतने का जो मंत्र दिया था, उसे पार्टी के देवदुर्लभ कार्यकर्ताओं ने साकार करने का काम किया है।

प्रदेश की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को विधानसभा चुनाव में जिस तरह से आशीर्वाद दिया है वह यह बताता है कि मध्यप्रदेश की जनता 2024 में श्री मोदी जी को पुन: देश का प्रधानमंत्री बनाने का मन अभी से बना चुकी है।

वरिष्ठ नेताओं के सामूहिक नेतृत्व को हृदय से बधाई कि उनके प्रयासों से पार्टी को विधानसभा चुनाव में ऐतिहासिक बहुमत मिला है।

प्रधानमंत्री मोदी जी के संकल्प को कार्यकर्ताओं ने साकार किया

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भोपाल में देश भर के 10 लाख बूथों के कार्यकर्ताओं को मेरा बूथ सबसे मजबूत अभियान के तहत बूथ जीतने का जो मंत्र दिया था, उसे पार्टी के देवदुर्लभ कार्यकर्ताओं ने साकार करने का काम किया है। प्रदेश की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को विधानसभा चुनाव में जिस तरह से आशीर्वाद दिया है वह यह बताता है कि मध्यप्रदेश की जनता 2024 में श्री मोदी जी को पुनः देश का प्रधानमंत्री बनाने का मन अभी से बना चुकी है।

51 प्रतिशत वोट शेयर के लक्ष्य को कार्यकर्ता पूरा कर रहे

केंद्रीय गृह मंत्री व कुशल संगठक व रणनीतिकार श्री अमित शाह जी ने मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में हर बूथ पर 51 प्रतिशत वोट शेयर प्राप्त करने का टास्क दिया था। पार्टी के देवदुर्लभ कार्यकर्ताओं ने प्रदेश के 64523 बूथों पर अथक मेहनत करके हर बूथ को जीतने के साथ 51 प्रतिशत वोट शेयर प्राप्त करने की ओर अग्रसर हुए है।

सामूहिक नेतृत्व से चुनाव लड़ा, गरीब कल्याण पर जनता ने आशीर्वाद दिया

मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी ने सामूहिक नेतृत्व के साथ चुनाव लड़ा है और पार्टी का एक-एक कार्यकर्ता लगातार जमीनी स्तर पर कार्य करके पार्टी को ऐतिहासिक बहुमत दिलाने का कार्य किया है। प्रदेश की जनता से केंद्र की प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार और प्रदेश में श्री मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व वाली डबल इंजन की सरकार द्वारा किए गए विकास कार्यों के साथ गरीब कल्याण के कार्यों को लेकर जनता ने अपना आशीर्वाद भाजपा को दिया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा चलाई गईं गरीब कल्याण की योजनाएं चाहे 64 लाख परिवारों को प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत पक्के मकान देना हो या गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत देश के करोड़ों-करोड़ जनता को प्रति व्यक्ति पांच किलोग्राम मुफ्त अनाज हो या आयुष्मान भारत योजना के तहत गरीब परिवारों को पांच लाख रूपए तक के मुफ्त इलाज की योजना हो। केंद्र सरकार की गरीब कल्याण की योजनाओं की वजह से ही प्रदेश के एक करोड़ 36 लाख लोगों को गरीबी की रेखा से ऊपर लाने का कार्य किया गया है। प्रदेश की भाजपा सरकार द्वारा चलाई गई लाड़ली लक्ष्मी योजना में 45 लाख बेटियां लाड़ली लक्ष्मी बन चुकी हैं। लाड़ली बहना योजना के तहत एक करोड़ 31 लाख बहनों को सम्मान देने का कार्य किया गया है।

बंटाढार ने बनाया था बीमारू राज्य

साल 2003 तक मिस्टर बंटाढार ने प्रदेश को बीमारू राज्य बना दिया था। 15 महीने की सरकार में करप्शन नाथ ने वल्लभ भवन को दलाली का अड्डा बना दिया था।

नलजल योजना का रुपया करप्शन नाथ की सरकार में लेप्स इसलिए हो गया क्योंकि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को श्रेय नहीं मिल जाए। ऐसी कांग्रेस की सरकार को जनता ने अब नकार दिया है।

अल्पसंख्यकों ने दिया भाजपा को वोट

कांग्रेस ने हमेशा तुष्टिकरण की राजनीति की है। राहुल गांधी ने भोपाल में रोड शो अल्पसंख्यकों के इलाके में किया। इस बार अल्पसंख्यकों ने भी कांग्रेस का साथ नहीं दिया और कई सीटों पर उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की नीतियों से प्रभावित होकर मतदान किया। बुरहानपुर में भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी श्रीमती अर्चना चिटनीस चुनाव जीत गई।

कर्मचारियों ने कांग्रेस को नकारा

कर्मचारियों को कांग्रेस ने गुमराह करने की खूब कोशिश की,लेकिन पोस्टल बैलेट पेपर में कर्मचारियों के मतों ने कांग्रेस को आईना दिखा दिया। खजुराहो में कांग्रेस ने षडयंत्र पूर्वक 35 भाजपा कार्यकर्ताओं पर हत्या का मामला दर्ज किया गया। वहां भारतीय जनता पार्टी ने जीत हासिल की और जनता ने कांग्रेस की गुंडागर्दी को नकार दिया। ▪

दशकों से उपेक्षित वर्ग के पास खुद चलकर गई सरकार

गरीबों की सबसे बड़ी ताकत आयुष्मान योजना की शुरुआत झारखंड से हुई थी। अब इस पावन भूमि से एक नहीं बल्कि दो-दो ऐतिहासिक अभियानों की शुरुआत होने जा रही है। विकसित भारत संकल्प यात्रा, सैचुरेशन के सरकार के लक्ष्यों को प्राप्त करने का सशक्त माध्यम बनेगी।

पीएम जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान, विलुप्त होने की कगार पर खड़ी जनजातियां, जिसे हम अब तक प्रिमिटिव ट्राइब्स के रूप में जानते हैं। उनकी रक्षा करेगा, उन्हें सशक्त करेगा। ये दोनों ही अभियान, अमृतकाल में भारत की विकास यात्रा को नई ऊर्जा देंगे।

- **लगभग 24,000 करोड़ रुपये के बजट के साथ पीएम जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान पीएम-जनमन प्रारंभ**
- **पीएम-किसान के तहत लगभग 18,000 करोड़ रुपये की 15वीं किस्त जारी की**
- **विकसित भारत संकल्प की शपथ दिलाई**
- **''भगवान बिरसा मुंडा के संघर्ष और बलिदान अनगिनत भारतीयों को प्रेरित करते हैं''**
- **''दो ऐतिहासिक पहल - 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' और 'पीएम जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान' शुरू''**
- **''भारत में विकास की डिग्री अमृत काल के चार स्तंभों - महिला शक्ति, युवा शक्ति, कृषक शक्ति और हमारे गरीब और मध्यम वर्ग की शक्ति को मजबूत करने की क्षमता पर निर्भर करती है''**
- **''मोदी ने वंचितों को अपनी प्राथमिकता बनाई है''**
- **''सच्ची धर्मनिरपेक्षता तभी आती है, जब देश के किसी भी नागरिक के साथ भेदभाव की सभी संभावनाएं खत्म हो जाएं''**
- **''विकसित भारत संकल्प यात्रा'' भगवान बिरसा मुंडा की जयंती से शुरू होकर अगले वर्ष 26 जनवरी तक चलेगी।**

जनजातीय गौरव और संघर्ष के प्रतीक भगवान बिरसा मुंडा की गाथा हर देशवासी को प्रेरणा से भर देती है। तिलका मांझी, सिद्धू कान्हू, चांद भैरव, फूलो झानो, नीलाम्बर, पीताम्बर, जतरा ताना भगत और अल्बर्ट एक्का जैसे अनेक वीरों ने इस धरती का गौरव बढ़ाया है। अगर हम आजादी के आंदोलन को देखें तो देश का ऐसा कोई कोना नहीं था, जहां आदिवासी योद्धाओं ने मोर्चा नहीं लिया हो। मानगढ़ धाम में गोविंद गुरू के योगदान को कौन भुला सकता है? मध्य प्रदेश के तंत्या भील, भीमा नायक, छत्तीसगढ़ के शहीद वीर नारायण सिंह, वीर गुंडाधुर, मणिपुर की रानी गाइडिन्ल्यू... तेलंगाना के वीर रामजी गोंड, आदिवासियों को प्रेरित करने वाले आंध्र प्रदेश के अल्लूरी सीताराम राजू, गोंड प्रदेश की रानी दुर्गावती, ये वो विभूतियां हैं, जिनका देश आज भी ऋणी है। ये देश का दुर्भाग्य है कि आजादी के बाद ऐसे वीरों के साथ न्याय नहीं हुआ। संतोष है कि आजादी के 75 वर्ष होने पर अमृत महोत्सव के दौरान ऐसे वीर-वीरांगनाओं को याद किया, उनकी स्मृतियों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाया।

गरीबों की सबसे बड़ी ताकत आयुष्मान योजना की शुरुआत झारखंड से हुई थी। अब इस पावन भूमि से एक नहीं बल्कि दो-दो ऐतिहासिक अभियानों की शुरुआत होने जा रही है। विकसित भारत संकल्प यात्रा, सैचुरेशन के सरकार के लक्ष्यों को प्राप्त करने का सशक्त माध्यम बनेगी। पीएम जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान, विलुप्त होने की कगार पर खड़ी जनजातियां, जिसे हम अब तक प्रिमिटिव ट्राइब्स के रूप में जानते हैं। उनकी रक्षा करेगा, उन्हें सशक्त करेगा। ये दोनों ही अभियान, अमृतकाल में भारत की विकास यात्रा को नई ऊर्जा देंगे।

अगले 25 वर्षों के अमृतकाल में अगर हमें विकसित भारत की भव्य और दिव्य इमारत का निर्माण करना है, तो हमें उसके चार अमृत स्तंभों

को और मजबूत करना होगा, निरंतर मजबूत करना होगा। हमारी सरकार ने जितना 10 साल में किया, अब उससे भी ज्यादा ऊर्जा के साथ हमें इन चार अमृत स्तंभों पर अपनी पूरी ताकत लगानी है। और विकसित भारत के ये चार अमृत स्तंभ हैं क्या?

पहला अमृत स्तंभ- भारत की हमारी महिलाएं, हमारी माताएं-बहनें, हमारी नारीशक्ति।

दूसरा अमृत स्तंभ है- हमारे भारत के किसान भाई-बहन और किसानी से जुड़े हुए जो कारोबार हैं, चाहे पशुपालक हो, चाहे मछली पालक हो, ये सारे हमारे अन्नदाता।

तीसरा अमृत स्तंभ- भारत के नौजवान, हमारे देश की युवाशक्ति जो आने वाले 25 साल में देश को नई ऊंचाई पर पहुंचाने वाली सबसे बड़ी शक्ति है। और

चौथा अमृत स्तंभ- भारत का मध्यम वर्ग, नियो मिडिल क्लास और भारत के मेरे गरीब भाई-बहन।

इन चार स्तंभों को हम जितना मजबूत करेंगे, विकसित भारत की इमारत भी उतनी ही ऊंची उठेगी। बीते 10 वर्षों में इन चार अमृत स्तंभों को सशक्त करने के लिए जितना कार्य हुआ है, उतना पहले कभी नहीं हुआ।

आज तक और आजकल हर तरफ भारत की इस सफलता की चर्चा है कि हमारी सरकार के 5 वर्षों में 13 करोड़ से ज्यादा लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। आखिर बीते कुछ वर्षों में ऐसा क्या हुआ जो इतना बड़ा परिवर्तन जमीन पर देखने को मिला है? 2014 में जब हमें आप सबने दिल्ली की गद्दी पर बिठाया, सरकार चलाने का दायित्व दिया, उस दिन से हमारा सेवा काल शुरू हुआ है। हम सेवा करने के लिए आए हैं। और उस सेवाकाल की बात करूं तब उस समय हमारे आने से पहले भारत की एक बहुत बड़ी आबादी मूलभूत सुविधाओं से वंचित थी। देश के करोड़ों गरीबों ने इस बात की उम्मीद भी छोड़ दी थी कि कभी उनका जीवन बदल पाएगा। और सरकारों का रवैया भी ऐसा था कि वो खुद को जनता का माई-बाप समझती थीं। हमने माई-बाप की भावना से नहीं बल्कि सेवक की भावना से आपके सेवक की तरह काम करना शुरू किया। जो वंचित थे, हमने उन्हें वरीयता देना शुरू किया। जिन्हें सबसे दूर समझा जाता था, सरकार खुद चलकर उनके पास गई। जो दशकों से उपेक्षित थे, हमारी सरकार उनका संबल बनी, उनकी साथी बनी। ब्यूरोक्रेसी वही थी, लोग वही थे, फाइलें भी वही थीं, कानून नियम भी वही थे। लेकिन सोच बदली और सोच बदली तो परिणाम भी बदल गए।

- 2014 से पहले देश के गांवों में स्वच्छता का दायरा 40 प्रतिशत से भी कम था। आज हम शत प्रतिशत के लक्ष्य पर पहुंच रहे हैं।
- हमारी सरकार से पहले एलपीजी कनेक्शन सिर्फ 50-55 प्रतिशत घरों में था। आज करीब-करीब 100 प्रतिशत घरों में महिलाओं को धुएं से मुक्ति मिल चुकी है।
- पहले देश के सिर्फ 55 प्रतिशत बच्चों को ही जीवनरक्षक टीके लग पाते थे, आधे बच्चे रह जाते थे। आज लगभग शत-प्रतिशत बच्चों का टीकाकरण हो पा रहा है।
- आजादी के बाद सात दशकों में देश के सिर्फ 17 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों तक नल से जल की सुविधा थी, 20 पर्सेंट भी नहीं। जल जीवन मिशन की वजह से आज ये भी 70 प्रतिशत तक पहुंच रहा है।

हम आप जानते हैं कि समाज में जिनको उस समय मिला था, वो कौन थे? ये शुरूआती मलाई मिली वो लोग कौन थे? ये सारे रसूखदार लोग हुआ करते थे। जो संपन्न लोग होते थे, जिनकी सरकार में पहुंच होती थी, पहचान होती थी वो सुविधाएं और व्यवस्थाएं आसानी से जुटाते थे और सरकार का भी दिमाग ऐसा था, उन्हीं को ज्यादा देते थे। लेकिन जो लोग समाज में पीछे रहे थे, जो मूल सुविधाओं से वंचित थे, उन पर ध्यान देने वाला भी कोई नहीं था। वो असुविधाओं के बीच अपना जीवन काट रहे थे। मोदी ने समाज के ऐसे वंचितों को अपनी प्राथमिकता बनाया। क्योंकि वो लोग हैं जिनके बीच मैं जिया हूं, मैंने कभी ऐसे परिवारों की रोटी खाई है, मैंने कभी समाज के आखिरी व्यक्ति का नमक खाया है।

आमतौर पर सरकारों का रवैया रहता है कि जो आसानी से हासिल हो जाए, उस लक्ष्य को पहले प्राप्त करो। लेकिन हमने दूसरी रणनीति पर काम किया। मैं तो ज्ञानियों को कहूंगा इसका अध्ययन करें, आपको याद होगा, आजादी के इतने दशकों के बाद भी 18 हजार गांव ऐसे रह गए थे, जहां बिजली नहीं पहुंची थी। 18वीं शताब्दी में जीने के लिए, अंधेरे में जीने के लिए मजबूर थे। उन्हें अंधेरे में जीने के लिए छोड़ दिया गया था, क्योंकि वहां बिजली पहुंचाने के लिए कई तरह की मुश्किलों का सामना कठिन था मैं मानता हूं। लेकिन कठिन था, तभी तो करना होता है। मक्खन पर लकीर तो हर कोई करता है, अरे पत्थर पर भी तो लकीर करनी चाहिए। मैंने लाल किले से वादा किया था देश को कि मैं एक हजार दिन में 18 हजार गांवों तक बिजली पहुंचाने का कठिन संकल्प मैंने सार्वजनिक रूप से लिया था

और आज मुझे सर झुकाकर के कहना है कि ये आपके सेवक ने उस काम को समय पर पूरा कर दिया था।

हमारे देश में 110 से ज्यादा जिले ऐसे थे, जो विकास के हर पैरामीटर पर पिछड़े हुए थे, बहुत पीछे थे। इन जिलों पर पुरानी सरकारों ने ठप्पा लगा दिया, ये तो पिछड़े हैं। और पहले की सरकारों ने बस उसकी पहचान कर ली, ये बेकार है, पिछड़े हैं, आगे कुछ नहीं हो सकता है और सरकार सोती रही। इन जिलों में शिक्षा, स्वास्थ्य, सुविधाएं, दशकों से दयनीय स्थिति में थी। और संयोग देखिए कि इन्हीं पिछड़े जिलों में देश की सबसे ज्यादा मेरे आदिवासी परिवारों की जनसंख्या रहती थी। जब अफसरों को पनिशमेंट पोस्टिंग करनी होती थी, तो इन्हीं जिलों में भेज दिया जाता था। थका हुआ, हारा हुआ नाकाम जो व्यक्ति है, उसी को कहते जाओ यार तुम उधर ही जाओ तुम्हारा इधर काम नहीं है। अब वो जाकर क्या करेगा? इन 110 से ज्यादा जिलों को अपने हाल पर छोड़कर, भारत कभी विकसित नहीं हो सकता था। इसलिए वंचितों को वरीयता के सिद्धांत पर चलते हुए हमारी सरकार ने इन जिलों को Aspirational District आकांक्षी जिलों के रूप में घोषित किया। हमने इन जिलों में सरकारों को विश्वास में लेकर के सबसे होनहार अफसरों को नियुक्त करने पर जोर दिया। इन जिलों में हम शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, ऐसे अनेक विषयों पर शून्य से काम शुरू करके सफलता के नए शिखर पर पहुंच रहे हैं। अब आकांक्षी जिला अभियान की इस सफलता को आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम के जरिए, इसका विस्तार किया जा रहा है।

दशकों तक हमारे देश में सोशल जस्टिस-सामाजिक न्याय और सेकुलरिज्म न जाने रोज सुबह शाम इसके गीत तो बहुत गाए गए, बयानबाजी बहुत होती रही। सच्चा सेकुलरिज्म तभी आता है, जब देश के किसी भी नागरिक के साथ भेदभाव की सारी संभावनाएं खत्म हो जाएं। सामाजिक न्याय का भरोसा तभी मिलता है, जब सबको बराबरी से, समान भावना से सरकारी योजनाओं का लाभ मिले। दुर्भाग्य से, आज भी बहुत से राज्यों में कई गरीब हैं, जिनके पास योजनाओं की पर्याप्त जानकारी नहीं हैं। कई ऐसे भी गरीब हैं, जो योजनाओं का लाभ लेने के लिए भागदौड़ करने में सक्षम नहीं हैं। आखिर कब तक हम उन्हें उनके हाल पर छोड़े रहेंगे। इसी दर्द में से, इसी पीड़ा में से, इसी संवेदना में से ये एक सोच निर्माण हुई है। और इसी सोच के साथ अब आज से विकसित भारत संकल्प यात्रा शुरू हो रही है। ये यात्रा भगवान बिरसा मुंडा की जन्म जयंती 15 नवंबर से शुरू करके अगले साल 26 जनवरी तक उसको चलाया जाएगा। इस यात्रा में सरकार मिशन मोड में देश के गांव-गांव जाएगी, हर गरीब, हर वंचित को सरकारी योजनाओं का जो हकदार है, उसके हक के लिए उसको लाभार्थी बनाया जाएगा। उसको ये योजना पहुंचे, उसकी व्यवस्था की जाएगी। 2018 में भी केंद्र सरकार ने ऐसे ही एक ग्राम स्वराज अभियान चलाया था। और भारत सरकार के एक हजार अफसरों को गांवों में भेजा था। एयर कंडिशन कमरों से निकालकर के 1 हजार अफसर गांव में जाकर के बैठे थे। इस अभियान में भी हम सात प्रमुख योजनाओं को लेकर हर गांव तक गए थे। ग्राम स्वराज अभियान की तरह ही हमें विकसित भारत संकल्प यात्रा में भी हर गांव जाकर के, ऐसे हर हकदार को मिलकर के इस योजना को सफल करने का प्रण लेकर के निकलना है, और जब भगवान बिरसा की धरती से निकलते हैं तो सफलता अवश्य मिलती है। मैं वो दिन देख रहा हूं, जब हर गरीब के पास-

- मुफ्त राशन देने वाला राशन कार्ड होगा।
- जब हर गरीब के पास उज्ज्वला का गैस कनेक्शन होगा,
- सौभाग्य का बिजली कनेक्शन होगा, और नल से जल होगा।
- जब हर गरीब के पास 5 लाख रुपए तक का मुफ्त इलाज देने वाला आयुष्मान कार्ड होगा।
- जब हर गरीब के पास उसका अपना पक्का घर होगा।
- जब हर किसान, केंद्र सरकार की पेंशन योजना से जुड़ जाएगा।
- जब हर मजदूर, पेंशन योजनाओं का लाभार्थी हो जाएगा।
- जब हर पात्र नौजवान, मुद्रा योजना का लाभ ले सकेगा, और
- एक entrepreneur बनने की दिशा में कदम रखेगा।

विकसित भारत संकल्प यात्रा एक तरह से देश के गरीबों को, देश की माताओं-बहनों को, देश के नौजवानों को, देश के किसानों को मोदी की गारंटी है। और जब मोदी की गारंटी होती है, ना तो आप जानते हैं वो गारंटी क्या होती है? मोदी की गारंटी यानि गारंटी पूरा होने की भी गारंटी।

विकसित भारत के संकल्प का एक प्रमुख आधार है पीएम जनमन...यानि पीएम जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान। सामाजिक न्याय जनरल-जनरल बातें हुई, मोदी हिम्मत करके निकला है आदिवासी न्याय अभियान को लेकर के। आजादी के बाद कई दशकों तक आदिवासी समाज को लगातार नजर अंदाज किया गया। अटल जी की सरकार थी, जिसने आदिवासी समाज के लिए अलग मंत्रालय बनाया, अलग से बजट बनाया। हमारी सरकार के दौरान अब आदिवासी कल्याण का बजट, पहले के मुकाबले 6 गुना तक बढ़ चुका है।

पीएम जनमन यानि पीएम जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान, इसके तहत अब हमारी सरकार उन आदिवासी भाई-बहनों तक पहुंचेगी, जिन तक कभी नहीं पहुंचा गया। ये वो जनजातीय समूह हैं, हमने कह तो दिया वो प्रिमिटिव ट्राइब्स हैं, जिनमें से ज्यादातर अब भी जंगलों में रहने के लिए मजबूर हैं। उन्होंने रेल की देखने की बात छोड़ो, आवाज भी नहीं सुनी है। देश के 22 हजार से ज्यादा गांवों में रह रहे ऐसे 75 जनजातियाँ, वो 75 जनजाति समुदायों की, प्रिमिटिव ट्राइब्स की, पहचान हमारी सरकार ने की है। जैसे पिछड़ों में भी अति पिछड़े होते हैं, वैसे ही ये आदिवासियों में भी सबसे पीछे रह गए आदिवासी हैं। देश में इनकी संख्या लाखों में है। इन सबसे पिछड़े आदिवासियों को मूल सुविधाएं भी नहीं मिली हैं, आजादी के 75 साल बाद भी नहीं मिली है। इस आदिवासी समाज के लोगों को कभी पक्का मकान नहीं मिला। इनकी कई-कई पीढ़ियों में बच्चों ने स्कूल तक देखा नहीं है। इस समाज के लोगों के कौशल विकास पर ध्यान नहीं दिया गया। इसलिए अब इन जनजातियों तक भारत सरकार विशेष अभियान चलाकर पहुंचने वाली है। पहले की सरकारों ने आंकड़ों को जोड़ने का काम कर लिया, जो नजदीक हैं, जो ऊपर पहुंच चुके उन्हीं से काम करवा लेना, लेकिन मुझे सिर्फ आंकड़ों को जोड़कर के नहीं बैठना है, मुझे तो जीवन को जोड़ना है, जिंदगियों को जोड़ना है, हर जिंदगी में जान भरनी है, हर जिंदगी में नया जज्बा भरना है। इसी लक्ष्य के साथ पीएम जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान यानि पीएम जन मन, हम जन गण मन तो गाते हैं मैं पीएम जन मन के साथ इस महान अभियान की शुरुआत कर रहा हूँ। इस महा अभियान पर भारत सरकार 24 हजार करोड़ रुपए खर्च करने जा रही है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी, Women Led Development का प्रेरक प्रतीक हैं। बीते वर्षों में जिस तरह भारत ने पूरी दुनिया को नारी शक्ति के विकास का मार्ग दिखाया है, वो अभूतपूर्व है। ये वर्ष माताओं-बहनों-बेटियों की सुविधा, सुरक्षा, सम्मान, स्वास्थ्य और स्वरोजगार के रहे हैं। बेटियां खेलकूद में जो नाम कमा रही हैं

ना, सीना चौड़ा हो जाता है। हमारी सरकार ने महिलाओं के जीवन के हर पड़ाव को ध्यान में रखते हुए, उनके लिए योजनाएं बनाईं।

- बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं से बेटियों की जनसंख्या बढ़ी है और स्कूलों में छात्राओं के नामांकन में भी वृद्धि हुई है।
- सरकारी स्कूलों में छात्राओं के लिए अलग शौचालय के निर्माण से स्कूल छोड़ने की मजबूरी कम हुई है।
- पीएम आवास योजना के तहत करोड़ों घर की मालकिन बहनें बनी हैं, बहनों के नाम पर घर रजिस्टर हुआ है, पहली बार उनके नाम पर कोई प्रॉपर्टी हुई है।
- सैनिक स्कूल, डिफेंस एकेडमी को बेटियों के एडमिशन के लिए पहली बार खोल दिया गया है।
- मुद्रा योजना के तहत लगभग 70 प्रतिशत बिना गारंटी के ऋण देने वाली मेरे देश की महिलाएं हैं, मेरी बेटियां हैं।
- महिला स्वयं सहायता समूहों को भी सरकार से रिकॉर्ड आर्थिक मदद दी जा रही है।
- लखपति दीदी अभियान, दो करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाकर रहूंगा, दो करोड़ महिलाओं को। स्वयं सहायता समूह चलाने वाली दो करोड़ महिलाएं लखपति बनकर रहने वाली हैं।
- कुछ महीने पहले ही हमारी सरकार ने विधानसभा और लोकसभा में महिलाओं को आरक्षण देने वाला नारी शक्ति वंदन अधिनियम भी अपनाया है।

देश की सभी बहनों को उनका ये भाई गारंटी देता है कि बहनों के विकास में आने वाली हर रुकावट को ये आपका भाई ऐसे ही दूर करता रहेगा, आपका भाई आपकी मुसीबतों की मुक्ति के लिए जी-जान से जुटा रहेगा।

नारी शक्ति का अमृत स्तंभ, विकसित भारत के निर्माण में अहम भूमिका निभाएगा।

केंद्र सरकार विकसित भारत की यात्रा में हर व्यक्ति के सामर्थ्य का उपयोग करने के लिए प्रतिबद्ध है। हमने पीएम विश्वकर्मा योजना भी शुरू की है। सरकार ने उन लोगों को आगे लाने का प्रयास किया है, जो अपने पारंपरिक कौशल के लिए जाने जाते हैं। कुम्हार हो, लोहार हो, सुतार हो, सुनार हो, मालाकार हो, राजमिस्त्री हो, बढ़ई हो, अरे कपड़े धोने हो, कपड़े सिलने वाले हो, जूते बनाने वाले हो, ऐसे हमारे साथी, ये हमारे विश्वकर्मा साथी इस योजना के तहत विश्वकर्मा साथियों को आधुनिक ट्रेनिंग मिलेगी, और ट्रेनिंग के दौरान उनको पैसा मिलेगा। उनको अच्छे नए औजार मिलेंगे, नई टेक्नोलॉजी मिलेगी और इस पर 13 हजार करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे।

अब देश के करोड़ों किसानों के खातों में भेजी गई कुल रकम 2 लाख 75 हजार करोड़ रुपए को पार कर गई है।

कोई कट की कंपनी नहीं, कोई बिचौलिया नहीं, डायरेक्ट मोदी का सीधा नाता रहता है किसानों के साथ। ये वही किसान हैं, जिनकी पहले कोई पूछ नहीं होती थी। अब इन किसानों की जरूरतों का ध्यान सरकार रख रही है। ये हमारी ही सरकार है जिसने पशुपालकों और मछली पालकों को किसान क्रेडिट कार्ड की सुविधा से जोड़ा है। पशुधन के मुफ्त टीकाकरण पर हमारी सरकार ने 15 हजार करोड़ रुपए खर्च किए। कोरोना के बाद आपको मुफ्त टीका दिया, हजारों करोड़ खर्च किए गए। आपके हर परिवार जन को बचाने की कोशिश की गई, इतना ही नहीं अब 15 हजार करोड़ रुपया खर्च करके मुफ्त में पशु का टीकाकरण भी हो रहा है। मछली पालन को बढ़ावा देने के लिए, मत्स्य संपदा योजना के तहत आर्थिक मदद दी जा रही है। आज देश में 10 हजार नए किसान उत्पाद संघ- FPO बन रहे हैं। इससे किसानों की लागत कम हुई है और बाजार तक पहुंच आसान हुई है। हमारी सरकार के प्रयासों से ही इस वर्ष इंटरनेशनल मिलेट ईयर मनाया जा रहा है। मोटे अनाज को श्रीअन्न की पहचान देकर विदेश के बाजारों तक पहुंचाने के लिए पूरी तैयारी हो रही है। इसका भी लाभ हमारे आदिवासी भाई-बहनों को होगा।

सरकार के इन चौतरफा प्रयासों से नक्सली हिंसा में भी कमी आई है। सरकार शिक्षा के विस्तार और युवाओं को अवसर देने के लिए प्रतिबद्ध है।

- देश में आधुनिक राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनी है।
- अब विद्यार्थियों को मातृभाषा में मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई का विकल्प मिल रहा है।
- बीते 9 वर्षों में पूरे देश में 300 से अधिक यूनिवर्सिटीज बनी हैं।
- साढ़े 5 हजार से अधिक नए कॉलेज बने हैं।
- डिजिटल इंडिया अभियान ने युवाओं को नए अवसर दिए हैं।
- गांव-गांव कॉमन सर्विस सेंटर्स में हजारों युवाओं को रोजगार मिला है।
- एक लाख से अधिक स्टार्ट-अप्स के साथ दुनिया का तीसरा बड़ा इकोसिस्टम भारत में बना है। ▪

सौगंध मुझे इस मिट्टी की, हम भारत भव्य बनाएंगे...

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर, कर्तव्य पथ एक ऐतिहासिक महायज्ञ का साक्षी बन रहा है। 12 मार्च 2021 दांडी यात्रा वाला दिन था, 12 मार्च 2021 को गांधी जी की प्रेरणा से साबरमती आश्रम से शुरु हुआ आजादी का अमृत महोत्सव, अब 31 अक्टूबर 2023, सरदार साहब की जयंती पर उसका समापन है। जैसे दांडी यात्रा शुरू होने के बाद देशवासी उससे जुड़ते गए, वैसे ही आजादी के अमृत महोत्सव ने जनभागीदारी का ऐसा हुजूम देखा कि नया इतिहास बन गया।

दांडी यात्रा ने स्वतंत्र भारत की लौ को और तेजस्वी किया था। 75 साल की ये यात्रा समृद्ध भारत के सपने को साकार करने वाला कालखंड बन रहा है। 2 वर्ष से अधिक चले इस महोत्सव का, मेरी माटी, मेरा देश अभियान के साथ समापन हो रहा है। आजादी का अमृत महोत्सव एक याद के लिए स्मारक का शिलान्यास भी हुआ है। ये स्मारक आने वाली पीढ़ियों को हमेशा इस ऐतिहासिक आयोजन की याद दिलाएगा।

एक तरफ हम एक महा-उत्सव को समापन कर रहे हैं, तो साथ ही, एक नए संकल्प का शुभारंभ भी कर रहे हैं। मेरा युवा भारत संगठन, यानी MY भारत की नींव रखी गई है। 21वीं सदी में राष्ट्र निर्माण के लिए मेरा युवा भारत संगठन, बहुत बड़ी भूमिका निभाने वाला है।

भारत के युवा कैसे संगठित होकर हर लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मेरी माटी मेरा देश अभियान है। मेरी माटी, मेरा देश, इस अभियान में गांव-गांव, गली-गली से कोटि-कोटि देश के युवा जुड़े हैं। देश भर में लाखों आयोजन हुए। अनगिनत भारतीयों ने अपने हाथों से अपने आंगन, अपने खेत की मिट्टी, अमृत कलश में डाली है। देशभर से साढ़े 8 हजार अमृत कलश पहुंचे हैं। इस अभियान के तहत करोड़ों भारतीयों ने पंच प्रण की प्रतिज्ञा ली है। करोड़ों भारतीयों ने अपनी Selfies को Campaign Website पर Upload भी किया है। कई लोगों के मन में ये सवाल उठ सकता है कि आखिर मिट्टी ही क्यों? मिट्टी से भरे कलश ही क्यों? एक कवि ने कहा है -

यह वह मिट्टी जिसके रस से,
जीवन पलता आया,
जिसके बल पर आदिम युग से,
मानव चलता आया।
यह तेरी सभ्यता संस्कृति,
इस पर ही अवलंबित,
युगों-युगों के चरण चिन्ह,
इसकी छाती पर अंकित।

बड़ी-बड़ी महान सभ्यताएं समाप्त हो गईं लेकिन भारत की मिट्टी में वो चेतना है, भारत की मिट्टी में वो प्राण शक्ति है जिसने इस राष्ट्र को अनादिकाल से आज तक बचा कर रखा है। ये वो माटी है, जो देश के कोने-कोने से, आत्मीयता

भारत के युवा कैसे संगठित होकर हर लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मेरी माटी मेरा देश अभियान है। मेरी माटी, मेरा देश, इस अभियान में गांव-गांव, गली-गली से कोटि-कोटि देश के युवा जुड़े हैं। देश भर में लाखों आयोजन हुए।

अनगिनत भारतीयों ने अपने हाथों से अपने आंगन, अपने खेत की मिट्टी, अमृत कलश में डाली है। देशभर से साढ़े 8 हजार अमृत कलश पहुंचे हैं। इस अभियान के तहत करोड़ों भारतीयों ने पंच प्रण की प्रतिज्ञा ली है।

और अध्यात्म, हर प्रकार से हमारी आत्मा को जोड़ती है। इसी मिट्टी की सौगंध खाकर, हमारे वीरों ने आजादी की लड़ाई लड़ी।

कितने ही किस्से इस मिट्टी से जुड़े हुए हैं। इसी माटी में सौ साल पहले एक छोटा सा बच्चा लकड़ियां बो रहा था। और जब उसके पिता ने पूछा कि क्या बो रहे हो, तो वो बोला कि बंदूकें बो रहा हूं। पिता ने पूछा कि बंदूकों का क्या करोगे, तो उस बालक ने कहा- अपने देश को आजाद कराऊंगा। उसी बालक ने बड़े होकर बलिदान की वो ऊंचाई हासिल की, जिसे आज भी छूना मुश्किल है। वो बालक कोई और नहीं वीर शहीद भगत सिंह थे।

इसी माटी के लिए एक सेनानी ने कहा था-

''दिल से निकलेगी न मर कर भी वतन की उल्फत,
मेरी मिट्टी से भी खुशबू-ए-वफा आएगी''

किसान हो, वीर जवान हो, किसका खून-पसीना इसमें नहीं मिला है। इसी माटी के लिए कहा गया है, **चन्दन है इस देश की माटी,**
तपोभूमि हर ग्राम है।

माटी स्वरूपा इस चंदन को अपने सिर माथे पर लगाने के लिए हम सब लालायित रहते हैं। हमारे मन-मस्तिष्क में चौबीसों घंटे यही चला करता है-

जो माटी का कर्ज चुका दे,
वही जिन्दगानी है।।
जो माटी का कर्ज चुका दे,
वही जिन्दगानी है।।

इसलिए ये जो अमृत कलश आए हैं, इनके भीतर मिट्टी का हर कण अनमोल है। ये हमारे लिए सुदामा की पोटली में रखे चावलों की तरह हैं। जैसे पोटली के चावल की उस मुट्ठी में एक लोक की संपत्ति समाहित थी, वैसे ही इन हजारों अमृत कलशों में, देश के हर परिवार के सपने, आकांक्षाएं, अनगिनत संकल्प हैं। देश के हर घर-आंगन से जो मिट्टी यहां पहुंची है, वो हमें कर्तव्य भाव की याद दिलाती रहेगी। ये मिट्टी, हमें विकसित भारत के अपने संकल्प की सिद्धि के लिए और अधिक परिश्रम के लिए प्रेरित करती रहेगी।

संकल्प आज हम लेते हैं जन जन को जाके जगाएंगे,
सौगंध मुझे इस मिट्टी की, हम भारत भव्य बनाएंगे।

इस मिट्टी के साथ-साथ देशभर से जो पौधे आए हैं, उनसे मिलकर यहां अमृत वाटिका बनाई जा रही है।

ये अमृत वाटिका, आने वाली पीढ़ियों को एक भारत, श्रेष्ठ भारत की प्रेरणा देगी। बहुत कम लोगों को ये पता होगा कि नए संसद भवन में 'जन जननी जन्मभूमि' नाम की एक कलाकृति है। इसे देश के कोने-कोने से 75 महिला कलाकारों ने, देश के हर राज्य की मिट्टी से ही निर्मित किया हुआ है। ये भी हम सभी के लिए बड़ी प्रेरणा है।

आजादी का अमृत महोत्सव करीब-करीब एक हजार दिन चला। और इन एक हजार दिनों ने सबसे बड़ा और सकारात्मक प्रभाव भारत की युवा पीढ़ी पर डाला है। इसने युवा पीढ़ी को आजादी के मूल्य का एहसास कराया है।

आप की तरह मैंने भी, आज की पीढ़ी ने गुलामी नहीं देखी। आजादी के लिए वो तड़प, वो तप और त्याग भी नहीं देखा। हम में से अनेक लोग तो आजादी के बाद ही पैदा हुए हैं। मैं देश का पहला प्रधानमंत्री हूं जिसका जन्म आजादी के बाद हुआ। मुझे भी अमृत महोत्सव के दौरान बहुत सी नई जानकारियां मिलीं। कितने ही आदिवासी योद्धाओं के नाम इस दौरान सामने आए। पूरे देश को पता चला कि गुलामी के लंबे कालखंड में एक पल भी ऐसा नहीं था जब आजादी के लिए आंदोलन ना हुआ हो। कोई क्षेत्र, कोई वर्ग इन आंदोलनों से अछूता नहीं था। दूरदर्शन पर जब मैं स्वराज सीरीज देख रहा था, तब मेरे जो भाव थे, वही भाव मैं देश के युवाओं में भी देख रहा हूं। आजादी के आंदोलन की अनेक गाथाओं को इस महोत्सव ने उजागर किया है।

अमृत महोत्सव को पूरे देश ने जन-जन का उत्सव बना दिया था। हर घर तिरंगा अभियान की सफलता, हर भारतीय की सफलता है। देश के करोड़ों परिवारों को पहली बार ये एहसास भी हुआ है कि उनके परिवार का, उनके गांव का भी आजादी में सक्रिय योगदान था। उसका जिक्र भले ही इतिहास की किताबों में नहीं हुआ, लेकिन अब वो गांव-गांव में बने स्मारकों में, शिलालेखों में हमेशा के लिए अंकित हो चुका है। अमृत महोत्सव ने एक प्रकार से इतिहास के छूटे हुए पृष्ठ को भविष्य की पीढ़ियों के लिए जोड़ दिया है।

आजादी के आंदोलन में सक्रिय रहे सेनानियों का जिलावार एक बहुत बड़ा डेटाबेस भी तैयार हुआ है। अल्लूरी सीताराम राजू हों, वरीकुटी चेन्नइया हों, टांट्या भील हों, तिरोत सिंह हों ऐसे अनेक योद्धाओं के बारे में पूरे देश को जानने का अवसर मिला है। कित्तूर की रानी चेनम्मा, रानी गाइदिन्ल्यू, रानी वेलु नचियार, मतंगिनी हाजरा, रानी लक्ष्मीबाई, वीरांगना झलकारी बाई तक, देश की नारी शक्ति को भी अमृत महोत्सव के दौरान

हमने नमन किया। जब नीयत नेक हो, राष्ट्र प्रथम की भावना सर्वोपरि हो, तो नतीजे भी उत्तम से उत्तम मिलते हैं। आजादी के इसी अमृत महोत्सव के दौरान, भारत ने ऐतिहासिक उपलब्धियां भी हासिल की हैं। हमने सदी के सबसे बड़े संकट, कोरोना काल का सफलता पूर्वक मुकाबला किया। इसी दौरान हमने विकसित भारत के निर्माण का रोडमैप बनाया। अमृत महोत्सव के दौरान ही, भारत, दुनिया की 5वीं बड़ी आर्थिक ताकत बना। अमृत महोत्सव के दरम्यान ही दुनिया में बड़े-बड़े संकटों के बावजूद, सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी इकॉनॉमी बना। भारत ने चंद्रमा पर अपना चंद्रयान उतारा। भारत ने ऐतिहासिक G-20 शिखर सम्मेलन का आयोजन किया। भारत ने एशियाई खेलों और एशियन पैरा गेम्स में 100 पदकों का रिकॉर्ड बनाया।

अमृत महोत्सव के दौरान ही, भारत को 21वीं सदी का नया संसद भवन मिला। महिलाओं को सशक्त करने वाला ऐतिहासिक नारी शक्ति वंदन अधिनियम मिला। भारत ने निर्यात के नए रिकॉर्ड बनाए। कृषि उत्पादन में नया रिकॉर्ड बनाया। इसी दौरान वंदे भारत ट्रेनों का भी अभूतपूर्व विस्तार हुआ। रेलवे स्टेशनों का कायाकल्प करने वाला, अमृत भारत स्टेशन अभियान शुरू हुआ। देश को पहली रीजनल रैपिड ट्रेन, नमो भारत, मिली। देशभर में 65 हजार से अधिक अमृत सरोवर बनाए गए। भारत में मेड इन इंडिया 5G लॉन्च हुआ और सबसे तेजी से विस्तार भी हुआ। इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण के लिए पीएम गतिशक्ति नेशनल मास्टर प्लान भी इसी दौरान लॉन्च हुआ।

आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान देश ने

राजपथ से कर्तव्य पथ तक का सफर भी पूरा कर लिया है। हमने गुलामी के भी अनेक प्रतीकों को हटाया। अब कर्तव्य पथ के एक छोर पर आजाद हिंद सरकार के पहले प्रधानमंत्री, नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा है। अब हमारी नौसेना के पास छत्रपति वीर शिवाजी महाराज की प्रेरणा से नया ध्वज है। अब अंडमान और निकोबार के द्वीपों को स्वदेशी नाम मिला है।

इसी अमृत महोत्सव के दौरान जनजातीय गौरव दिवस की घोषणा हुई। इसी अमृत महोत्सव के दौरान साहेबजादों की याद में वीर बाल दिवस की घोषणा हुई। अमृत महोत्सव के दौरान ही, 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका दिवस के रूप में देश को याद कराया गया।

हमारे यहां कहा जाता है-

अंत: अस्ति प्रारंभ:

यानी जहां से अंत होता है, वहीं से कुछ नए की शुरुआत भी होती है। अमृत महोत्सव के समापन के साथ ही आज मेरा युवा भारत संगठन, MY भारत इसका शुभारंभ हो रहा है। मेरा युवा भारत संगठन, MY भारत संगठन, भारत की युवा शक्ति का उद्घोष है। ये देश के हर युवा को, एक मंच, एक प्लेटफॉर्म पर लाने का बहुत बड़ा माध्यम बनेगा। ये देश के युवाओं की राष्ट्र निर्माण में अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करेगा। युवाओं के लिए जो अलग-अलग प्रोग्राम चलते हैं, वे सभी इसमें समाहित होंगे। आज MY Bharat की वेबसाइट भी शुरू हो गई है। नौजवानों से कहूंगा, आप ज्यादा से ज्यादा इससे जुड़िए। भारत को नई ऊर्जा से भरिए, भारत को आगे ले जाने का संकल्प कीजिए, पुरुषार्थ कीजिए, पराक्रम कीजिए और सिद्धि को हासिल करके रहिए।

भारत की आजादी, हमारे साझा संकल्पों की सिद्धि है। हमें मिलकर इसकी निरंतर रक्षा करनी है। हमें 2047 तक जब देश आजादी के 100 साल मनाएगा, तब तक भारत को विकसित देश बनाना है। आजादी के 100 साल पूरे होने पर देश आज के इस विशेष दिवस को याद करेगा। हमने जो संकल्प लिया, हमने आने वाली पीढ़ी से जो वादे किए, उसे हमें पूरा करना ही होगा। इसलिए हमें अपने प्रयास तेज करने हैं। विकसित देश का लक्ष्य हासिल करने के लिए हर भारतीय का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। हम मिलकर अमृत महोत्सव के इस समापन से विकसित भारत के अमृतकाल की एक नई यात्रा का आरंभ करें। सपनों को संकल्प बनाएं, संकल्प को परिश्रम का विषय करें, सिद्धि 2047 में प्राप्त करके ही रुकेंगे। इसी संकल्प के साथ चल पड़ें। ▪

एमपी के मन में और देश के दिल में हैं मोदी जी

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी एमपी के मन में और देश के दिल में बसे हैं। मध्यप्रदेश को लगातार उनका प्यार और आशीर्वाद मिला है तथा प्रदेश की जनता भी उनके प्रति अगाध विश्वास और श्रद्धा रखती है। इसी श्रद्धा और विश्वास के चलते प्रधानमंत्री जी ने जो गारंटी दी, जनता ने उस पर भी विश्वास किया और भाजपा पर भरपूर प्यार और आशीर्वाद लुटाया है।

मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी को मिली विराट विजय यह बताती है कि मध्यप्रदेश में मोदी मैजिक चला है।

डबल इंजन सरकार के काम को जनता ने दिया आशीर्वाद

मध्यप्रदेश में भाजपा को एक बार फिर शानदार जीत मिली है। भाजपा सरकार ने यहां जो प्रगति और विकास के काम किए हैं, उन्हें जनता ने अपना प्यार और आशीर्वाद दिया है। हमने हर वर्ग के कल्याण के लिए लाड़ली बहना योजना, सीखो कमाओ योजना जैसी जो योजनाएं बनाईं और केंद्र सरकार की योजनाओं का जिस तरह से क्रियान्वयन किया है, डबल इंजन सरकार के इन कामों को जनता ने अपना प्यार और आशीर्वाद दिया है।

सभी ने मिलकर की मेहनत

इस चुनाव में देश के गृहमंत्री और कुशल रणनीतिकार श्री अमित शाह जी ने जीत की रणनीति तैयार की। हमें भाजपा अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी का कुशल मार्गदर्शन मिला। राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी, केन्द्रीय मंत्री व प्रदेश चुनाव प्रभारी श्री भूपेन्द्र यादव, केंद्रीय मंत्री व प्रदेश चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक श्री नरेंद्र सिंह तोमर, प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा, केन्द्रीय मंत्री एवं प्रदेश चुनाव सह प्रभारी श्री अश्विनी वैष्णव, केंद्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और हम सभी लोगों ने कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर काम किया, मेहनत की। यह जीत उसी का परिणाम है।

प्रदेश में जनता के प्यार की प्रो इन्कमबेंसी थी

चुनाव के दौरान कांग्रेस यह दुष्प्रचार कर रही थी कि प्रदेश में एंटी इनकमबेंसी है। प्रदेश में कोई एंटी इनकमबेंसी नहीं थी, जनता के प्यार की प्रो इनकमबेंसी थी। जनता ने भारतीय जनता पार्टी पर भरपूर प्यार और आशीर्वाद लुटाया है। ▪

गरीबों के लिए 4 करोड़ घर बनाए, खुद के लिए एक भी नहीं बनाया

कांग्रेस का झूठ का गुब्बारा पंक्चर हो गया, फूट गया है...कांग्रेस के झूठ के गुब्बारे की हवा निकल गई है। और आपने देखा है ना जब गुब्बारे की हवा तेजी से निकलती है तो वो कैसे लड़खड़ाता है, शोर मचाता हुआ इधर-उधर जाता है।

ये संतों और देश की जनता का आशीर्वाद ही है कि आज भारत का गौरव विश्व में नई बुलंदी पर पहुंचा है। आज पूरे विश्व में भारत का डंका बज रहा है। ये आपके एक वोट ने ऐसा कमाल किया है कि देश के दुश्मनों के हौसले पस्त हैं। इस बार भी एमपी के चुनाव में आपका हर वोट, त्रिशक्ति की ताकत से भरा हुआ है। त्रिविध शक्ति का सामर्थ्य आपके वोट में है। आपका एक वोट यहां फिर से भाजपा की सरकार बनाने जा रहा है। आपका वही वोट दिल्ली में मोदी को मजबूत करेगा। और, आपका वही वोट, भ्रष्टाचारी कांग्रेस को एमपी की सरकार से सौ कोस दूर ले जाएगा। यानि एक वोट, तीन कमाल।

मैंने अपने राजनीतिक जीवन में बहुत से चुनाव देखें हैं, और वर्षों तक तो मैं चुनाव लड़ाता रहा, मैं खुद लड़ा नहीं, बाद में लड़ने की भी नौबत आ गई। लेकिन इस बार मध्य प्रदेश का चुनाव, बड़ा ही दिलचस्प है। और मैं देख रहा हूं, इस बार मध्य प्रदेश का भविष्य मेरी माताएं और बहनें तय करने वाली हैं। कांग्रेस का झूठ का गुब्बारा पंक्चर हो गया, फूट गया है... कांग्रेस के झूठ के गुब्बारे की हवा निकल गई है। और आपने देखा है ना जब गुब्बारे की हवा तेजी से निकलती है तो वो कैसे लड़खड़ाता है, शोर मचाता हुआ इधर-उधर जाता है।

वैसे ही हारते हुए कांग्रेस के नेता इधर-उधर भागते हुए अब सिर्फ शोर ही शोर मचा पा रहे हैं।

कांग्रेस के पास एमपी के विकास का कोई रोडमैप नहीं है और इसलिए कांग्रेस के थके हारे चेहरों में यहाँ के युवाओं को कोई भविष्य नहीं दिखता है। इसलिए एमपी को भाजपा पर भरोसा, एमपी को मोदी की गारंटी पर भरोसा है। और ये भरोसा इसलिए है कि हर देशवासी जानता है कि मोदी की गारंटी यानि हर गारंटी पूरी होने की गारंटी...

अब रुकना नहीं है, थकना नहीं है और विश्राम का तो सवाल पैदा ही नहीं होता। यहां के भाजपा सरकार को 10 साल तक केंद्र की कांग्रेस सरकार ने हर काम में रोड़े अटकाए, काम करने नहीं दिया, रुकावट पैदा की।

अभी 2014 में ही तो मध्य प्रदेश को डबल इंजन की डबल ताकत मिली है। एम पी को जिस अंधेरे कुएं में कांग्रेस ने धकेल दिया था, उस अंधेरे कुएं से भाजपा एम पी को बाहर निकाल पाई है। अब तेज विकास का समय आया है, सबके विकास का समय आया है।

आज कल अयोध्या में बन रहे प्रभु राम के भव्य मंदिर की चर्चा चल रही है। पूरे देश में खुशी की लहर है। सौभाग्य से भरे इस पावन कालखण्ड में मेरे मन में एक बात बार-बार। मैं स्वयं सोचता रहता, और जो बड़ों से सुना हुआ है, वह बात हर पल मेरे कान में गूंजती रहती है। मेरे मन को आंदोलित करती रहती है। और मुझे तेज गति से दौड़ने की प्रेरणा देती है, और वो बार बार मैं उसका स्मरण करता हूं, जहाँ कहा गया है-

राम काज किन्हे बीनू मोहि कहां विश्राम।

अब रुकना नहीं है, थकना नहीं है और विश्राम का तो सवाल पैदा ही नहीं होता। यहां के भाजपा सरकार को 10 साल तक केंद्र की कांग्रेस सरकार ने हर काम में रोड़े अटकाए, काम करने नहीं दिया, रुकावट पैदा की। अभी 2014 में ही तो मध्य प्रदेश को डबल इंजन की डबल ताकत मिली है। एम पी को जिस अंधेरे कुएं में कांग्रेस ने धकेल दिया था, उस अंधेरे कुएं से भाजपा एम पी को बाहर निकाल पाई है। अब तेज विकास का समय आया है, सबके विकास का समय आया है। दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित, पिछड़े, आदिवासी, गरीब, नौजवान, किसान हर किसी को अब उसका हक मिलेगा।

गरीब की बहुत बड़ी चिंता होती है कि उसके पास अपना पक्का घर कब होगा? होता है कि नहीं होता है? जिंदगी में जिसके पास कोई अता पता नहीं है, उसको एक पता चाहिए। उसे अपना

एक घर चाहिए। वो अपने पक्के घर के लिए पाई-पाई जोड़ने की कोशिश करता था, पैसे बचाने की कोशिश करता था। लेकिन कांग्रेस के राज में चारों तरफ ऐसा भ्रष्टाचार था कि गरीबों के पक्के घर का सपना चकनाचूर हो जाता था। भाजपा सरकार ने देश के गरीब के सपनों को पूरा करने के लिए दिन-रात एक कर दिया है। बीते 10 वर्षों में चार करोड़ से अधिक गरीब परिवारों को हमने पक्का घर दिया है। 4 करोड़ बड़ा आंकड़ा होता है। दुनिया के लोग जब सुनते है ना? तो अचरज हो जाते हैं कि चार करोड़ घर.. कई देशों की तो इतनी आबादी नहीं होती है, जितने हमने घर बना दिए हैं? हम तो भक्ति में डूबे हुए लोग हैं। और इसलिए जब हम राम मंदिर बनाते हैं, तो उसी भक्ति से चार करोड़ गरीब के घर बनाते हैं, वो भी उसी भक्ति से बनाते है। हम लोकतंत्र का भव्य मन्दिर नया संसद भवन बनाते हैं तो हम 30,000 पंचायतों के भवन भी उसी संविधान के प्रति श्रद्धा के साथ बनाते हैं। भाजपा की डबल इंजन सरकार होने के कारण एमपी उन राज्यों में से एक है जहाँ गरीबों के लिए लाखों घर बनाए गए हैं और जिनको अभी अपना घर नहीं मिला है। ये मोदी की गारंटी है उनका घर भी बनेगा, उनको भी अपना घर मिलेगा। आप सब लोग निश्चिंत रहिएगा। मोदी ने आपके पक्के घर के लिए पहले ही पैसे का इंतजाम करके रखा है। जैसे ही भाजपा सरकार लौटेगी, पीएम आवास योजना का काम और तेज कर दिया जाएगा। **हर गरीब परिवार को पक्का घर मिलेगा, ये मोदी की गारंटी है। घर मतलब? सिर्फ चार दीवारी नहीं। जब मोदी घर देता है ना तो सारे सपनों को पूरा करने का आशियाना भी देता है। सिर्फ चारदीवारी नहीं बल्कि उसमें बिजली भी है, गैस कनेक्शन भी है, टॉयलेट भी है, नल भी और नल में जल भी है।**

पक्के घर के साथ-साथ मुफ्त राशन का भी पक्का इंतजाम। ये भी मोदी की गारंटी है। कोई घर ऐसा नहीं होगा, जहाँ कभी चूल्हा बुझेगा। कोरोना काल में मुफ्त राशन देने वाली योजना हमने शुरू की। अब मोदी ने निश्चय किया है, आपको मालूम है कितना बड़ा संकट था? मौत मंडरा रहा था। हर लोगों को लगता था कहीं घर में कोरोना घुस गया- गए काम से। बाहर निकलना मुश्किल था, तब मोदी ने तय किया था। मैं देश के किसी को भूखा नहीं रहने दूंगा, गरीब के घर का चूल्हा बुझने नहीं दूंगा। कोई मेरे बेटे-बेटी रात को भूखे सो ना जाए, रात भर मां तड़पती ना रहे, तब मोदी ने पक्का किया था। और इसलिए मुफ्त राशन देना शुरू किया था। और ये मुफ्त राशन की योजना ये दिसंबर महीने में पूरी हो रही है। लोगों ने मुझे सुझाव दिया, कि मोदी जी इस पर कुछ सोचना चाहिए। दिसंबर में इसको पूरा नहीं होने देना चाहिए। ये गरीबों के कल्याण का काम है, आगे बढ़ाना चाहिए। और मेरे लिए तो जनता-जनार्दन का आदर्श यही तो ईश्वर का आदेश होता है। और इसलिए मैंने संकल्प कर लिया है। मैंने पक्का मन बना लिया है कि 1 दिसंबर के बाद भी गरीबों की मुफ्त राशन की योजना 5 साल के लिए चलाऊंगा। 5 साल के लिए उसको बढ़ा दिया जाएगा। इससे राशन की चिंता कम हो जाएगी।

ऐसे लाखों परिवार, करोड़ों लोग मोदी को आशीर्वाद दे रहे हैं। लेकिन गरीब कल्याण के फैसले का कारण मोदी नहीं, बल्कि आप ही लोग हैं। क्योंकि आप लोग ने ही तो गरीब के बेटे को दिल्ली भेजा है। गरीब का बेटा गरीब के लिए तो काम करेगा, आपके लिए ही तो काम करेगा। आप ही तो मेरा परिवार है।

ये मोदी है जिसने 4 करोड़ घर बनाए, लेकिन खुद के लिए घर नहीं बनाया है।

गरीबों का घर हो। मुफ्त राशन हो। मुफ्त इलाज हो। आज इन पर भाजपा सरकार लाखों करोड़ रुपये खर्च कर रही है। यानी देश का पैसा गरीबों के काम आ रहा है, लेकिन जब कांग्रेस की सरकार थी। तब ये पैसा कहाँ जाता था? तब देश का लाखों करोड़ रुपया 2जी घोटाले में जाता था। कोयला घोटाले में जाता था। कॉमनवेल्थ घोटाले में जाता था, हेलिकॉप्टर घोटाले में जाता था। और मोदी ने ये सारे घोटाले बंद कर दिए। कांग्रेस के करप्शन काल में चुप बिचौलियों की मौज थी, उसको भी मोदी ने ताला लगा दिया। भाजपा सरकार ने सरकारी योजनाओं का पैसा गरीबों के बैंक खातों में सीधे ट्रांसफर करना शुरू किया। 10 साल में भाजपा सरकार ने 33 लाख करोड़ रुपये सीधे गरीबों के बैंक खातों में भेजे, और इसमें से एक रूपया भी इधर का उधर नहीं हो पाया। कांग्रेस किस तरह गरीबों का हक छीनती है उसका जीता जागता प्रमाण है फर्जी लाभार्थी घोटाला। जितनी मध्य प्रदेश की आबादी है, जितनी छत्तीसगढ़ की आबादी है, दोनों को मिला दें उतने ही फर्जी लाभार्थी कांग्रेस ने देश भर में कागजों में पैदा कर दिया। जिसका जन्म नहीं हुआ वो लाभार्थी बन जाता था। यानी करीब-करीब 10 करोड़ फर्जी नाम ऐसे थे जिनका असल में जन्म भी नहीं हुआ था। लेकिन कांग्रेस सरकार उनके नाम पर तिजोरी से पैसे निकालती थी और पैसे गायब हो जाते थे।

कांग्रेस के चेले-चपाटों के जेब में चले जाते थे, उनके दलालों के हवाले कर दिया जाता था।

इसलिए जब गरीब राशन की दुकान पर जाता था तो गरीब को पता चलता था कि उसका राशन तो कोई और ले गया। जब किसी जरूरतमंद बच्चों को स्कॉलरशिप चाहिए होती थी तो वो हक भी कोई और छीन लेता था। गैस सिलेंडर की सब्सिडी सरकार भेजती थी - लेकिन वो सीधी कांग्रेसी चेले-चपाटों की तिजोरी में जमा हो जाती। लूट का खेल ऐसे ही चल रहा था, लेकिन कांग्रेस का दुर्भाग्य? आपने एक चौकीदार को बिठा दिया।

14 में मोदी आ गया। कांग्रेस के फर्जी लाभार्थी घोटाले पर ब्रेक लगा दिया गया। ये जो 10 करोड़ फर्जी लाभार्थी कांग्रेस ने कागजों में पैदा कर रखे थे, उन्हें भी बाहर निकाल दिया। इस वजह से गरीबों के पौने तीन लाख करोड़ रुपये, याद करो 2.75 लाख करोड़ रुपए, जो सरकारी तिजोरी से चेले चपाटों के कांग्रेस के दलालों की तिजोरी में जाने थे, उसको मोदी ने बचा करके आपके हवाले कर दिया है। यह काम किया है दोस्तों। अब आप सोचिए, जब कांग्रेस को, उसके चेले चपाटों को उसके दलालों को इतना बड़ा नुकसान हो गया। भ्रष्टाचार के काली कमाई को मोदी ने रोक दिया तो मोदी का क्या करेंगे? क्या करेंगे? गाली देंगे कि नहीं देंगे? मोदी ने सारी दुकानें बंद करके रख दी है। और मोदी को कौन लाया? मोदी में हिम्मत कहाँ से आई? ये देश की जनता है जो मोदी को लाई है और देश की जनता के आशीर्वाद है, जिससे ताकत मिली है। इसलिए कांग्रेस अपनी सारी दुश्मनी मोदी के साथ ही देश की जनता से भी निकाल रही है। सिर्फ मुझे ही नहीं आपको भी परेशान करने पर लगी हुई है।

कभी मत भूलिए। कांग्रेस आई तबाही लाई। जहाँ-जहाँ कांग्रेस आई वहाँ-वहाँ तबाही लाई। अगर गलती से भी कांग्रेस आ गई फिर तो आपको सरकार से मिलने वाली सारी मदद ये बंद कर देंगे। कांग्रेस आई तो मुफ्त राशन मिलना बंद हो जाएगा, कांग्रेस आई तो मुफ्त इलाज मिलना बंद हो जाएगा। कांग्रेस आई तो किसान सम्मान निधि के पैसे मिलने बंद हो जाएंगे। यहाँ जो सरकार ने लाड़ली बहना, लाड़ली लक्ष्मी जैसी योजनाएं चलाई है, ये उनको भी नहीं छोड़ेंगे। इसलिए कांग्रेस के घोटालेवाजों को रोकना है। एमपी में कांग्रेस ने दो ऐसे नेता खड़े किए हैं? जो दशकों से मध्य प्रदेश कांग्रेस को चलाते हैं। अब आज क्या काम कर रहे हैं? दोनों कपड़ा फाड़ नेता बन गए हैं। एक दूसरे के कपड़े फाड़ रहे है। एक अपने समर्थकों को कहते उसके कपड़े फाड़, वो अपने चेलों को कहते हैं कि तुम दूसरों के कपड़े फाड़। यही नेता एमपी को दशकों तक अपने पांव में रखने वाले एमपी को वंचित रखने के लिए जिम्मेदार हैं? ये आपके बेहतर भविष्य का भरोसा कभी नहीं दे सकते। इनका तो अभी बस एक ही एजेंडा है। 3 दिसंबर को भाजपा से हारने के बाद मध्य प्रदेश कांग्रेस पर किसका बेटा कब्जा करेगा? इनकी लड़ाई ये है अपने बेटों को सेट करने में वो पूरे मध्य प्रदेश को अपसेट करने में लगे हुए हैं। जिनको सिर्फ अपने बेटों की ही चिंता है, वे एमपी के गरीब, वंचित, मध्यम वर्ग के बेटे बेटियों की चिंता ही नहीं कर सकते।

पूरे क्षेत्र का विकास हमें मिलकर तेज करना है। भाजपा सरकार पर्यटक उद्योग को नया विस्तार देने जा रही है। केंद्र की भाजपा सरकार रामायण सर्किट के बहुत बड़े प्रोजेक्ट पर काम कर रही है। चित्रकूट सहित एमपी के अनेक स्थान इस योजना का हिस्सा है। ये क्षेत्र सीमेंट कारखानों के लिए जाना जाता है। आने वाले समय में यहाँ दूसरे उद्योगों का विस्तार किया जाएगा। उद्योगों के लिए अच्छी कनेक्टिविटी और पर्याप्त बिजली की जरूरत है। आज भाजपा डबल इंजन सरकार इस पर बहुत जोर दे रही है। जबलपुर कट्टी सप्ताह सिंगरौली इन्वेस्टमेंट कॉरिडोर और एलिवेटेड कॉरिडोर के इस क्षेत्र में निवेश की नई संभावनाएं बनेंगी। लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, खेती से जुड़े उद्योग इनके लिए आने वाला समय बहुत उज्ज्वल होने वाला। यहां एमपी में छोटे, मझोले और लघु उद्योगों के लिए भाजपा सरकार ने सैकड़ों करोड़ रुपए की मदद की। भाजपा सरकार ने एमपी में लगभग ढाई सौ औद्योगिक क्षेत्र और 50 से अधिक एमएसएमई कंस्ट्रक्शन की स्वीकृति दी है। 3 दिसंबर को भाजपा की जीत के बाद इन सभी पर काम और तेज हो जाएगा। और ये मोदी की गारंटी है।

जो पहली बार वोट देने वाले बेटे बेटी है जो फर्स्ट टाइम वोटर हैं, युवा साथी हैं, इस बार नेतृत्व आप कीजिए, पूरे चुनाव को लीड आप कीजिए। पूरे देश का आशीर्वाद आपके साथ है। भाजपा अब एमपी को समृद्धि के शिखर की तरफ ले जाना चाहती है। ये आपका भविष्य चुनने का चुनाव है। अपना और अपने बच्चों का भविष्य बनाने के लिए। ये भाजपा कार्यकर्ताओं का परिश्रम है जिसने भाजपा को आज यहाँ इतनी मजबूत स्थिति में पहुंचाया। यह भाजपा कार्यकर्ताओं की मेहनत है जिससे एमपी के कांग्रेस की हालत खराब है। ▪

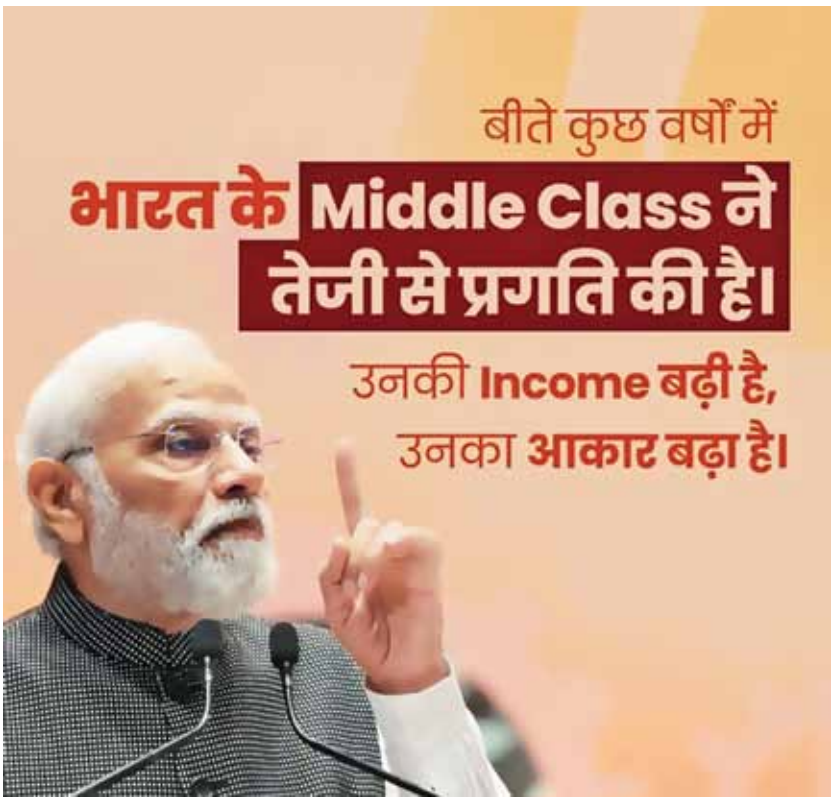

सीमाओं पर जवानों के कारण भारत सुरक्षित

जवानों ने हमेशा साबित किया है कि सीमा पर वो देश की सबसे सशक्त दीवार है।

भारत की सेनाओं और सुरक्षा बलों का राष्ट्र निर्माण में निरंतर योगदान रहा हैं। आजादी के तुरंत बाद इतने सारे युद्धों का मुकाबला करने वाले हमारे जाबांज हर मुश्किल में देश का दिल जीतने वाले हमारे योद्धा! चुनौतियों के जबड़े से जीत को छीनकर लाने वाले हमारे वीर बेटे-बेटियां!

भूकंप जैसी आपदाओं में हर चुनौती से टकराने वाले जवान! सुनामी जैसे हालातों में समंदर से लड़कर जिंदगियाँ बचाने वाले जाबांज! अंतर्राष्ट्रीय शांति मिशन में भारत का वैश्विक कद बढ़ाने वाली सेनाएं और सुरक्षाबल! ऐसा कौन सा संकट है जिसका समाधान हमारे वीरों ने नहीं दिया है! ऐसा कौन सा क्षेत्र है, जहां उन्होंने देश का सम्मान नहीं बढ़ाया है।

कहा जाता है कि पर्व वहीं होता है, जहां परिवार होता है। पर्व के दिन अपने परिवार से दूर सीमा पर तैनात रहना, ये अपने आप में कर्तव्यनिष्ठा की पराकाष्ठा है। परिवार की याद हर किसी को आती है लेकिन आपके चेहरों पर इस कोने में भी उदासी नजर नहीं आ रही है। आपके उत्साह में कमी का नामोनिशान नहीं है। उत्साह से भरे हुए हैं, ऊर्जा से भरे हुए हैं। क्योंकि, आप जानते हैं कि 140 करोड़ देशवासियों का ये बड़ा परिवार भी आपका अपना ही है। और देश इसलिए आपका कृतज्ञ है, ऋणी है। इसलिए दीपावली पर हर घर में एक दीया आपकी सलामती के लिए भी जलता है। इसलिए हर पूजा में एक प्रार्थना आप जैसे वीरों के लिए भी होती है।

कहा भी गया है-

अवध तहाँ जहं राम निवासू!

यानी, जहां राम हैं, वहीं अयोध्या है। जहां भारतीय सेना है, जहां देश के सुरक्षाबल के जवान तैनात हैं, वो स्थान किसी भी मंदिर से कम नहीं है। जहां आप हैं, वहीं त्यौहार है। और ये काम शायद 30-35 साल से भी ज्यादा समय हो गया होगा। कोई दिवाली ऐसी नहीं है, जो आप सबके बीच जाकर ना मनाई हो, 30-35 साल से। जब PM नहीं था, CM नहीं था, तब भी एक

गर्व से भरे भारत की संतान के नाते दिवाली पर किसी ना किसी बॉर्डर पर जरूर जाता था। आप लोगों के साथ मिठाइयों का दौर तब भी चलता था और मेस का खाना भी खाता था और इस जगह का नाम भी तो शुगर प्वाइंट है। आपके साथ थोड़ी सी मिठाई खाकर, मेरी दीपावली भी और मधुर हो गई है।

इस धरती ने इतिहास के पन्नों में पराक्रम की स्याही से अपनी ख्याति खुद लिखी है। आपने यहाँ की वीरता की परिपाटी को अटल, अमर और अक्षुण्ण बनाया है। आपने साबित किया है कि-

आसन्न मृत्यु के सीने पर,
जो सिंहनाद करते हैं।
मर जाता है काल स्वयं,
पर वे वीर नहीं मरते हैं।

हमारे जवानों के पास हमेशा इस वीर वसुंधरा की विरासत रही है, सीने में वो आग रही है जिसने हमेशा पराक्रम के प्रतिमान गढ़े हैं। प्राणों को हथेली पर लेकर हमेशा हमारे जवान सबसे आगे चले हैं। हमारे जवानों ने हमेशा साबित किया है कि सीमा पर वो देश की सबसे सशक्त दीवार है।

भारत की सेनाओं और सुरक्षा बलों का राष्ट्र निर्माण में निरंतर योगदान रहा हैं। आजादी के तुरंत बाद इतने सारे युद्धों का मुकाबला करने वाले हमारे जाबांज हर मुश्किल में देश का दिल जीतने वाले हमारे योद्धा! चुनौतियों के जबड़े से जीत को छीनकर लाने वाले हमारे वीर बेटे-बेटियां! भूकंप जैसी आपदाओं में हर चुनौती से टकराने वाले जवान! सुनामी जैसे हालातों में समंदर से लड़कर जिंदगियाँ बचाने वाले जाबांज! अंतर्राष्ट्रीय शांति मिशन में भारत का वैश्विक कद बढ़ाने वाली सेनाएं और सुरक्षाबल! ऐसा कौन सा संकट है जिसका समाधान हमारे वीरों ने नहीं दिया है! ऐसा कौन सा क्षेत्र है, जहां उन्होंने देश का सम्मान नहीं बढ़ाया है। इसी साल मैंने यूएन में पीसकीपर्स के लिए मेमोरियल हॉल का प्रस्ताव भी रखा था, और जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। ये हमारी सेनाओं के, सैनिकों के बलिदान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिला बहुत बड़ा सम्मान है। ये वैश्विक शांति के लिए उनके योगदान को अमर बनाएगा।

संकट के समय में हमारी सेना और सुरक्षाबल, देवदूत बनकर न केवल भारतीयों को, बल्कि विदेशी नागरिकों को भी निकाल कर लाते हैं। मुझे याद है, जब सूडान से भारतवासियों को निकालना था, तो कितने सारे खतरे थे। लेकिन भारत के जांबाजों ने अपना मिशन कोई नुकसान हुए बिना कामयाबी के साथ पूरा किया। तुर्किए के लोग ये आज भी याद करते हैं कि जब वहां भयंकर भूकंप आया तो किस तरह हमारे सुरक्षाबलों ने अपने जीवन की परवाह ना करते हुए वहां दूसरों का जीवन बचाया। दुनिया में कहीं पर भी भारतीय अगर संकट में है, तो भारतीय सेनाएं, हमारे सुरक्षाबल, उन्हें बचाने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। भारत की सेनाएं और सुरक्षाबल, संग्राम से लेकर सेवा तक, हर स्वरूप में सबसे आगे रहते हैं। और इसीलिए, हमें गर्व है हमारी सेनाओं पर। हमें गर्व है, हमारे सुरक्षाबलों पर, हमें गर्व है हमारे जवानों पर। हमें गर्व है आप सभी पर।

आज दुनिया में जिस तरह के हालात हैं, उसमें भारत से अपेक्षाएं लगातार बढ़ रही हैं। ऐसे अहम समय में ये बहुत जरूरी है कि भारत की सीमाएं सुरक्षित रहें, देश में शांति का वातावरण बना रहे। और इसमें आपकी बहुत बड़ी भूमिका है। भारत तब तक सुरक्षित है, जब तक इसकी सीमाओं पर आप हिमालय की तरह अटल और अडिग मेरे जांबाज साथी खड़े हैं। आपकी सेवा के कारण ही भारत भूमि सुरक्षित है और समृद्धि के मार्ग पर प्रशस्त भी है। पिछली दिवाली से इस दिवाली का जो ये कालखंड रहा है, जो एक साल गया है वो विशेष तौर पर भारत के लिए अभूतपूर्व उपलब्धियों से भरा हुआ है। अमृतकाल का एक वर्ष भारत की सुरक्षा और समृद्धि का प्रतीक वर्ष बना है। बीते एक वर्ष में, भारत ने चंद्रमा पर वहां अपना यान उतारा, जहां कोई देश पहुंच नहीं पाया था। इसके कुछ दिन बाद ही भारत ने आदित्य एल वन की भी सफल लॉन्चिंग की। हमने गगनयान से जुड़ा एक अत्यंत महत्वपूर्ण परीक्षण भी सफलता से पूरा किया। इसी एक साल में भारत का पहला स्वदेशी एयरक्राफ्ट करियर, INS विक्रांत नौसेना में शामिल हुआ। इसी एक साल में भारत ने तुमकुरू में एशिया की सबसे बड़ी Helicopter Factory की शुरुआत की है। इसी एक साल में बॉर्डर इलाकों के विकास के लिए वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम का शुभारंभ हुआ। आपने देखा है कि खेल की दुनिया में भी भारत ने अपना परचम लहराया। सेना और सुरक्षाबल के कितने ही जवानों ने भी मेडल जीतकर लोगों का दिल जीत लिया है। बीते एक साल में एशियन और पैरा गेम्स में हमारे खिलाड़ियों ने मेडल्स की सेंचुरी बनाई। अंडर 19 क्रिकेट वर्ल्ड कप में हमारी महिला खिलाड़ियों ने विश्वकप जीता है। 40 वर्षों बाद भारत ने IOC की बैठक का सफल आयोजन किया है।

पिछली दिवाली से इस दिवाली तक का कालखंड भारतीय लोकतंत्र और भारत की वैश्विक उपलब्धियों का भी वर्ष रहा। इस एक साल में भारत ने संसद की नई इमारत में प्रवेश किया। संसद की नई इमारत में, पहले सत्र में ही नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित हुआ। इसी एक साल में दिल्ली में जी-20 का सफलतम आयोजन हुआ। हमने New Delhi Declaration जैसे महत्वपूर्ण समझौते किए। इसी कालखंड में भारत, रियल टाइम पेमेंट्स के मामले में दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश बना। इसी कालखंड में भारत का एक्सपोर्ट्स 400 बिलियन डॉलर को पार कर गया। इसी समय में ग्लोबल जीडीपी में भारत ने 5वां स्थान हासिल किया। इसी समय में हम 5G

यूजर बेस के मामले में यूरोप से भी आगे निकल गए। बीता एक साल राष्ट्र निर्माण का महत्वपूर्ण वर्ष बना है। इस साल देश के इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट में हमने कई उपलब्धियां हासिल की हैं। आज भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा रोड नेटवर्क वाला देश बन गया है। इसी कालखंड में हमने दुनिया की सबसे लंबी रिवर क्रूज सेवा की शुरुआत की। देश को अपनी पहली रैपिड रेल सेवा नमो भारत का उपहार मिला। भारत के 34 नए रूट्स पर वंदे भारत ट्रेनें रफ्तार भरने लगी हैं। हमने इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकनॉमिक कॉरिडोर का श्री गणेश किया। दिल्ली में दो वर्ल्ड क्लास कन्वेंशन सेंटर यशोभूमि और भारत मंडपम का उद्घाटन हुआ। QS World Rankings में भारत एशिया के सबसे अधिक विश्वविद्यालयों वाला देश बन गया है। इसी दौरान कच्छ के धोरदो सीमावर्ती गांव, रेगिस्तान का छोटा सा गांव धोरदो, उस गांव को संयुक्त राष्ट्र से बेस्ट टूरिज्म विलेज का अवॉर्ड मिला है। हमारे शांति निकेतन और होयसाला मंदिर यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज लिस्ट में शामिल हुए।

जब तक आप सीमाओं पर सजग खड़े हैं, देश बेहतर भविष्य के लिए जी-जान से जुटा हुआ है। आज अगर भारत अपनी पूरी ताकत से विकास की अनंत ऊंचाइयों को छू रहा है, तो उसका श्रेय आपके सामर्थ्य को, आपके संकल्पों को, और आपके बलिदानों को भी जाता है। भारत ने सदियों के संघर्षों को झेला है, शून्य से संभावनाओं का सृजन किया है। 21वीं सदी का हमारा भारत अब आत्मनिर्भर भारत के रास्ते पर कदम बढ़ा चुका है। अब संकल्प भी हमारे होंगे, संसाधन भी हमारे होंगे। अब हौसले भी हमारे होंगे, हथियार भी हमारे होंगे। दम भी हमारा होगा और कदम भी हमारे होंगे। हर श्वास में हमारे विश्वास भी अपार होगा। खिलाड़ी हमारा खेल भी हमारा जय विजय ओर अजेय है प्रण हमारा, ऊँचे पर्वत हों या रेगिस्तान समंदर अपार या मैदान विशाल, गगन में लहराता ये तिरंगा सदा हमारा। अमृतकाल की इस बेला में, वक्त भी हमारा होगा, सपने सिर्फ सपने नहीं होंगे, सिद्धि की एक गाथा लिखेंगे, पर्वत से भी ऊपर संकल्प होगा। पराक्रम ही होगा विकल्प होगा, गति और गरिमा का जग में सम्मान होगा, प्रचंड सफलताओं के साथ, भारत का हर तरफ जयगान होगा। क्योंकि, अपने बल विक्रम से जो संग्राम समर लड़ते हैं। सामर्थ्य हाथ में रखने वाले, भाग्य स्वयं गढ़ते हैं। भारत की सेनाओं और सुरक्षाबलों का सामर्थ्य लगातार बढ़ रहा है। डिफेंस सेक्टर में भारत तेजी से एक बड़े ग्लोबल प्लेयर के रूप में उभर रहा है। एक समय था, जब हम अपनी छोटी-छोटी जरूरतों के लिए दूसरों पर निर्भर होते थे। लेकिन, आज हम अपने साथ-साथ अपने मित्र देशों की रक्षा जरूरतों को भी पूरा करने की तरफ बढ़ रहे हैं। जब मैं 2016 में इसी क्षेत्र में दिवाली मनाने आया था, तब से लेकर आज तक भारत का डिफेंस एक्सपोर्ट 8 गुना से ज्यादा बढ़ चुका है। एक लाख करोड़ रुपए से ज्यादा का डिफेंस प्रॉडक्शन आज देश में हो रहा है और ये अपने आप में एक रिकॉर्ड है।

हम जल्द ही ऐसे मुकाम पर खड़े होंगे, जहां हमें जरूरत के समय दूसरे देशों की ओर नहीं देखना होगा। इससे हमारी सेनाओं का, हमारे सुरक्षाबलों का मनोबल बढ़ा है। हमारी सेनाओं की, सुरक्षाबलों की ताकत बढ़ी है। हाइटेक टेक्नोलॉजी का इंटिग्रेशन हो, या CDS जैसी जरूरी व्यवस्था, भारत की सेना अब लगातार धीरे-धीरे आधुनिकता की तरफ आगे बढ़ रही है। हां, टेक्नोलॉजी के इस बढ़ते प्रसार के बीच, मैं आपको ये भी कहूंगा कि हमें टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल में मानवीय सूझ-बूझ को हमेशा सर्वोपरी रखना है। हमें ये सुनिश्चित करना होगा कि टेक्नोलॉजी कभी मानवीय संवेदनाओं पर हावी ना हो। आज स्वदेशी संसाधन और टॉप क्लास बार्डर इनफ्रास्ट्रक्चर भी हमारी ताकत बन रहे हैं। और मुझे खुशी है कि इसमें नारी शक्ति भी बड़ी भूमिका निभा रही है। बीते वर्षों में इंडियन आर्मी में 500 से ज्यादा महिला ऑफिसर्स को परमानेंट कमीशन दिया गया है। आज महिला पायलट्स राफेल जैसे फाइटर प्लेन उड़ा रही हैं। Warships पर भी पहली बार वुमेन ऑफिसर्स की तैनाती हो रही है। सशक्त, समर्थ और संसाधन सम्पन्न भारतीय सेनाएं, दुनिया में आधुनिकता के नए प्रतिमान स्थापित करेंगी।

सरकार आपकी जरूरतों का भी, आपके परिवार का भी पूरा ध्यान रख रही है। हमारे सैनिकों के लिए अब ऐसी ड्रेसेस बनी हैं, जो अमानवीय तापमान को भी सहन कर सकती है। आज देश में ऐसे ड्रोन्स बन रहे हैं, जो जवानों की शक्ति भी बनेंगे और उनका जीवन भी बचाएंगे। वन रैंक वन पेंशन- OROP के तहत भी अब तक 90 हजार करोड़ रुपए दिए जा चुके हैं।

देश जानता है कि आपका हर कदम इतिहास की दिशा निर्धारित करता है। आप जैसे वीरों के लिए ही कहा गया है-

शूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं। ▪

ब्रज "लाल जी" और "लाड़ली जी" के प्रेम का साक्षात् अवतार है

विश्व की सभी तीर्थ यात्राओं का जो लाभ होता है, उससे भी ज्यादा लाभ अकेले मथुरा और ब्रज की यात्रा से ही मिल जाता है।

ब्रज रज महोत्सव और संत मीराबाई जी की 525वीं जन्म जयंती समारोह के जरिए मुझे एक बार फिर ब्रज में आप सबके बीच आने का अवसर मिला है। मैं दिव्य ब्रज के स्वामी भगवान कृष्ण और राधा रानी को पूर्ण समर्पण भाव से प्रणाम करता हूँ। मैं मीराबाई जी के चरणों में भी नमन करते हुए ब्रज के सभी संतों को प्रणाम करता हूँ।

मेरा सौभाग्य है कि मुझे ब्रज के दर्शन का अवसर मिला है। क्योंकि, यहाँ वही आता है जिसे श्रीकृष्ण और श्रीजी बुलाते हैं। ये कोई साधारण धरती नहीं है। ये ब्रज तो हमारे 'श्यामा-श्याम जू' का अपना धाम है। ब्रज 'लाल जी' और 'लाड़ली जी' के प्रेम का साक्षात् अवतार है। ये ब्रज ही है, जिसकी रज भी पूरे संसार में पूजनीय है। ब्रज की रज-रज में राधा-रानी रमी हुई है, यहाँ के कण-कण में कृष्ण समाये हुये हैं। और इसीलिए, हमारे ग्रन्थों में कहा गया है-

सप्त द्वीपेषुयत् तीर्थ,
भ्रमणात् चयत् फलम्।
प्राप्यते च अधिकं तस्मात्,
मथुरा भ्रमणीयते॥

अर्थात्, विश्व की सभी तीर्थ यात्राओं का जो लाभ होता है, उससे भी ज्यादा लाभ अकेले मथुरा और ब्रज की यात्रा से ही मिल जाता है।

ब्रज रज महोत्सव और संत मीराबाई जी की 525वीं जन्म जयंती समारोह के जरिए मुझे एक बार फिर ब्रज में आप सबके बीच आने का अवसर मिला है। मैं दिव्य ब्रज के स्वामी भगवान कृष्ण और राधा रानी को पूर्ण समर्पण भाव से प्रणाम करता हूँ। मैं मीराबाई जी के चरणों में भी नमन करते हुए ब्रज के सभी संतों को प्रणाम करता हूँ।

मेरे लिए इस समारोह में आना एक और वजह से भी विशेष है। भगवान कृष्ण से लेकर मीराबाई तक, ब्रज का गुजरात से एक अलग ही रिश्ता रहा है। ये मथुरा के कान्हा, गुजरात जाकर ही द्वारिकाधीश बने थे। और राजस्थान से आकर मथुरा-वृन्दावन में प्रेम की धारा बहाने वाली संत मीराबाई जी ने भी अपना अंतिम जीवन द्वारिका में ही बिताया था। मीरा की भक्ति बिना वृंदावन के पूरी नहीं होती है। संत मीराबाई ने वृन्दावन भक्ति से अभिभूत होकर कहा था-

आली री मोहे लागे वृन्दावन नीको...
घर-घर तुलसी ठाकुर पूजा,
दर्शन गोविन्दजी को....

इसलिए, जब गुजरात के लोगों को यूपी और राजस्थान में फैले ब्रज में आने का सौभाग्य मिलता है, तो हम इसे द्वारिकाधीश की ही कृपा मानते हैं। और मुझे तो मां गंगा ने बुलाया और फिर भगवान द्वारिकाधीश की कृपा से 2014 से ही आपके बीच में आकर के बस गया, आपकी सेवा में लीन हो गया।

मीराबाई का 525वां जन्मोत्सव केवल एक संत का जन्मोत्सव नहीं है। ये भारत की एक सम्पूर्ण संस्कृति का उत्सव है। ये भारत की प्रेम-परंपरा का उत्सव है। ये उत्सव नर और नारायण में, जीव और शिव में, भक्त और भगवान में, अभेद मानने वाले विचार का भी उत्सव है। जिसे कोई अद्वैत कहता है। इस महोत्सव में मुझे संत मीराबाई के नाम पर स्मारक सिक्का और टिकट जारी करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मीराबाई राजस्थान की उस वीरभूमि में जन्मी थीं, जिसने देश के सम्मान और संस्कृति के लिए असीम बलिदान दिये हैं। 84 कोस का ये ब्रजमण्डल खुद भी यूपी और राजस्थान को जोड़कर बनता है। मीराबाई ने भक्ति और आध्यात्म की अमृतधारा बहाकर भारत की चेतना को सींचा था, मीराबाई ने भक्ति, समर्पण और श्रद्धा को बहुत ही आसान भाषा, सहज रूप से समझाया था-

मीराँ के प्रभु गिरधर नागर,
सहज मिले अबिनासी, रे ॥

उनकी श्रद्धा में आयोजित ये कार्यक्रम हमें भारत की भक्ति के साथ-साथ भारत के शौर्य और बलिदान की भी याद दिलाता है। मीराबाई के परिवार ने, और राजस्थान ने उस समय अपना सब कुछ झोंक दिया था। हमारी आस्था

के केन्द्रों की रक्षा के लिए राजस्थान और देश के लोग दीवार बनकर खड़े रहे, ताकि भारत की आत्मा को, भारत की चेतना को सुरक्षित रखा जा सके। इसलिए, ये समारोह हमें मीराबाई की प्रेम-परंपरा के साथ-साथ उस पराक्रम की परंपरा की भी याद दिलाता है। और यही तो भारत की पहचान है। हम एक ही कृष्ण में, बांसुरी बजाते कान्हा को भी देखते हैं, और सुदर्शन चक्रधारी वासुदेव के भी दर्शन करते हैं।

हमारा भारत हमेशा से नारी शक्ति का पूजन करने वाला देश रहा है। ये बात ब्रजवासियों से बेहतर और कौन समझ सकता है। यहाँ कन्हैया के नगर में भी 'लाड़ली सरकार' की ही पहले चलती है। यहाँ सम्बोधन, संवाद, सम्मान, सब कुछ राधे-राधे कहकर ही होता है। कृष्ण के पहले भी जब राधा लगता है, तब उनका नाम पूरा होता है। इसीलिए, हमारे देश में महिलाओं ने हमेशा जिम्मेदारियाँ भी उठाई हैं, और समाज का लगातार मार्गदर्शन भी किया है। मीराबाई जी इसका भी एक प्रखर उदाहरण रही है। मीराबाई जी ने कहा था-

जेताई दीसै धरनि गगन विच,
तेता सब उठ जासी।।
इस देहि का गरब ना करणा,
माटी में मिल जासी।।

यानी तुझे इस धरती और आसमान के बीच जो कुछ दिखाई दे रहा है। इसका अंत एक दिन निश्चित है। इस बात में कितना बड़ा गंभीर दर्शन छिपा है, ये हम सभी समझ सकते हैं।

संत मीराबाई जी ने उस कालखंड में समाज को वो राह भी दिखाई, जिसकी उस समय सबसे ज्यादा जरूरत थी। भारत के ऐसे मुश्किल समय में मीराबाई जैसी संत ने दिखाया कि नारी का आत्मबल, पूरे संसार को दिशा देने का सामर्थ्य रखता है। उन्होंने संत रविदास को अपना गुरु माना, और खुलकर कहा भी -

''गुरु मिलिआ संत गुरु रविदास जी, दीन्ही ज्ञान की गुटकी''। इसीलिए, मीराबाई मध्यकाल की केवल एक महान महिला ही नहीं थीं बल्कि वो महानतम समाज सुधारकों और पथप्रदर्शकों में से भी एक रहीं।

मीराबाई और उनके पद वो प्रकाश हैं, जो हर युग में, हर काल में उतने ही प्रासंगिक हैं। अगर हम आज वर्तमान काल की चुनौतियों को देखेंगे, तो मीराबाई हमें रूढ़ियों से मुक्त होकर अपने मूल्यों से जुड़े रहने की सीख देती हैं। मीराबाई कहती हैं-

मीराँ के प्रभु सदा सहाई,
राखे विघन हटाय।
भजन भाव में मस्त डोलती,
गिरधर पै बलि जाय?

उनकी भक्ति में सरलता है पर दृढ़ता भी है। वो किसी भी विघ्न से नहीं डरती हैं। वो सिर्फ अपना काम लगातार करने की प्रेरणा देती हैं।

इस अवसर पर मैं भारत भूमि की एक और विशेषता का जरूर जिक्र करना चाहता हूं। ये भारत भूमि की अद्भुत क्षमता है कि जब-जब उसकी चेतना पर प्रहार हुआ, जब-जब उसकी चेतना कमजोर पड़ी, देश के किसी ना किसी कोने में एक जागृत ऊर्जा पुंज ने भारत को दिशा दिखाने के लिए संकल्प भी लिया, पुरूषार्थ भी किया। और इस पुण्य कार्य के लिए कोई योद्धा बना तो कोई संत बना। भक्ति काल के हमारे संत, इसका अप्रतिम उदाहरण हैं। उन्होंने वैराग्य और विरक्ति के प्रतिमान गढ़े, और साथ ही हमारे भारत को भी गढ़ा। आप पूरे भारत को देखिए, दक्षिण में आलवार संत, और नायनार संत थे, रामानुजाचार्य जैसे आचार्य थे! उत्तर भारत में तुलसीदास, कबीरदास, रविदास, और सूरदास जैसे संत हुये! पंजाब में गुरु नानकदेव हुए। पूरब में, बंगाल के चैतन्य महाप्रभु जैसे संतों का प्रकाश तो पूरी दुनिया में फैल रहा है। पश्चिम में भी, गुजरात में नरसी मेहता, महाराष्ट्र में तुकाराम और नामदेव जैसे संत हुये! सबकी अलग-अलग भाषा, अलग-अलग बोली, अलग-अलग रीति-रिवाज और परम्पराएँ थीं। लेकिन, फिर भी सबका संदेश एक ही था, उद्देश्य एक ही था। देश के अलग-अलग क्षेत्रों से भक्ति और ज्ञान की जो धाराएँ निकलीं, उन्होंने एक साथ मिलकर पूरे भारत को जोड़ दिया।

मथुरा जैसा पवित्र स्थान तो, भक्ति आंदोलन की इन विभिन्न धाराओं का संगम स्थान रहा है। मलूकदास, चैतन्य महाप्रभु, महाप्रभु वल्लभाचार्य, स्वामी हरिदास, स्वामी हित हरिवंश प्रभु जैसे कितने ही संत यहाँ आए! उन्होंने भारतीय समाज में नई चेतना फूंकी, नए प्राण फूंके! ये भक्ति यज्ञ आज भी भगवान श्री कृष्ण के आशीर्वाद से निरंतर जारी है।

ब्रज के बारे में हमारे संतों ने कहा है-

वृन्दावन सौं वन नहीं,
नन्दगाँव सौं गाँव।
बंशीवट सौं वट नहीं,
कृष्ण नाम सौं नाँव।।

अर्थात्, वृन्दावन जैसा पवित्र वन कहीं और नहीं है। नन्दगाँव जैसा पवित्र गाँव नहीं है।.... यहाँ के बंशीवट जैसा वट नहीं है....और कृष्ण के नाम जैसा कल्याणकारी नाम नहीं है। ये ब्रज क्षेत्र भक्ति और प्रेम की भूमि तो है ही, ये हमारे साहित्य, संगीत, संस्कृति और सभ्यता का भी केंद्र रहा है। इस क्षेत्र ने मुश्किल से मुश्किल समय में भी देश को संभाले रखा। लेकिन जब देश आजाद हुआ, तो जो महत्व इस पवित्र तीर्थ को मिलना चाहिए था, दुर्भाग्य से वो नहीं हुआ। जो लोग भारत को उसके अतीत से काटना चाहते थे, जो लोग भारत की संस्कृति से, उसकी आध्यात्मिक पहचान से विरक्त थे, वो आजादी के बाद भी गुलामी की मानसिकता नहीं त्याग पाए, उन्होंने ब्रज भूमि को भी विकास से वंचित रखा।

आज आजादी के अमृतकाल में पहली बार देश गुलामी की उस मानसिकता से बाहर आया है। हमने लाल किले से 'पंच प्राणों' का संकल्प लिया है। हम अपनी विरासत पर गर्व की भावना के साथ आगे बढ़ रहे हैं। आज काशी में विश्वनाथ धाम भव्य रूप में हमारे सामने है। आज उज्जैन के महाकाल महालोक में दिव्यता के साथ-साथ भव्यता के दर्शन हो रहे हैं। आज केदारघाटी में केदारनाथ जी के दर्शन करके लाखों लोग धन्य हो रहे हैं। और अब तो, अयोध्या में भगवान श्रीराम के मंदिर के लोकार्पण की तिथि भी आ गई है। मथुरा और ब्रज भी, विकास की इस दौड़ में अब पीछे नहीं रहेंगे। वो दिन दूर नहीं जब ब्रज क्षेत्र में भी भगवान के दर्शन और भी दिव्यता के साथ होंगे। ब्रज के विकास के लिए 'उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद' की स्थापना की गई है। ये परिषद श्रद्धालुओं की सुविधा और तीर्थ के विकास के लिए बहुत से काम कर रही है। 'ब्रज रज महोत्सव' जैसे कार्यक्रम विकास की इस धारा में अपना प्रकाश भी बिखेर रहे हैं।

ये पूरा क्षेत्र कान्हा की लीलाओं से जुड़ा है। मथुरा, वृंदावन, भरतपुर, करौली, आगरा, फिरोजाबाद, कासगंज, पलवल, बल्लभगढ़ जैसे इलाके अलग-अलग राज्य में आते हैं। भारत सरकार का प्रयास है कि अलग-अलग राज्य सरकारों के साथ मिलकर हम इस पूरे इलाके का विकास करें। ब्रज क्षेत्र में, देश में हो रहे ये बदलाव, ये विकास केवल व्यवस्था का बदलाव नहीं है। ये हमारे राष्ट्र के बदलते स्वरूप का, उसकी पुनर्जागृत होती चेतना का प्रतीक है। और महाभारत प्रमाण है कि जहां भारत का पुनरोत्थान होता है, वहाँ उसके पीछे श्रीकृष्ण का आशीर्वाद जरूर होता है। उसी आशीर्वाद की ताकत से हम अपने संकल्पों को पूरा करेंगे, और विकसित भारत का निर्माण भी करेंगे। ▪

परिवर्तनों का नेतृत्व 140 करोड़ जनता कर रही है

Vocal For Local अभियान पूरे देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती देता है।

- आतंकियों ने मुंबई समेत पूरे देश को थर्रा कर रख दिया था, लेकिन ये भारत का सामर्थ्य है कि हम उस हमले से उबरे और अब पूरे हौसले के साथ आतंक को कुचल भी रहे हैं।
- 26 नवंबर का दिन बहुत महत्वपूर्ण है। इसी दिन 1949 में संविधान सभा ने भारत के संविधान को अंगीकार किया था।
- राष्ट्र निर्माण में 'सबका साथ' होता है, तभी 'सबका विकास' होता है।
- 'वोकल फॉर लोकल' की सफलता- विकसित भारत के द्वार खोल रही है।
- लगातार दूसरा साल है जब दीपावली पर कैश देकर सामान खरीदने का प्रचलन धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। लोग ज्यादा से ज्यादा डिजिटल पेमेंट कर रहे हैं।
- 10 वर्ष पहले के आंकड़ों से तुलना में अब हमारे पेटेंट को दस गुना अधिक दर पर मंजूरी मिल रही है।
- 21वीं सदी की बहुत बड़ी चुनौतियों में से एक है - 'जल सुरक्षा'। जल का संरक्षण करना, जीवन को बचाने से कम नहीं हैं।

राष्ट्र निर्माण की कमान जब जनता-जनार्दन संभाल लेती है, तो दुनिया की कोई भी ताकत उस देश को आगे बढ़ने से नहीं रोक पाती। आज भारत में भी स्पष्ट दिख रहा है कि कई परिवर्तनों का नेतृत्व देश की 140 करोड़ जनता ही कर रही है।

इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण हमने त्योहारों के इस समय में देखा है। पिछले महीने "मन की बात' में Vocal For Local यानी स्थानीय उत्पादों को खरीदने पर जोर था। बीते कुछ दिनों के भीतर ही दिवाली, भैया दूज और छठ पर देश में चार लाख करोड़ से ज्यादा का कारोबार हुआ है।

26 नवंबर हम कभी भी भूल नहीं सकते हैं। 26 नवंबर के ही दिन देश पर सबसे जघन्य आतंकी हमला हुआ था। आतंकियों ने, मुंबई को, पूरे देश को, थर्रा कर रख दिया था। लेकिन ये भारत का सामर्थ्य है कि हम उस हमले से उबरे और अब पूरे हौसले के साथ आतंक को कुचल भी रहे है।

26 नवंबर का दिन एक और वजह से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। 1949 में 26 नवंबर को संविधान सभा ने भारत के संविधान को अंगीकार किया था। 2015 में हम बाबा साहेब आंबेडकर की 125वीं जन्मजयन्ती मना रहे थे, उसी समय ये विचार आया था कि 26 नवंबर को 'संविधान दिवस' के तौर पर मनाया जाए। और तब से हर साल इस दिन को हम संविधान दिवस के रूप में मनाते आ रहे हैं। हम सब मिलकर के, नागरिकों के कर्तव्य को प्राथमिकता देते हुए, विकसित भारत के संकल्प को जरुर पूरा करेंगे।

संविधान के निर्माण में 2 वर्ष 11 महीने 18 दिन का समय लगा था। श्री सच्चिदानंद सिन्हा जी संविधान सभा के सबसे बुजुर्ग सदस्य थे। 60 से ज्यादा देशों के संविधान का अध्ययन और लंबी चर्चा के बाद हमारे संविधान का Draft तैयार हुआ था। Draft तैयार होने के बाद उसे अंतिम रूप देने से पहले उसमें 2 हजार से अधिक संशोधन फिर किए गए थे। 1950 में संविधान लागू होने के बाद भी अब तक कुल 106 बार संविधान संशोधन किया जा चुका है। समय, परिस्थिति, देश की आवश्यकता को देखते हुए

अलग-अलग सरकारों ने अलग-अलग समय पर संशोधन किए। लेकिन ये भी दुर्भाग्य रहा कि संविधान का पहला संशोधन, Freedom of Speech और Freedom of Expression के अधिकारों में कटौती करने के लिए हुआ था। वहीं संविधान के 44 वें संशोधन के माध्यम से, Emergency के दौरान की गई गलतियों को सुधारा गया था।

यह भी बहुत प्रेरक है कि संविधान सभा के कुछ सदस्य मनोनीत किए गए थे, जिनमें से 15 महिलाएं थी। ऐसी ही एक सदस्य हंसा मेहता जी ने महिलाओं के अधिकार और न्याय की आवाज बुलंद की थी। उस दौर में भारत उन कुछ देशों में था जहां महिलाओं को संविधान से Voting का अधिकार दिया। राष्ट्र निर्माण में जब सबका साथ होता है, तभी सबका विकास भी हो पाता है। मुझे संतोष है कि संविधान निर्माताओं के उसी दूरदृष्टि का पालन करते हुए, अब भारत की संसद ने 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' को पास किया है। 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' हमारे लोकतंत्र की संकल्प शक्ति का उदाहरण है। ये विकसित भारत के हमारे संकल्प को गति देने के लिए भी सहायक होगा।

राष्ट्र निर्माण की कमान जब जनता-जनार्दन संभाल लेती है, तो दुनिया की कोई भी ताकत उस देश को आगे बढ़ने से नहीं रोक पाती। आज भारत में भी स्पष्ट दिख रहा है कि कई परिवर्तनों का नेतृत्व देश की 140 करोड़ जनता ही कर रही है। इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण हमने त्योहारों के इस समय में देखा है। पिछले महीने 'मन की बात' में Vocal For Local यानी स्थानीय उत्पादों को खरीदने पर जोर था। बीते कुछ दिनों के भीतर ही दिवाली, भैया दूज और छठ पर देश में चार लाख करोड़ से ज्यादा का कारोबार हुआ है। और इस दौरान भारत में बने उत्पादों को खरीदने का जबरदस्त उत्साह लोगों में देखा गया। अब तो घर के बच्चे भी दुकान पर कुछ खरीदते समय यह देखने लगे हैं कि उसमें Made In India लिखा है या नहीं लिखा है। इतना ही नहीं Online सामान खरीदते समय अब लोग Country of Origin इसे भी देखना नहीं भूलते हैं।

जैसे 'स्वच्छ भारत अभियान' की सफलता ही उसकी प्रेरणा बन रही है वैसे ही Vocal For Local की सफलता, विकसित भारत - समृद्ध भारत के द्वार खोल रही है। Vocal For Local का ये अभियान पूरे देश की अर्थव्यवस्था को

मजबूती देता है। Vocal For Local अभियान रोजगार की गारंटी है। यह विकास की गारंटी है, ये देश के संतुलित विकास की गारंटी है। इससे शहरी और ग्रामीण, दोनों को समान अवसर मिलते हैं। इससे स्थानीय उत्पादों में Value Edition का भी मार्ग बनता है, और अगर कभी, वैश्विक अर्थव्यवस्था में उतार-चढ़ाव आता है, तो Vocal For Local का मंत्र, हमारी अर्थव्यवस्था को संरक्षित भी करता है।

भारतीय उत्पादों के प्रति यह भावना केवल त्योहारों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। अभी शादियों का मौसम भी शुरू हो चुका है। कुछ व्यापार संगठनों का अनुमान है कि शादियों के इस season में करीब 5 लाख करोड़ रुपए का कारोबार हो सकता है। शादियों से जुड़ी खरीदारी में भी आप सभी भारत में बने उत्पादों को ही महत्व दें। और हाँ, जब शादी की बात निकली है, तो एक बात मुझे लम्बे अरसे से कभी-कभी बहुत पीड़ा देती है और मेरे मन की पीड़ा, मैं, मेरे परिवारजनों को नहीं कहूँगा तो किसको कहूँगा? आप सोचिये, इन दिनों ये जो कुछ परिवारों में विदेशों में जाकर के शादी करने का जो एक नया ही वातावरण बनता जा रहा है। क्या, ये जरूरी है क्या? भारत की मिट्टी में, भारत के लोगों के बीच, अगर हम शादी ब्याह मनाएं, तो देश का पैसा, देश में रहेगा। देश के लोगों को आपकी शादी में कुछ-न-कुछ सेवा करने का अवसर मिलेगा, छोटे -छोटे गरीब लोग भी अपने बच्चों को आपकी शादी की बातें

बताएँगे। क्या आप vocal for local के इस mission को विस्तार दे सकते हैं? क्यों न हम शादी ब्याह ऐसे समारोह अपने ही देश में करें? हो सकता है, आपको चाहिए वैसी व्यवस्था आज नहीं होगी लेकिन अगर हम इस प्रकार के आयोजन करेंगे तो व्यवस्थाएं भी विकसित होंगी। ये बहुत बड़े परिवारों से जुड़ा हुआ विषय है। मैं आशा करता हूँ मेरी ये पीड़ा उन बड़े-बड़े परिवारों तक जरूर पहुँचेगी।

त्योहारों के इस मौसम में एक और बड़ा trend देखने को मिला है। ये लगातार दूसरा साल है जब दीपावली के अवसर में cash देकर कुछ सामान खरीदने का प्रचलन धीरे-धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। यानी, अब लोग ज्यादा से ज्यादा Digital Payment कर रहे हैं। ये भी बहुत उत्साह बढ़ाने वाला है। आप एक और काम कर सकते हैं। आप तय करिए कि एक महीने तक आप UPI से या किसी Digital माध्यम से ही Payment करेंगे, Cash Payment नहीं करेंगे। भारत में Digital क्रांति की सफलता ने इसे बिल्कुल संभव बना दिया है। और जब एक महीना हो जाए, तो आप मुझे अपने अनुभव, अपनी फोटो जरूर Share करियेगा।

हमारे युवा साथियों ने देश को एक और बड़ी खुशखबरी दी है, जो हम सभी को गौरव से भर देने वाली है। Intelligence, Idea और Innovation - आज भारतीय युवाओं की पहचान है। इसमें Technology के Combination से उनकी Intellectual Properties में निरंतर बढ़ोत्तरी हो, ये अपने आप में देश के सामर्थ्य को बढ़ाने वाली महत्वपूर्ण प्रगति है। आपको ये जानकर अच्छा लगेगा कि 2022 में भारतीयों के Patent आवेदन में 31 प्रतिशत से ज्यादा की बढ़ोत्तरी हुई है। World Intellectual Property Organisation ने एक बड़ी ही दिलचस्प Report जारी की है। ये Report बताती है कि Patent File करने में सबसे आगे रहने वाले Top-10 देशों में भी ऐसा पहले कभी नहीं हुआ।

मैं अपने युवा-मित्रों को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि देश हर कदम पर आपके साथ है। सरकार ने जो प्रशासनिक और कानूनी सुधार किये हैं, उसके बाद आज हमारे युवा एक नई ऊर्जा के साथ बड़े पैमाने पर Innovation के काम में जुटे हैं। 10 वर्ष पहले के आंकड़ों से तुलना करें, तो आज, हमारे patent को 10 गुना ज्यादा मंजूरी मिल रही है। हम सभी जानते हैं कि patent से ना सिर्फ देश की Intellectual Property बढ़ती है, बल्कि इससे नए-नए अवसरों के भी द्वार खुलते हैं। इतना ही नहीं, ये हमारे start-ups की ताकत और क्षमता को भी बढ़ाते हैं। आज हमारे स्कूली बच्चों में भी Innovation की भावना को बढ़ावा मिल रहा है। Atal tinkering lab, Atal innovation mission, कॉलेजों में Incubation Centers, start-up India अभियान, ऐसे निरंतर प्रयासों के नतीजे देशवासियों के सामने हैं। ये भी भारत की युवाशक्ति, भारत की innovative power का प्रत्यक्ष उदाहरण है। इसी जोश के साथ आगे चलते हुए ही, हम, विकसित भारत के संकल्प को भी प्राप्त करके दिखाएँगे और इसीलिए मैं बार बार कहता हूँ 'जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसन्धान'।

आपको याद होगा कि कुछ समय पहले 'मन की बात' में भारत में बड़ी संख्या में लगने वाले मेलों की चर्चा की थी। तब एक ऐसी प्रतियोगिता का भी विचार आया था जिसमें लोग मेलों से जुड़ी फोटो साझा करें। संस्कृति मंत्रालय ने इसी को लेकर Mela Moments Contest का आयोजन किया था। आपको ये जानकार अच्छा लगेगा कि इसमें हजारों लोगों ने हिस्सा लिया और बहुत लोगों ने पुरस्कार भी जीते। कोलकाता के रहने वाले राजेश धर जी ने ''चरक मेला'' में गुब्बारे और खिलौने बेचने वाले की अद्भुत फोटो के लिए पुरस्कार जीता। ये मेला ग्रामीण बंगाल में काफी लोकप्रिय है। वाराणसी की होली को showcase करने के लिए अनुपम सिंह जी को Mela portraits का पुरस्कार मिला। अरुण कुमार नलिमेला जी, 'कुलसाई दशहरा' से जुड़ा एक आकर्षक पहलू को दिखाने के लिए पुरस्कृत किये गए। वैसे ही, पंढरपुर की भक्ति को दिखाने वाली Photo, सबसे ज्यादा पसंद की गई Photo में शामिल रही, जिसे महाराष्ट्र के ही एक सज्जन श्रीमान् राहुल जी ने भेजा था। इस प्रतियोगिता में बहुत सारी तस्वीरें, मेलों के दौरान मिलने वाले स्थानीय व्यंजनों की भी थी। इसमें पुरलिया के रहने वाले आलोक अविनाश जी की तस्वीर ने पुरस्कार जीता। उन्होंने एक मेले के दौरान बंगाल के ग्रामीण क्षेत्र के खानपान को दिखाया था। प्रनब बसाक जी की वो तस्वीर भी पुरस्कृत हुई, जिसमें भगोरिया महोत्सव के दौरान महिलाएँ कुल्फी का आनंद ले रही हैं। रूमेला जी ने छत्तीसगढ़ के जगदलपुर में एक गाँव के मेले में भजिया का स्वाद लेती महिलाओं की photo भेजी थी - इसे भी पुरस्कृत किया गया।

'मन की बात' के माध्यम से हर गाँव, हर स्कूल, हर पंचायत को, ये आग्रह है कि निरंतर इस तरह की प्रतियोगिताओं का आयोजन करें। social media की इतनी ताकत है, Technology और Mobile घर-घर पहुंचे हुए हैं। आपके लोकल पर्व हों या product, उन्हें आप ऐसा करके भी global बना सकते हैं।

गाँव-गाँव में लगने वाले मेलों की तरह ही हमारे यहां विभिन्न नृत्यों की भी अपनी ही विरासत है। झारखण्ड, ओडिशा और बंगाल के जन-जातीय इलाकों में एक बहुत प्रसिद्ध नृत्य है जिसे 'छऊ' के नाम से बुलाते हैं। 15 से 17 नवम्बर तक एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना के साथ श्रीनगर में 'छऊ' पर्व का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सबने 'छऊ' नृत्य का आनंद उठाया। श्रीनगर के नौजवानों को 'छऊ' नृत्य की training देने के लिए एक workshop का भी आयोजन हुआ। इसी प्रकार, कुछ सप्ताह पहले ही कठुआ जिले में 'बसोहली उत्सव' आयोजित किया गया। ये जगह जम्मू से 150 किलोमीटर दूर है। इस उत्सव में स्थानीय कला, लोक नृत्य और पारंपरिक रामलीला का आयोजन हुआ।

भारतीय संस्कृति की सुंदरता को सऊदी अरब में भी महसूस किया गया। इसी महीने सऊदी अरब में 'संस्कृत उत्सव' नाम का एक आयोजन हुआ। यह अपने आप में बहुत

अनूठा था, क्योंकि ये पूरा कार्यक्रम ही संस्कृत में था। संवाद, संगीत, नृत्य सब कुछ संस्कृत में, इसमें, वहाँ के स्थानीय लोगों की भागीदारी भी देखी गयी।

'स्वच्छ भारत' अब तो पूरे देश का प्रिय विषय बन गया है मेरा तो प्रिय विषय है ही है और जैसे ही मुझे इससे जुड़ी कोई खबर मिलती है, मेरा मन उस तरफ चला ही जाता है, और स्वाभाविक है, फिर तो उसको 'मन की बात' में जगह मिल ही जाती है। स्वच्छ भारत अभियान ने साफ-सफाई और सार्वजनिक स्वच्छता को लेकर लोगों की सोच बदल दी है। ये पहल आज राष्ट्रीय भावना का प्रतीक बन चुकी है, जिसने करोड़ों देशवासियों के जीवन को बेहतर बनाया है। इस अभियान ने अलग-अलग क्षेत्र के लोगों, विशेषकर युवाओं को सामूहिक भागीदारी के लिए भी प्रेरित किया है। ऐसा ही एक सराहनीय प्रयास सूरत में देखने को मिला है। युवाओं की एक टीम ने यहाँ 'Project Surat' इसकी शुरुआत की है। इसका लक्ष्य सूरत को एक ऐसा model शहर बनाना है, जो सफाई और sustainable development की बेहतरीन मिसाल बने।

'Safai Sunday' के नाम से शुरू हुए इस प्रयास के तहत सूरत के युवा पहले सार्वजनिक जगहों और Dumas Beach की सफाई करते थे। बाद में ये लोग तापी नदी के किनारों की सफाई में भी जी-जान से जुट गए और आपको जान करके खुशी होगी, देखते-ही-देखते इससे जुड़े लोगों की संख्या, 50 हजार से ज्यादा हो गई है। लोगों से मिले समर्थन से टीम का आत्मविश्वास बढ़ा, जिसके बाद उन्होंने कचरा इकट्ठा करने का काम भी शुरू किया। आपको जानकर हैरानी होगी कि इस टीम ने लाखों किलो कचरा हटाया है। जमीनी स्तर पर किए गए ऐसे प्रयास, बहुत बड़े बदलाव लाने वाले होते हैं।

गुजरात से ही एक और जानकारी आई है। कुछ सप्ताह पहले वहां अंबाजी में 'भादरवी पूनम मेले' का आयोजन किया गया था इस मेले में 50 लाख से ज्यादा लोग आए। ये मेला प्रतिवर्ष होता है। इसकी सबसे खास बात ये रही कि मेले में आये लोगों ने गब्बर हिल के एक बड़े हिस्से में सफाई अभियान चलाया। मंदिरों के आसपास के पूरे क्षेत्र को स्वच्छ रखने का ये अभियान बहुत प्रेरणादायी है।

स्वच्छता कोई एक दिन या एक सप्ताह का अभियान नहीं है बल्कि ये तो जीवन में उतारने वाला काम है। हम अपने आसपास ऐसे लोग देखते भी हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन, स्वच्छता से जुड़े विषयों पर ही लगा दिया। तमिलनाडु के कोयम्बटूर में रहने वाले लोगानाथन जी भी बेमिसाल हैं। बचपन में गरीब बच्चों के फटे कपड़ों को देखकर वे अक्सर परेशान हो जाते थे। इसके बाद उन्होंने ऐसे बच्चों की मदद का प्रण लिया और अपनी कमाई का एक हिस्सा इन्हें दान देना शुरू कर दिया। जब पैसे की कमी पड़ी तो लोगानाथन जी ने Toilets तक साफ किये ताकि जरूरतमंद बच्चों की मदद हो सके। वे पिछले 25 सालों से पूरी तरह समर्पित भाव से अपने इस काम में जुटे हैं और अब तक 1500 से अधिक बच्चों की मदद कर चुके हैं। देशभर में हो रहे इस तरह के अनेकों प्रयास ना सिर्फ हमें प्रेरणा देते हैं बल्कि कुछ नया कर गुजरने की इच्छा शक्ति भी जगाते हैं।

21वीं सदी की बहुत बड़ी चुनौतियों में से एक है - 'जल सुरक्षा'। जल का संरक्षण करना, जीवन को बचाने से कम नहीं हैं। जब हम सामूहिकता की इस भावना से कोई काम करते हैं तो सफलता भी मिलती है। इसका एक उदाहरण देश के हर जिले में बन रहे 'अमृत सरोवर' भी है। 'अमृत महोत्सव' के दौरान भारत ने जो 65 हजार से ज्यादा 'अमृत सरोवर' बनाए हैं, वो आने वाली पीढ़ियों को लाभ देंगे। अब हमारा ये भी दायित्व है कि जहां-जहां 'अमृत सरोवर' बने हैं, उनकी निरंतर देखभाल हो, वो जल संरक्षण के प्रमुख स्त्रोत बने रहें।

जल संरक्षण की ऐसी ही चर्चाओं के बीच मुझे गुजरात के अमरेली में हुए 'जल उत्सव' का भी पता चला। गुजरात में बारहमास बहने वाली नदियों का भी अभाव है, इसलिए लोगों को ज्यादातर बारिश के पानी पर ही निर्भर रहना पड़ता है। पिछले 20-25 साल में सरकार और सामाजिक संगठनों के प्रयास के बाद वहां की स्थिति में बदलाव जरूर आया है। और इसलिए वहां 'जल उत्सव' की बड़ी भूमिका है। अमरेली में हुए 'जल उत्सव' के दौरान 'जल सरंक्षण' और झीलों के संरक्षण को लेकर लोगों में जागरूकता बढ़ाई गयी। इसमें Water Sports को भी बढ़ावा दिया गया, Water Security के जानकारों के साथ मंथन भी किया गया। कार्यक्रम में शामिल लोगों को तिरंगे वाला Water fountain बहुत पसंद आया। इस जल उत्सव का आयोजन सूरत के Diamond Business में नाम कमाने वाले सावजी भाई ढोलकिया के foundation ने किया।

आज दुनिया भर में skill development के महत्व को स्वीकार्यता मिल रही है। जब हम किसी को कोई Skill सिखाते हैं, तो उसे सिर्फ हुनर ही नहीं देते बल्कि उसे आय का एक जरिया भी देते हैं। और जब मुझे पता चला एक संस्था पिछले चार दशक से Skill Development के काम में जुटी है, तो मुझे और भी अच्छा लगा। ये संस्था, आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम में है और इसका नाम 'बेल्जिपुरम Youth club' है। Skill development पर focus कर 'बेल्जिपुरम Youth club' ने करीब 7000 महिलाओं को सशक्त बनाया है। इनमें से अधिकांश महिलाएं आज अपने दम पर अपना कुछ काम कर रही हैं। इस संस्था ने बाल मजदूरी करने वाले बच्चों को भी कोई ना कोई हुनर सिखाकर उन्हें उस दुष्चक्र से बाहर निकालने में मदद की है। 'बेल्जिपुरम Youth club' की टीम ने किसान उत्पाद संघ यानि FPOs से जुड़े किसानों को भी नई Skill सिखाई जिससे बड़ी संख्या में किसान सशक्त हुए हैं। स्वच्छता को लेकर भी ये Youth club गांव-गांव में जागरूकता फैला रहा है। इसने अनेक शौचालयों का निर्माण की भी मदद की है। आज, देश के गाँव-गाँव में Skill development के लिए ऐसे ही सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है।

जब किसी एक लक्ष्य के लिए सामूहिक प्रयास होता है तो सफलता की ऊंचाई भी और ज्यादा हो जाती है। मैं आप सभी से लद्दाख

का एक प्रेरक उदाहरण साझा करना चाहता हूँ। आपने पश्मीना शाल के बारे में तो जरुर सुना होगा। पिछले कुछ समय से लद्दाखी पश्मीना की भी बहुत चर्चा हो रही है। लद्दाखी पश्मीना Looms of Laddakh के नाम से दुनियाभर के बाजारों में पहुँच रहा है। आप ये जानकार हैरान रह जाएंगे कि इसे तैयार करने में 15 गाँवों की 450 से अधिक महिलाएं शामिल हैं। पहले वे अपने उत्पाद वहां आने वाले पर्यटकों को ही बेचती थीं। लेकिन अब Digital भारत के इस दौर में उनकी बनाई चीजें, देश-दुनिया के अलग-अलग बाजारों में पहुँचने लगी हैं। यानि हमारा local अब global हो रहा है और इससे इन महिलाओं की कमाई भी बढ़ी है।

नारी-शक्ति की ऐसी सफलताएं देश के कोने-कोने में मौजूद हैं। जरुरत ऐसी बातों को ज्यादा से ज्यादा सामने लाने की है। और ये बताने के लिए 'मन की बात' से बेहतर और क्या होगा? तो आप भी ऐसे उदाहरणों को मेरे साथ ज्यादा से ज्यादा share करें। मैं भी पूरा प्रयास करूंगा कि उन्हें आपके बीच ला सकूँ ।

'मन की बात' में हम ऐसे सामूहिक प्रयासों की चर्चा करते रहे हैं, जिनसे समाज में बड़े-बड़े बदलाव आए हैं। 'मन की बात' की एक और उपलब्धि ये भी है कि इसने घर-घर में रेडियो को और अधिक लोकप्रिय बना दिया है। MyGOV पर मुझे उत्तर प्रदेश में अमरोहा के राम सिंह बौद्ध जी का एक पत्र मिला है। राम सिंह जी पिछले कई दशकों से रेडियो संग्रह करने के काम में जुटे हैं। उनका कहना है कि 'मन की बात' के बाद से, उनके Radio Museum के प्रति लोगों की उत्सुकता और बढ़ गई है। ऐसे ही 'मन की बात' से प्रेरित होकर अहमदाबाद के पास तीर्थधाम प्रेरणा तीर्थ ने एक दिलचस्प प्रदर्शनी लगाई है। इसमें देश-विदेश के 100 से ज्यादा Antique radio रखे गए हैं। यहाँ 'मन की बात' के अब तक के सारे Episodes को सुना जा सकता है। कई और उदाहरण हैं, जिनसे पता चलता है कि कैसे लोगों ने 'मन की बात' से प्रेरित होकर अपना खुद का काम शुरू किया। ऐसा ही एक उदाहरण कर्नाटक के चामराजनगर की वर्षा जी का है, जिन्हें 'मन की बात' ने अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए प्रेरित किया। इस कार्यक्रम के एक Episode से प्रेरित होकर उन्होंने केले से जैविक खाद बनाने का काम शुरू किया। प्रकृति से बहुत लगाव रखने वाली वर्षा जी की ये पहल, दूसरे लोगों के लिए भी रोजगार के मौके लेकर आई है।

कार्तिक पूर्णिमा के पर्व पर 'देव दीपावली' भी मनाई जाती है। और मेरा तो मन रहता है कि मैं काशी की 'देव दीपावली' जरुर देखूं। इस बार मैं काशी तो नहीं जा पा रहा हूँ लेकिन 'मन की बात' के माध्यम से बनारस के लोगों को अपनी शुभकामनाएं जरूर भेज रहा हूँ। इस बार भी काशी के घाटों पर लाखों दिये जलाये जाएंगे, भव्य आरती होगी, Laser Show होगा, लाखों की संख्या में देश-विदेश से आए लोग 'देव दीपावली' का आनंद लेंगे।

पूर्णिमा के दिन ही गुरु नानक देव जी का भी प्रकाश पर्व है। गुरु नानक जी के अनमोल संदेश भारत ही नहीं, दुनिया भर के लिए आज भी प्रेरक और प्रासंगिक हैं। ये हमें सादगी, सद्भाव और दूसरों के प्रति समर्पित होने के लिए प्रेरित करते हैं। गुरु नानक देव जी ने सेवा भावना, सेवा कार्यों की जो सीख दी, उसका पालन, हमारे सिख भाई-बहन, पूरे विश्व में करते नजर आते हैं।

देखते ही देखते 2023 समाप्ति की तरफ बढ़ रहा है। और हर बार की तरह हम-आप ये भी सोच रहे हैं कि अरे...इतनी जल्दी ये साल बीत गया। लेकिन ये भी सच है कि ये साल भारत के लिए असीम उपलब्धियों वाला साल रहा है, और भारत की उपलब्धियां, हर भारतीय की उपलब्धि है। 'मन की बात', भारतीयों की ऐसे उपलब्धियों को सामने लाने का एक सशक्त माध्यम बना है। ▪

अटलजी की जयंती पर विशेष

कोटि चरण बढ़ रहे ध्येय की ओर निरन्तर

केशव के आजीवन तप की यह पवित्रतम धारा।
साठ सहस ही नहीं, तरेगा इससे भारत सारा।

यह नवगंगा तोड़ चली है बाधाओं की कारा।
एक जह्नु क्या? यहाँ पूर्ण पशुबल ने सिर दे मारा।

भू पर नहीं कोटि हृदयों में इसकी धार प्रबल है।
इसे बाँध रखने का पापी यत्न हुआ निष्फल है।

तोड़ हिमालय, चीर जटाएँ चली सिन्धु की ओर।
नगर, ग्राम, पुर, डगर डुबाती इसका ओर न छोर।

किसने ऐसा दूध पिया जो रोके गति तूफानी
यह जीवन का ज्वार चली उफनाती प्रखर जवानी।

युवक हार जाते हैं लेकिन यौवन कभी न हारा।
एक निमिष की बात नहीं है चिर-संघर्ष हमारा।

पृथ्वीराज की आँखें जातीं स्वप्न न उनके जाते।
भर जाते हैं घाव, दाग पर सदा अमिट रह जाते।

यह जन-गंगा जन-जीवन का कल्मष कलुष बहाती।
जो डूबा सो पार हो गया मुक्ति लुटाती जाती।

मृत में जीवन और जीवितों में ज्वाला सुलगाती।
भ्रष्ट भग्न माँ के मन्दिर को पुनः पवित्र बनाती।
इसके सम्मुख सम्राटों के मस्तक नत होने को।
इसके तट पर राज्य बिगड़ने को, बनने को।

पुण्य पूर्वजों के पौरूष का यह प्रतिफल है।
सृष्टि-काल का स्नेह, प्रलय का आकुल जल है।

कोटि बिन्दु बह रहे सिन्धु का अगम रूप धर।
कोटि चरण बढ़ रहे ध्येय की ओर निरन्तर।

यह परम्परा का प्रवाह है, कभी न खण्डित होगा।
पुत्रों के बल पर ही मां का मस्तक मण्डित होगा।

वह कपूत है जिसके रहते मां की दीन दशा हो।
शत भाई का घर उजाड़ता जिसका महल बसा हो।

घर का दीपक व्यर्थ, मातृ-मंदिर में जब अंधियारा।
कैसा हास-विलास कि जब तक बना हुआ बँटवारा?

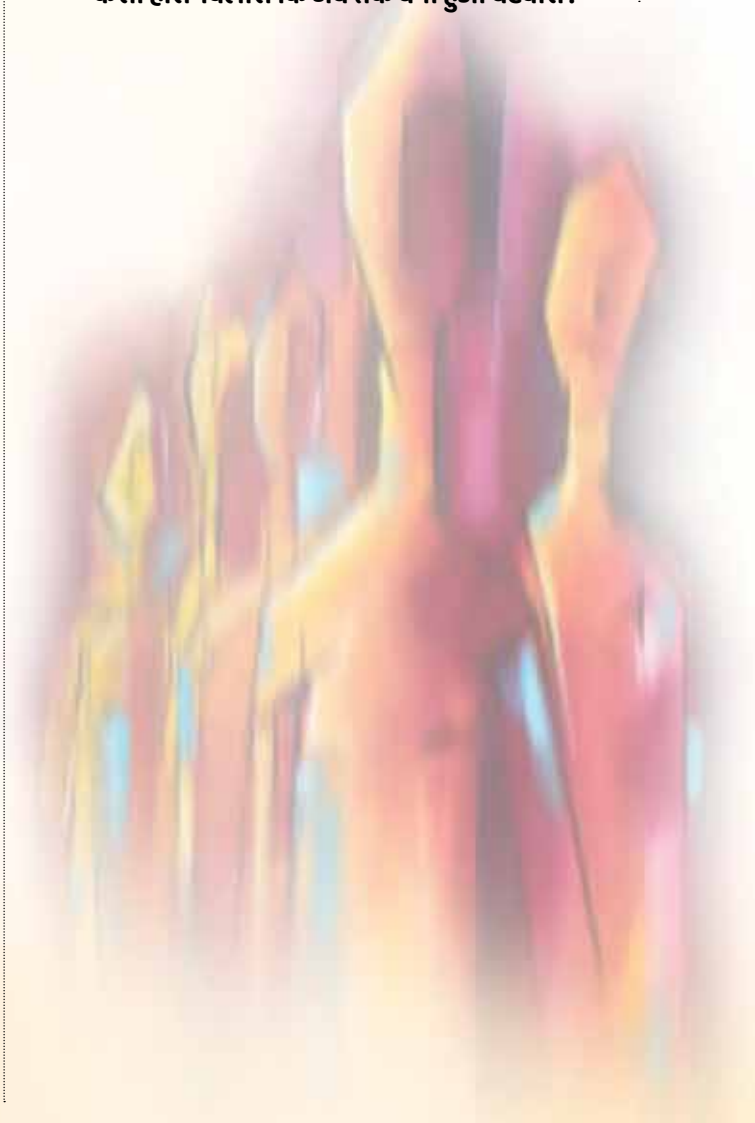

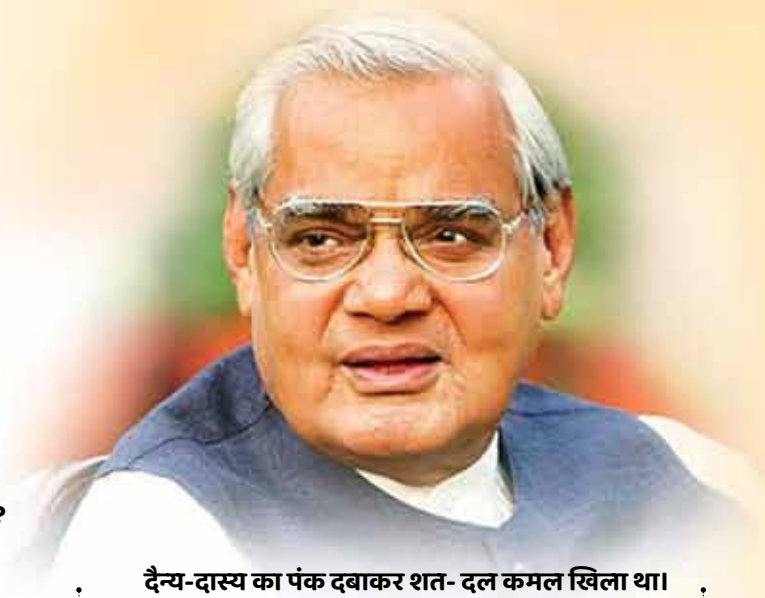

किस बेटे ने माँ के टुकड़े करके दीप जलाए?
किसने भाई की समाधि पर ऊँचे महल बनाए?

चिता-भस्म पर किसने सुख के स्वर्णिम साज सजाए?
किसने लाखों के विनाश पर जय के वाद्य बजाए?

किस कपूत ने पूत पंचनद को कर डाला लाल?
किसके पापों का प्रतिफल है भोग रहा बंगाल?

किसने आग लगाकर अपने घर में किया उजाला?
किसने निज का सुख खरीद, माँ का विक्रय कर डाला?

शस्य-श्यामला स्वर्णभूमि क्यों हुई आज कंगाल?
किसके कारण देवभूमि में आज अभाव, अकाल?

जग-जननी ने भीख माँगने का दुर्दिन क्यों देखा?
पुत्रों के पापों का फल है, यह न नियति का लेखा।

सूर्य गिर गया अन्धकार में ठोकर खा कर।
भीख माँगता है कुबेर झोली फैलाकर।

कण-कण को मोहताज, कर्ण का देश हो गया।
माँ का आँचल द्रुपद-सुता का केश हो गया।

जब तक अधरों में न भीम की शोणित प्यास जगेगी।
तब तक उर से अपमानों की ज्वाला नहीं बुझेगी।

कोटि दीप जल रहे तमिस्रा चीर-चीर कर।
कोटि चरण बढ़ रहे ध्येय की ओर निरन्तर।

आँसू नहीं, स्वेद शोणित की आज माँग है।
कंठ-कंठ में मर-मिटने का अमिट राग है।

प्राण-पुष्प ही नहीं, करो जीवन का अर्पण।
अब न सहेंगे जननी के केशों का कर्षण।

कंटक-पथ पर पाँव बढ़ाते गाते जाना।
हर बाजी पर हमें यहाँ सर्वस्व लगाना।

जन्म-मरण का खेल अनूठा, इसमें हार नहीं है।
वह क्या चल पाएगा जिसको पथ से प्यार नहीं है।

सन पचीस का वर्ष! पंथ पर राही एक चला था।
अन्धकार का वक्ष चीरकर दीपक एक जला था।

दैन्य-दास्य का पंक दबाकर शत- दल कमल खिला था।
काल रात्रि को भेद ज्योति का प्रखर पुंज निकला था।

पथ पर चलते-चलते ही वह राह बन गया।
तिल-तिल कर जलते-जलते ही दाह बन गया।

वह कैसा था भक्त, स्वयं भगवान बन गया।
कुम्भकार की कृति होकर, निर्माण बन गया।

आज नहीं वह, किन्तु पथ पर चरण-चिन्ह अंकित हैं।
मनु के वंशज प्रलयकाल से क्यों शंकित हैं?

राम-कृष्ण यदि गये विवेकानन्द शेष हैं।
अभी मूर्ति की पूर्ति शेष है, प्रण अशेष है।

आओ युग के सपनों को साकार करें हम।
मृतकों में भी जीवन की हुँकार भरें हम।

सबल भुजाओं में रक्षित है नौका की पतवार।
चीर चलें सागर की छाती, पार करें मँझधार।

ज्ञान-केतु लेकर निकला है विजयी शंकर।
अब न चलेगा ढोंग, दम्भ, मिथ्या आडम्बर।

अब न चलेगा राष्ट्र प्रेम का गर्हित सौदा।
यह अभिनव चाणक्य न फलने देगा विष का पौधा।

तन की शक्ति, हृदय की श्रद्धा, आत्म-तेज की धारा।
आज जगेगा जग-जननी का सोया भाग्य सितारा।

कोटि पुष्प चढ़ रहे देव के शुभ चरणों पर।
कोटि चरण बढ़ रहे ध्येय की ओर निरन्तर।

ठाकरेजी के जीवन को मैंने स्वयं देखा है

लालकृष्ण आडवाणी

बहुतों को पं. दीनदयाल जी को प्रत्यक्ष देखने का शायद अवसर न मिला हो, लेकिन दीनदयाल जी की संगठन में जो भूमिका थी और जिसके कारण संगठन इतना व्यापक और मजबूत बना है, वो गुण अगर किसी में कूट-कूट कर भरे हुए थे, तो कह सकते हैं वह कुशाभाऊ ठाकरे में थे। खासकर स्वयं के बारे में कभी न सोचने की प्रवृत्ति, केवल संगठन कार्य के बारे में सोचना और उसी के लिए समर्पित जीवन बिताना। वो प्रकृति से इतने सरल थे कि पिछले दिनों में उनके देहान्त के बाद जो बातें छपी, वो पढ़-पढ़ के लोग हैरान होते हैं कि जिस पार्टी की केन्द्र में सत्ता हो और उस पार्टी का प्रमुख व्यक्ति जो उसके अध्यक्ष रहे, वह कहां रहते थे? उनके कमरे को कोई जाकर देखेगा, जहां वो रहते थे, अकल्पनीय है। इतना सादगीपूर्ण जीवन। कभी कामना नहीं की कि मैं किसी अच्छे स्थान पर रहूँ। एक बार रहना पड़ा था अध्यक्ष के नाते, लेकिन जिस दिन अध्यक्षता पूर्ण हुई उसके अगले दिन वापस आकर भाजपा मुख्यालय स्थित कमरे में रहने लगे। मुझे रायपुर या भोपाल में प्रवास के दौरान ऐसा महसूस होता है कि उनके जीवन की एक बहुत बड़ी साज पूरी हुई। हममें से जिन लोगों ने देश भर में भाजपा का कार्य देखा है, वे इस बात को स्वीकार करेंगे कि बाकी प्रदेशों में पार्टी का उतार-चढ़ाव होता रहा होगा, कभी सत्ता पक्ष बना, कभी विपक्ष बना लेकिन अगर कोई ऐसा एक क्षेत्र है कि जहां पर पार्टी का विस्तार और पार्टी का कार्य सर्वाधिक मजबूत हुआ और सबसे गहरे रूप में पार्टी का प्रभाव बढ़ा तो वो शायद मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ है। इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए हजारों कार्यकर्ताओं ने परिश्रम किया है, लेकिन अगर किसी एक व्यक्ति को उसका सबसे अधिक श्रेय दिया जा सकता है तो वह कुशाभाऊ ठाकरे को है। जिन्होंने जनसंघ की स्थापना से लेकर भाजपा के इस सशक्त रूप को प्राप्त करने में अथक परिश्रम किया। पहले उन्होंने जनसंघ के मध्य भारत प्रान्त के संगठन मंत्री के रूप में कार्य किया। आगे चलकर व्यवस्था थोड़ी बदली तो संगठन मंत्री के स्थान पर मंत्री का दायित्व संभाला और फिर आगे चलकर के उनको केन्द्र में जवाबदारी मिली और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी बने।

भले ही दायित्व उनका राष्ट्रीय अध्यक्ष का था, लेकन प्रकृति से वे संगठन मंत्री की भूमिका में ही रहे। सन् 1951 में जब डॉ. मुखर्जी ने जनसंघ की स्थापना की, तब जो कल्पना की थी कि एक ऐसा व्यक्ति कि जिसकी कोई व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा न हो, केवल संगठन की चिंता करने वाला, कार्यकर्ताओं को जोड़ने वाला, कार्यकर्ताओं की देखभाल करने वाला हो, जिसका नाम पत्र-पत्रिकाओं में न छपे यानि मीडिया से दूर और एक मजबूत संगठन के नींव का पत्थर बनकर चले। ऐसे दायित्व वाले संगठन मंत्री हो और कुशाभाऊ इन आदर्शों की साकार प्रतिमूर्ति साबित हुए। ठीक है कि वो हमसे अलग हो गए, बिछुड़ गए। उन्हें उनके मन पर इस बात का संतोष झलकता था कि मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में, जहां उन्होंने गांव-गांव घूमकर संगठन को मजबूत बनाया, वहां पर इस प्रकार पार्टी का वर्चस्व बना है और उनके सहयोगी वहां के मुख्यमंत्री बनकर गए हैं, लेकिन ऐसा भी अनुभव होता था कि मानो उनके जीवन की सार्थकता पूरी हो गई। कुशाभाऊ कह रहे थे कि 'अब तो मेरा कार्य पूरा हो गया है। मैं वापस जा रहा हूँ' और उसके बाद मुझे याद है बिना डाक्टर की अनुमति से अशोक रोड आ गए। उनके सहयोगियों से सूचना मिली कि वो भोजन भी नहीं कर रहे हैं, दवाई भी नहीं ले रहे है और वो कह रहे है कि मेरा तो समय अब आ गया जाने का। मुझे जाने की आप छुट्टी दीजिए। मुझे जबर्दस्ती भोजन मत करवाइए। मुझे जबर्दस्ती दवाई मत दीजिए और मैं जब मिलने गया था, वो दृश्य मैं भूल नहीं सकता हूं कि किस प्रकार से एक व्यक्ति, जो कष्ट में है, लेकिन इसकी चिंता नहीं, मन ही मन में उनको लगता है कि मुझे ईश्वर ने जिस कार्य के लिए भेजा, वह अपने सामर्थ्य से पूरा किया और अब मेरे जाने का समय हो गया। इस परिस्थिति में हम लोगों ने प्रयास कर उन्हें हॉस्पिटल में भेजा, लेकिन उन्होंने अपने जीवन का अंत मान लिया था और चले गए। हां, इतना जरूर है कि बाकी महापुरूषों के बारे में लोगों से सुना जाता है, इस महापुरूष के जीवन को मुझे स्वयं देखने का सौभाग्य मिला। वे सदैव प्रेरणापुंज बने रहेंगे। राजनीतिक जीवन में एक आदर्श कार्यकर्ता कैसा होना चाहिए उसके लिए एक उदाहरण है कुशाभाऊ।

आज भारतीय जनता पार्टी के ऊपर देश की इतनी बड़ी जवाबदारी है। उसका आधार राष्ट्रवाद की विचारधारा है। मुझे याद है कि 1989 में जब भाजपा को बड़ी सफलता मिली थी और लोकसभा में हमारे 86 सांसद निर्वाचित हुए थे। जनता दल सबसे बड़ी पार्टी उभरकर आई थी और उसी दल के प्रधानमंत्री बने, तब एक पत्रिका ने 1989 के चुनाव पर टिप्पणी करते हुए छापा था और उसका शीर्षक था- Winner comes to come. माने जो विजयी दल है वो दूसरे नम्बर पर आया है। उन्होंने जनता दल को विजयी नहीं माना। भारतीय जनता पार्टी को विजयी मानकर कहा कि It has come Second और विश्लेषण करते हुए कहा कि इसके कारण लोग बड़े विश्लेषण करते है कि इस कारण हुआ, इस कारण हुआ लेकिन उसका विश्लेषण था, कांग्रेस पार्टी की जो हार हुई है, उसका कारण है कि उनके लोगों का पतन हुआ है, वे भ्रष्टाचार में फंसे है। भाजपा के बारे में यह धारणा बनी कि उसमें पतन नहीं हुआ है, ये लोग सात्विक है, अच्छे है, समाज की सेवा के लिए निःस्वार्थ भाव से काम करते है। इस पार्टी को जनता ने आगे बढ़ाया। यह विश्लेषण एक विदेशी अखबार ने किया। तब से लेकर कार्यकर्ताओ के मन में यह बात पैदा करने की कोशिश की जाती है कि हमारी विचारधारा बड़ी ताकत है, लेकिन उसके पीछे असली ताकत हमारे कुशाभाऊ जैसे आदर्श कार्यकर्ता हैं। जिसके आचरण और व्यवहार के कारण पार्टी की विश्वसनीयता बढ़ी है और इस विश्वसनीयता को जितनी मात्रा में हम सबल बनायेंगे, उतनी ही मात्रा में पार्टी आगे बढ़ती जाएगी, इसमें कोई संदेह नहीं। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपने वरिष्ठ सहयोगी और हमारे लिए आदर्श बने हुए आदरणीय कुशाभाऊ को नमन् करता हूं। ▪

प्रमुख लोगों की दृष्टि में डॉ. अंबेडकर

डॉ. भीमराव अंबेडकर का व्यक्तित्व वर्ण रंजित था। गरीबी में जन्म लेकर जीवन भर अस्पृश्यता का अपमान कारक बिल्ला माथे पर लेकर सैकड़ों कष्टों से झुलसते हुए वे आगे बढ़े। फिर भी समस्याओं के सामने न झुककर हर पग पर लड़ते-जूझते मेधावी प्राध्यापक, यथार्थवादी शिक्षाशास्त्री, उच्च कोटि के अर्थशास्त्रज्ञ, समर्थ न्यायवादी, गंभीर ग्रंथलेखक, दलित-पीड़ित-शोषितों के सामाजिक तिरस्कार जनित दुःख को दूर कराने वाले संघर्षकर्ता, अभिनव स्मृतिकार और दूरदर्शी समाज सुधारक के रूप में इन प्रशस्य गुणों से भरा था उनका जीवन। अपने जीवन में उनकी निज साधनाजन्य उपलब्धियों के शिखरों में से ये कुछ हैं। व्यक्ति में निःस्वार्थ महत्वाकांक्षा और उसे पाने के लिए अथक परिश्रम एवं आवश्यक पसीना बहाने योग्य मानसिक शारीरिक स्थिरता हो तो उसका जीवन किस प्रकार आश्चर्यजनक ढंग से उन्नति की ओर बढ़ सकता है महोन्नति तक पहुँच सकता है इसके लिए एक अंबेडकर का उदाहरण ही पर्याप्त है। अपने सामने रखे, प्रांजल ध्येयवाद के कारण उन्होंने अपार कार्य सामर्थ्य, विलक्षण नैतिक पौरूष प्राप्त किया था। एक ओर पांडित्यपूर्ण चिंतन और दूसरी ओर ईमानदारी से भरी क्रियाशीलतायें दोनों तानेबाने के धागे बनकर उनके जीवन में बुन चुके थे। इसीलिए वे स्वयं ही नहीं, अपने समूचे समुदाय को ऊपर उठाने में सफल हुए।

कुछ समकालीन नेताओं और विविधपत्र दुष्टताओं के खिलाफ विद्रोह के प्रतीक थे। डॉ. अंबेडकर के प्रति विचार यहाँ प्रस्तुत हैं जिनसे उनके हिमगिरिशिखर जैसे उन्नत व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं: 'वे बहुत प्रखर न्यायिक प्रज्ञा रखने वाले, सत्यनिष्ठ व्यक्ति थे। अपार विद्वत्ता सपन्न, स्वाभिमानी और निःसंकोच होने के साथ ही सहृदय व्यक्ति थे। उचित ढंग से और निष्कलंक मन से संपर्क करने वालों के प्रति वे स्नेहशील थे।'

(चक्रवर्ती राजगोपालचारी, भारत के प्रथम गवर्नर जनरल)

'संविधान रचना समिति के लिए अंबेडकर को अध्यक्ष नियुक्त करने का अत्यंत उचित निर्णय किया समिति ने। शायद इससे अच्छा निर्णय और कोई हो नहीं सकता था। उन्होंने अपने कर्तव्य या दायित्व को न केवल दक्षता से पूरा किया, अपितु उसको अधिक ऊँची गुणवत्ता प्रदान की। इस पद के समर्थ निर्वाह से यह सिद्ध हो चुका है उनका चुनाव सभी प्रकार से सुयोग्य है।'

'अंबेडकर का व्यक्तित्व, विद्वता, संगठन कौशल और प्रभावी नेतृत्व जैसे गुणों का संगम है। इसीलिए वे देश के आधार स्तंभ माने गये हैं। अस्पृश्यता के निवारण में तथा लाखों अस्पृश्यों में आत्मविश्वास और आत्मशक्ति जगाने में उनको जितनी सफलता मिली है वह सचमुच भारत के लिए उनकी बड़ी सेवा है। उनका कार्य बहुत समय तक रहने वाला है। वह स्वदेशाभिमान तथा मानवता से प्रेरित कार्य है। अस्पृश्य कहलाने वाली जाति में अंबेडकर जैसे महान व्यक्ति का जन्म लेना ही अस्पृश्यों के मन की निराश भावना को मिटा देने वाली बात थी। अंबेडकर के जीवन से प्रेरित होकर ये लोग अन्य लोगों की प्रगति के साथ साथ ऊपर उठने का साहसपूर्ण प्रयत्न करने में पीछे नहीं रहेंगे। अंबेडकर के व्यक्तित्व को, उनके कार्य को मैं आदरांजलि समर्पित करता हूँ। उनकी दीर्घायु, आरोग्य और सफल जीवन के लिए शुभ कामना समर्पित करता हूँ।'

(क्रांतिकारी स्वाधीनता सेनानी विनायक दामोदर सावरकर द्वारा डॉ. अंबेडकर के पचासवें जन्मदिन पर प्रेषित भावपूर्ण संदेश)

डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर के 73वें जन्मदिन के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक प.पू. श्री गुरूजी ने लिखा पूर्ण पत्र यहाँ दिया जा रहा है:

दिनांक 09.08.1963

आपने चाहा कि मैं एक लेख लिख भेजूँ। इस प्रकार आपने मुझे बहुत गौरवान्वित किया। इस प्रकार के सम्मान के लिए मैं बिल्कुल योग्य नहीं हूँ, क्योंकि लेख लिखने का अभ्यास मुझे नहीं है। फिर भी वंदनीय डॉ. अंबेडकर की पुण्य स्मृति में श्रद्धा समर्पित करना अपना पवित्र कर्तव्य मानता हूँ। भारत के संदेश की गर्जना से सारे संसार को चकित कर देने वाला स्वामी विवेकानंद का एक संदेश है: दीन, दरिद्र, दुर्बल, अज्ञान में तड़फड़ाने वाले, भारतवासी मेरे लिए देव समान हैं। उनकी सेवा में लगना, उनकी चेतना जगाना, उनके जीवन को सुखमय बनाकर उन्नत करना यही सचमुच में भगवान की सेवा है। अपने समाज की 'छुओ मत' वाली असत् प्रवृत्ति को देखकर उससे उदित सभी प्रकार की रूढ़ियों पर स्वामी जी ने कठोर प्रहार किया है। नये समाज की रचना के लिए उन्होंने सारे संसार को जागृति का आव्हान किया। उस पुकार को अपने प्रत्यक्ष आचरण में उतारने, आवेश के साथ सामने आये डॉ. अंबेडकर। राजनीतिक तथा सामाजिक अवहेलनाओं से क्रुद्ध अंबेडकर अलग अलग शब्दों में अलग अलग मार्गों से इस कार्य में जुट गये। इस समाज में अज्ञान, अपमान और दुःख से पीड़ित एक बड़े महत्वपूर्ण भाग को आत्मसम्मान के साथ खड़ा करने का उनका कार्य असाधारण है। राष्ट्र के लिए यह उनका बहुत बड़ा उपकार है। उनका ऋण चुकाना सरल कार्य नहीं।

'श्री शंकराचार्य की जैसी कुशाग्र बुद्धि और भगवान बुद्ध जैसे परम कारूण्य पूर्ण उदार हृदय के संगम से ही भारत का उद्धार संभव है।' यह स्वामी विवेकानंद का कहना था। बौद्धमत स्वीकार कर उसे पुनः गतिशील बनाते हुए डॉ. अंबेडकर ने स्वामी जी के बताये मार्ग पर एक महत्वपूर्ण कदम रखा है। अंबेडकर की तीक्ष्ण चिकित्सक बुद्धि को तत्वज्ञान की दृष्टि से बौद्धमत में कुछ कमियाँ भी दिखाई देती थी। उनके सुधार पर प्रस्ताव भी उन्होंने किया। लेकिन जीवन में समानता, शुचित्व, आपस में यथार्थ पूर्ण स्नेहशीलता जैसे उसके गुणों के कारण मानव सेवा का विशुद्ध प्रेम जागृत होता है। बौद्ध मत पर श्रद्धा से उत्पन्न होने वाली यह प्रेरणा हमारे राष्ट्र के समस्त मानव समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है। मेरा विचार है कि इस तत्व को पहचान कर ही डॉ. अंबेडकर ने बौद्ध मत को स्वीकारा होगा। भूतकाल में समाज सुधार के लिए भगवान बुद्ध ने प्रचलित सामाजिक रूढ़ियों की आलोचना की थी, समाज से कटकर अलग होने के लिए नहीं। वर्तमान काल में भी डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने समाज की भलाई के लिए, धर्म के हित के लिए, हमारे चिरंजीवी समाज को दोष मुक्त शुद्ध बनाने की दृष्टि से काम किया, समाज से कटकर अन्य पंथ बनाने की दृष्टि से नहीं। अतएव डॉ. अंबेडकर भगवान बुद्ध के उत्तराधिकारी हैं, इस स्वरूप से उनकी पवित्र स्मृति में अपना हार्दिक प्रणाम अर्पित करता हूँ। ▪

धर्मो रक्षति रक्षितः

पं. मदन मोहन मालवीय

सृष्टि के आदि से जब से हिन्दू जाति, आर्य-सन्तानों का कुछ इतिहास हमको मिलता है, उस समय से आज तक सब समय में और सब दशाओं में सतयुग, त्रेता और द्वापर में और कलियुग में भी, यदि हिन्दू जाति ने कोई सबसे अधिक विशेषता दिखलायी है तो वह उसका धर्म का प्रेम, धर्म का हठ है। वेदों मे और उपनिषदों में, स्मृतियों में और धर्मशास्त्रों में, इतिहासों में और पुराणों में और अन्ततः काव्यों में और नाटकों में, पृथ्वीराज के रासों में और आल्हा-ऊदल की कथा में, टाड के राजस्थान में और विदेशीय यात्रियों के लेखों में, यदि आर्य सन्तान का कोई एक गुण सबसे अधिक जाज्वल्यमान पाया गया है तो वह उसका धर्म का प्रेम है।

राजा हरिश्चन्द्र ने राज्य त्याग दिया, अपने को बेच दिया, केवल धर्म की रक्षा के लिए। दशरथजी ने अपने प्राण से अधिक प्रिय पुत्र युवराज रामचन्द्र को वन भेज दिया, और उनके विरह में अपना प्राण त्याग दिया-केवल धर्म के लिए। भगवान रामचन्द्र ने राज्य-सिंहासन की संपदा और सुख को छोड़कर वन-वन में घूमने का व्रत धारण किया, केवल अपने धर्म के लिए। जब वे वन को जाने लगे, तब माता कौशल्या ने हृदय के दुःख को रोक कर उनका जो मंगल मनाया उस समय कहा है-

यं पालयसि धर्म त्वं प्रीत्या च नियमेन च।
स वै राधवशार्दूल धर्मस्त्वामभिरक्षतु।।

अर्थात् हे रघुकुलशार्दूल! जिस धर्म का तुम प्रीति और नियम के साथ पालन करके वन को जाते हो वही धर्म तुम्हारी रक्षा करे।

पतिव्रता-शिरोमणि सीता ने धर्म ही का पालन करने में अयोध्या का सब सुख छोड़कर वनचारिणी का वेश धारण कर अपने प्राणपति के साथ वन की यात्रा की थी और सोने की लंका के स्वामी तीन लोक को कंपाने वाले प्रचंड प्रतापशाली रावण ने उनको जब अनेक प्रकार का लालच और डर दिखाया, तब धर्म ही का प्रेम था, जिसके कारण पतिव्रताओं की सिरमौर सीता ने उस पापी के सहस्त्रों प्रलोभनों का तिरस्कार कर उससे कहा-

श्री रघुनाथ प्रताप पतिव्रत सीता
सत नहिं टरई।

द्वापर में भगवान कृष्णचन्द्र ने धर्म की रक्षा के लिए ही कंस और उसके साथी राक्षसगणों को मारा था और उत्तरा के मरे हुए पुत्र के जिलाने के समय ही कहा था-

यथा कंसश्च केशी व धर्मेण निहतौ मया।
तेन सत्येन बालोऽद्य पुनः संजीवतादयम्।।

अर्थात् जैसे मैंने धर्मपूर्वक कंस और केशी को मारा था उसी सत्य के बल से आज यह बालक जी उठे। भगवान कृष्णचन्द्र के विषय में अधिक विस्तार करने की आवश्यकता नहीं है। यह प्रसिद्ध वचन **'यतो धर्मस्ततो कृष्णः, यतो कृष्णास्ततो जयः'** उनके समस्त उपदेश और कार्यों को संक्षेप में प्रकट करती है। इसके अतिरिक्त धर्मराज युधिष्ठिर और उनके चार धर्मचारी भाईयों का पवित्र चरित्र, आदि से अन्त तक, बड़े संकट में भी धर्म पालन करने की कथा है। उनका समस्त आचरण धर्मात्मा युधिष्ठिर के इस एक वचन से भली भाँति प्रकाशित हो जाता है कि -

मम प्रतिज्ञां च निबोध सत्यां,
वृणे धर्ममृताज्जीविताच्च।
राज्यं च पुत्राश्च यशो धनं च,
सर्वं न सत्यस्य कलामुपैति।।

अर्थात् 'मेरी प्रतिज्ञा को सत्य जानो। मैं धर्म को जीवन से और मोक्ष से भी अधिक अच्छा समझता हूं। राज्य और पुत्र एवं यश और धन-ये सत्य की एक कला के बराबर भी नहीं है।'

आधुनिक समय में जब से इस देश पर यवनों का आक्रमण प्रारम्भ हुआ, तब से भी लाखों आर्य सन्तानों और आर्य ललनाओं ने प्राण दे करके अपने धर्म की रक्षा की है और अपने रूधिर से भारतभूमि पर ये अमिट वाक्य लिख दिया है -

प्राण जाहिं बरु धर्म न जाहीं।।

चित्तौड़ और राजपूताना की अनन्य वीरभूमि में जहां आर्य ललनाओं ने चिता लगाकर अपने सुकुमार शरीर को जला देना स्वीकार किया, किन्तु अपने धर्म से डिगने का विचार तक मन में नहीं आने दिया और जिस भूमि में सहस्त्रों वीर क्षत्रीय शत्रु से लड़ते-लड़ते मर गए और उनको माथा नहीं नवाया, उसी के वीरों का यह सिंहनाद था-

जो हठ राखै धर्म की, तेहि राखै करतार।

न केवल राजपूताना में अपितु भारतवर्ष के सभी छोटे और बड़े, ऊँचे और नीचे विभागों में हिमालय के ऊंचे शिखरों पर और समुद्र के तट पर अनन्त आर्य सन्तान कठिन से कठिन समय में भी प्राण को पण कर अपने आर्य धर्म की रक्षा करते चले आए हैं। औरंगजेब के समय में क्या-क्या अत्याचार हिन्दुओं पर नहीं हुए, कितने द्विजों के माथे का तिलक नहीं मिटा दिया गया, कितनों के जनेऊ नहीं उतार लिये गए, किन्तु उस समय भी करोड़ों हिन्दू अपने धर्म से नहीं डिगे।

इतिहास के पढ़ने वालों को उस समय के विकराल अत्याचारों की कुछ आभामात्र दिखायी देती है। छत्रपति शिवाजी का नाम यदि आर्य सन्तान आज आदर, धन्यवाद और हर्ष के साथ स्मरण करती है, तो इसका कारण उस अत्याचार की पराकाष्ठा है जो हिन्दुओं को औरंगजेब के समय में सहना पड़ता था और जिससे शिवाजी ने उनको छुड़ा कर फिर आर्य धर्म को सनाथ और सजीव किया था। लेख के विस्तार करने की आवश्यकता नहीं। सब विदेशी लेखक भी इस बात को स्वीकार करते आए हैं कि इतिहास के आदि से हिन्दू समाज एक धर्मप्रधान समाज चला आया है। आर्य सन्तान धर्म को सबसे बड़ा धन मानते आए हैं। राज्य खो दिया है, धन-धान्य त्याग दिया है, बन्धुओं का बिछोह सह लिया है, और प्राण को भी त्याग दिया है, किन्तु सामर्थ्य रहते अपने धर्म का त्याग नहीं किया और कैसे करें? भगवान श्रीकृष्ण गीता में कह गए हैं-

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।

और वेदव्यास जी ने सब वेदों और पुराणों के उपदेशों के निचोड़ को महाभारत के अंत के इस उपदेश में भर दिया है-

न जातु कामान्न भयान्न लोभात्,
धर्मं त्येजेज्जीवितस्यापि हे तोः।

धर्मो नित्यः सुख दुःखे त्वनित्ये,
जीवो नित्यो हेतुरस्यत्व नित्यः।।

अर्थात्- 'धर्म को कभी काम के वश होकर, भय से अथवा किसी प्रकार के लोभ में पड़कर भी कभी न छोड़े। प्राण बचाने के लिए भी न छोड़े। धर्म अविनाशी है, सुख और दुख आते-जाते हैं, जीव अविनाशी है, जिन कारणों से वह देह को धारण करता है, वे अनित्य हैं।'

हमको विश्वास है कि यदि आर्य सन्तानों को उनके धर्म का उपदेश होता जायेगा, तो जब से पृथ्वीमंडल पर वेद और उपनिषद्, स्मृति और पुराण, रामायण और महाभारत स्थित है। जब तक गंगा और यमुना, सिंधु और गोदावरी और अन्य पुण्यतोया नदियां भारतभूमि पर प्रवाहित हैं, जब तक मरीचिमालि भगवान सूर्य तथा सुधा-रश्मि चन्द्रमा ईश्वर की महिमा का स्मरण दिलाते भारत के गगनमंडल में उदित होते हैं- तब तक भारत सन्तान अपने पवित्र पुरातन परम उत्कृष्ट धर्म का कदापि त्याग न करेंगे। किन्तु हमारा हृदय इस बात को सोचकर दुःखित होता है कि जिस धर्म को हमारे पूर्वजों ने, हमारे भाइयों ने और हमारी बहिनों ने अनेक प्रकार की यातनाएं सहने पर, अनेक प्रकार का लालच दिखाये जाने पर भी नहीं छोड़ा, उस धर्म की महिमा न जानने के कारण आज हम उसकी उपेक्षा करने लगे हैं।

हम उस लोभ के वश में हो रहे हैं, जिसको भीष्म पितामहजी ने सब पापों का मूल कहा है और जिसके विषय में श्रीमद्भागवत में लिखा है-

यशो यशस्विनां शुद्धं श्लाध्या ये
गुणिनां गुणाः।
लोभः स्वल्पोऽपि तान् हन्ति श्वित्रो
रूपमिवेप्सितम्।।

अर्थात्- 'जिस प्रकार सुन्दर रूप को श्वेत कुष्ठ का एक छोटा सा भी दाग नष्ट कर देता है, उसी प्रकार थोड़ा सा लोभ भी यशस्वियों के शुद्ध यश को और गुणवानों के प्रशंसनीय गुणों को नष्ट कर देता है।'

जो लोग अज्ञान के कारण अपने धर्म से विमुख हो जाते हैं, उनके विषय में समस्त हिन्दू अपराधी हैं, जो अपने धर्म का ज्ञान अपने भाइयों में नहीं फैलाते।

ज्ञानं प्राप्यं तु संसारे यः परेभ्यो न यच्छति।
ज्ञानरूपी हरिस्तस्मै अप्रसन्नो हि लक्ष्यते।।

अर्थात्- 'संसार में ज्ञान प्राप्त करके, जो दूसरों को ज्ञान नहीं देता, उसके ऊपर ज्ञानरूपी ईश्वर अप्रसन्न से दिखलायी देते हैं।' ▪

प्रस्तुती - पं. सलिल मालवीय

सोमनाथ मंदिर के पुर्नरूद्धार पर
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का प्रेरक उद्बोधन

सोमनाथ मंदिर आज हमें यह याद दिलाते हुए खड़ा है कि कोई दुर्बल राष्ट्र यदि बाह्य आक्रमणों से अपनी रक्षा नहीं कर सकता तो वह अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता से भी बढ़कर बहुत कुछ खो बैठता है।

पं. नेहरू ने राष्ट्रपति के सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन के लिए जाने का जोरदार विरोध किया। लेकिन राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू ने उनके विरोध की ओर ध्यान नहीं दिया और अपने वचन का पालन किया। इस अवसर पर दिया गया उनका भाषण भारत के किसी राष्ट्रपति द्वारा पंथनिरपेक्षवाद पर दिए गए सबसे महत्वपूर्ण भाषणों में एक है। सृष्टि अथवा ब्रम्हांड की रचना करने वाले ब्रह्मा भी भगवान विष्णु की नाभि में रहते हैं। इसी तरह मनुष्य के हृदय में भी सृजन-शक्ति और धार्मिक आस्था का वास होता है, जो संसार के बड़े-बड़े अस्त्र-शस्त्रों, बड़ी-बड़ी सेनाओं और सम्राटों की शक्ति से भी बढ़कर है। प्राचीन युग में भारत सोने और चांदी का भंडार था। सदियों पूर्व दुनिया के कुल सोने का अधिकांश भाग भारत के मंदिरों में था। मेरा विश्वास है कि सोमनाथ मंदिर का पुर्नरूद्धार उस दिन पूर्ण होगा जब इस आधारशिला पर न केवल एक भव्य मूर्ति खड़ी होगी, बल्कि उसके साथ ही भारत की वास्तविक समृद्धि का महल भी खड़ा होगा, वह समृद्धि जिसका सोमनाथ का यह प्राचीन मंदिर प्रतीक रहा है।

सोमनाथ मंदिर को राष्ट्रीय श्रद्धा व विश्वास का प्रतीक बताते हुए राजेन्द्र बाबू ने आगे कहा था- अपने ध्वंसावशेषों से ही पुनः पुनः खड़ा होने वाला सोमनाथ का यह मंदिर पुकार-पुकार कर दुनिया से कह रहा है कि जिसके प्रति लोगों के हृदय में अगाध श्रद्धा है, उसे दुनिया की कोई भी शक्ति नष्ट नहीं कर सकती। आज जो कुछ हम कर रहे हैं, वह इतिहास के परिमार्जन के लिए नहीं है। हमारा एकमात्र उद्देश्य अपने परंपरागत मूल्यों, आदर्शों और श्रद्धा के प्रति अपने लगाव को एक बार फिर दोहराना है, जिन पर आदिकाल से ही हमारे धर्म और धार्मिक विश्वास की इमारत खड़ी हुई है। यहाँ यह उल्लेख करना अप्रासंगिक नहीं होगा कि सोमनाथ मंदिर के पुर्नरूद्धार की पाकिस्तान ने कड़ी निंदा की थी। इस संबंध में भारत सरकार की निंदा के लिए कराची में एक जनसभा भी आयोजित की गई थी।

सोमनाथ मंदिर आज हमें यह याद दिलाते हुए खड़ा है कि कोई दुर्बल राष्ट्र यदि बाह्य आक्रमणों से अपनी रक्षा नहीं कर सकता तो वह अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता से भी बढ़कर बहुत कुछ खो बैठता है। वह अपनी सांस्कृतिक विरासत भी खो बैठता है, और यही सांस्कृतिक विरासत भारत की आत्मा है। महात्मा गांधी और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के शुभाशीष से भारत सरकार की ओर से सोमनाथ मंदिर का पुर्नरूद्धार करके सरदार पटेल और के.एम. मुंशी ने यह गौरवपूर्ण प्रमाण दे दिया कि भारत में वह दृढ़ इच्छा शक्ति है, जिसके बल पर वह धर्मांधता से प्रेरित विदेशी आक्रमणों के इतिहास को मिटाकर अपने खोए हुए सांस्कृतिक गौरव को पुनः प्राप्त कर सकता है, और अपना मस्तक ऊँचा करके खड़ा रह सकता है। इस संदर्भ में देखा जाए तो सोमनाथ मंदिर भारत भर में स्थित सैकड़ों-हजारों मंदिरों से सचमुच बिल्कुल अलग और अनोखा है। ▪

(मेरा देश मेरा जीवन से साभार)

मौन कर्म साधक परमपूज्य बालासाहब देवरस

बालासाहब सामाजिक समरसता के प्रबल पक्षधर थे। उनका प्रसिद्ध वाक्य था-''यदि छुआछूत पाप नहीं तो फिर कुछ भी पाप नहीं है।''

परमपूज्य बालासाहब देवरस का जन्म 11 दिसम्बर 1915, मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी वि. संवत 1972 को नागपुर के इतवारी क्षेत्र के देवरस बाड़े में हुआ। देवरस परिवार मूलतः बालाघाट म.प्र. का रहने वाला था। बालाघाट जिले के कारंजा नामक स्थान में उनकी कृषि थी। यह लांजी तहसील में है। बालासाहब पाँच भाई थे। इनका स्थान भाईयों में चौथे क्रम पर था। उनकी तीन बहनें थीं। 1927 में बालासाहब प. पू. डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार के सम्पर्क में आए। यहीं से उनका राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रवेश हुआ। 1925 में संघ प्रारंभ हुआ था। अतः यह कहना उचित होगा कि बालासाहब प्रारंभ से ही संघ के स्वयंसेवक थे।

1931 में बालासाहब ने न्यू इंग्लिश हाईस्कूल नागपुर से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1932 में डॉ. हेडगेवार ने उन्हें इतवारी शाखा प्रारंभ करने का दायित्व सौंपा। 1935 में उन्होंने मारेस महाविद्यालय नागपुर से संस्कृत एवं दर्शन शास्त्र में स्नातक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। 1937 में एल.एल.बी. मैरिट में उत्तीर्ण की। उसी वर्ष उन्हें नगर कार्यवाह की जिम्मेदारी सौंपी गई। अपने निजी खर्च की व्यवस्था हेतु अनाथ विद्यार्थी-गृह नागपुर में शिक्षक की नौकरी शुरु की। इस बीच पुणे के संघ प्रशिक्षण वर्ग में मुख्य शिक्षक के दायित्व का भी संपादन किया। 1939 में वे कलकत्ता में प्रचारक बन कर गए।

1940 में प.पू. डॉ. हेडगेवार जी का निधन हो गया। उनके बाद परम पूज्यनीय गुरुजी को सरसंघचालक का दायित्व सौंपा गया। 1946-47 में बाला साहब को सह-सरकार्यवाह का अखिल भारतीय दायित्व सौंपा गया। 1948 में महात्मा गाँधी जी की हत्या का मिथ्या आरोप लगाकर संघ पर प्रथम प्रतिबंध लगाया गया। इस सिलसिले में बालासाहब जी चार मास तक कारागार में रहे। प्रतिबंध उठवाने के लिए राजकीय नेताओं से भेंट वार्तालाप करने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही।

1949 में प.पू. गुरुजी ने उन्हें नागपुर से तरुण भारत के संपादन तथा प्रकाशन की विशेष जिम्मेदारी सौंपी। 1965 में माननीय भैयाजी दाणी के देहावसान के बाद इनको सरकार्यवाह का दायित्व सौंपा गया जिसका 1973 तक उन्होंने सफलता पूर्वक निर्वहन किया।

1973 में प.पू. गुरुजी के स्वर्गवास के उपरान्त बालासाहब ने संघ के सरसंघचालक पद का दायित्व संभाला। संगठन की दृष्टि से यह सर्वोत्तम दायित्व था। परम पूज्य गुरुजी पूर्व में यह उद्घोषणा मा. दादा गोरवाडकर जी के सम्मुख कर गए थे कि बाला साहब अपने संघ के भावी सरसंघचालक हैं। 21 वर्ष तक बालासाहब ने सरसंघचालक के दायित्व का अत्यंत कुशलतापूर्वक निर्वाह किया। इस अवधि में अनेक आनुषांगिक कार्यों के रूप में संघ कार्य का विस्तार हुआ। 1975 में संघ पर आपातकाल के कारण दोबारा प्रतिबंध लगा। 1977 में यह प्रतिबंध उठा। 1992 में संघ पर तीसरा प्रतिबंध लगा जो एक साल बाद उठा। 11 मार्च 1994 को बालासाहब ने अपने गिरते हुए स्वास्थ्य के कारण सरसंघचालक के पद से निवृत्ति की घोषणा की। 17 जून 1996 रात्रि 8 बजकर 10 मिनट पर, पुणे के रूबी हाल क्लीनिक नाम के प्रसिद्ध चिकित्सालय में इनकी इहलीला समाप्त हो गई। 18 जून 1996 को सायंकाल को नागपुर के गंगाघाट पर उनका अन्तिम संस्कार किया गया।

प.पू. बालासाहब एक मौन कर्मसाधक थे। किसी भी समस्या पर शीघ्र एवं अचूक निर्णय की उनकी क्षमता असाधारण थी। व्यवस्थापन में कुशलता, अनुभव, समृद्धता, गहन चिंतन उनके व्यक्तित्व के अन्य महत्वपूर्ण गुण थे। उनका ध्यान सैद्धान्तिक की बजाय व्यवहार्य बातों पर अधिक रहता था। भारतीय जन समाज ने समाज के इस मौन साधक को उनकी सेवाओं के परिप्रेक्ष्य में अनेक बार सम्मानित किया। 01 अगस्त 1991 को उन्हें लोकमान्य तिलक सम्मान से, अक्टूबर 2 को नागपुर के विश्व हिन्दू परिषद् के संत सम्मेलन में 'यति सम्राट की उपाधि से', 1994 में जीजामाता प्रतिष्ठान की ओर से जीजामाता पुरस्कार से तथा 1996 में स्वातंत्र्यवीर सावरकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बालासाहब सामाजिक समरसता के प्रबल पक्षधर थे। उनका प्रसिद्ध वाक्य था-''यदि छुआछूत पाप नहीं तो फिर कुछ भी पाप नहीं है।'' सामाजिक समरसता के लिए प्रत्येक विद्यालय उपेक्षित बस्तियों में एक संस्कार केन्द्र चलाए, यह उनकी बड़ी आंकाक्षा थी। उनके व्यक्तित्व में आदर्शवादिता एवं व्यवहारिकता का बहुत ही संतुलित समन्वय एवं मेल था। उनका पूरा जीवन भारतीय संस्कृति एंव हिन्दुत्व की रक्षा के लिए समर्पित रहा। संघ को बालासाहब की सबसे बड़ी देन यह थी कि उन्होंने संघ के तत्वज्ञान को, समाज कार्य के लिए व्यवहार रूप में रूपान्तरित किया। वे हमेशा स्वयंसेवकों को संघ के तत्वज्ञान को अपने आचरण में उतारने के लिए प्रेरित करते रहते थे। संगीत, साहित्य एवं अध्यात्म से उनका गहरा लगाव था। उन्हें श्रीमद्भागवद्गीता एंव महाकवि कालिदास का मेघदूत पूरी तरह कंठस्थ था। वीर सावरकर जी की कविताएं भी उन्हें बहुत प्रिय थी। विशेषकर उनकी लिखी स्वातंत्रदेवता की आरती 'ज्योस्तुते श्री महन्मंगले' को वे अक्सर सुनना पसन्द करते थे। उनके देहान्त पर रांची एक्सप्रेस, रांची बिहार ने अपने संपादकीय में लिखा था- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख के रूप मे, बालासाहब ने अपने लगभग दो दशकों के कार्यकाल के दौरान न केवल लाखों लोगों को समाज सेवा के लिए प्रेरित किया बल्कि भारतीयता के गंध में, रचे-बसे नए भारत के निर्माण की राह भी दिखलाई। वे मानते थे कि सेवा भाव से ही समाज की विभिन्न इकाइयों का दिल जीता जा सकता है और उन्हें आपस में जोड़कर, अन्ततः राष्ट्रचेतना का विकास किया जा सकता है।

प.पू. बालासाहब देवरस सांस्कृतिक एकता के प्रबल समर्थक थे और इस अर्थ में वे एक सामाजिक अभियन्ता के रूप में, नए भारत के नव निर्माण के लिए एक-एक ईंट जोड़ते रहे। संघ का बीजारोपण यदि डॉक्टर हेडगेवार ने किया तो प.पू. गुरुजी ने उसे पुष्पित और पल्लवित किया और उसे अपार विस्तार माननीय बालासाहब देवरस ने दिया। आधुनिक भारतीय इतिहास उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के उल्लेख के बिना अपूर्ण है। ▪

राष्ट्र और राज्य

पं. दीनदयाल उपाध्याय

राष्ट्र और राज्य दो अलग-अलग सत्ताएँ हैं। बहुत से लोग इस अन्तर को नहीं समझ पाते। वे राज्य और राष्ट्र को एक ही समझ कर चलते हैं और वैसा ही प्रयोग करते हैं।

राज्य के लिए राष्ट्र या राष्ट्र के लिए राज्य? इस प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर पाना है तो हमें इन दोनों के वास्तविक महत्व को समझना होगा।

आज जिस अर्थ में शासन की ओर से राष्ट्रीयकरण की मांग गुंजायी जा रही है हम आँख बंद करके इसके समर्थक नहीं हो सकते। एक सज्जन कहने लगे कि आप राष्ट्र के प्रति सम्पूर्ण समर्पण के लिए कृतसंकल्प हैं, फिर राष्ट्रीयकरण में मर्यादा की बात आप क्यों करते हैं? निस्संदेह यह प्रश्न जितना सरल है उसका उत्तर उतना ही गम्भीर है। राष्ट्रकार्य के व्रती प्रत्येक व्यक्ति को राष्ट्र और राज्य का अन्तर भली-भांति समझ लेना चाहिए चारों ओर व्याप्त राजनीति के कोलाहल में आज राष्ट्र और राज्य के बीच मूलगामी और सूक्ष्म अन्तर को समझ पाना कठिन होता जा रहा है। यही कारण है जो हम राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय प्रगति, राष्ट्रीय लक्ष्य आदि कितने ही महत्वपूर्ण प्रश्नों का समाधानकारक उत्तर खोज पाने में असमर्थ हो रहे हैं। यहाँ तक कि हम अपने राष्ट्र-जीवन की शुद्ध सांस्कृतिक धारा के सम्बन्ध में भी भ्रमित-चित्त हो गये हैं। वास्तव में राष्ट्र और राज्य दो अलग-अलग सत्ताएँ हैं। बहुत से लोग इस अन्तर को नहीं समझ पाते। वे राज्य और राष्ट्र को एक ही समझ कर चलते हैं और वैसा ही प्रयोग करते हैं। राज्य के लिए राष्ट्र या राष्ट्र के लिए राज्य? इस प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर पाना है तो हमें इन दोनों के वास्तविक महत्व को समझना होगा।

राष्ट्र एक जीवमान इकाई है। वर्षों-शताब्दियों लम्बे कालखण्ड में इसका विकास होता है। किसी निश्चित भू-भाग में निवास करने वाला मानव समुदाय जब उस भूमि के साथ तादात्म्य का अनुभव करने लगता है, जीवन के विशिष्ट गुणों को आचरित करता हुआ समान परम्परा और महत्वाकांक्षाओं से युक्त होता है, सुख-दुःख की समान स्मृतियाँ और शत्रु-मित्र की समान अनुभूतियाँ प्राप्त कर परस्पर हित सम्बन्धों में ग्रथित होता है, संगठित होकर अपने श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों की स्थापना के लिए सचेष्ट होता है और इस परम्परा का निर्वाह करने वाले तथा उसे अधिकाधिक तेजस्वी बनाने के लिए महान तप, त्याग, परिश्रम करने वाले महापुरूषों की श्रृंखला निर्माण होती है तब पृथ्वी के अन्य मानव समुदायों से भिन्न एक सांस्कृतिक जीवन प्रकट होता है। इस भावात्मक स्वरूप को ही राष्ट्र कहा जाता है।

जब तक यह राष्ट्रीय अस्मिता बनी रहती है राष्ट्र जीवित रहता है। इसके क्षीण होने से राष्ट्र क्षीण होता है और नष्ट होने से राष्ट्र नष्ट हो जाता है। इस प्रकार राष्ट्र एक स्थायी सत्य है। राष्ट्र की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए राज्य पैदा होता है। राज्य की उत्पत्ति के दो कारण बताये जाते है। याने राज्य की आवश्यकता दो स्थितियों में होती है। पहली आवश्यकता तब होती है जब राष्ट्र के लोगों में कोई विकृति आ जाये। उसके कारण उत्पन्न समस्याओं का नियमन करने के लिए राज्य उपस्थित किया जाता है। उदाहरण के लिए किसी मोहल्ले में यदि कोई झगड़ा न हो और न ही ऐसी कोई सम्भावना हो तो पुलिस कही नहीं दिखाई पड़ती। किन्तु यदि झगड़ा हो जाये तो झट पुलिस को बुलाया जाता है। दूसरी आवश्यकता तब पड़ती है जब समाज में कोई जटिलता आ उपस्थित हुई हो। सार्वजनिक जीवन में व्यवस्था निर्माण करना जरूरी हो। निर्बलता, असहायता और दरिद्रता का लाभ शक्तिशाली, सम्पन्न और साधन-युक्त वर्ग न उठा सके, सब न्याय की सीमाओं में बंधे चल सकें, इसके लिए राज्य का निर्माण किया जाता है। वास्तव में इन दो कारणों से ही 'राज्य' उत्पन्न होता है। समाज में आई हुई विकृति का नियमन करने के लिए विकृत व्यक्तियों को दण्डित करना याने शांति स्थापित करना और समाज में आई हुई जटिलता को सुलझाकर प्रत्येक व्यक्ति के लिए न्यायपूर्ण, सम्मानित जीवन बना देना याने सुव्यवस्था करना ही राज्य के कार्य माने गये हैं। तीसरा एक कार्य जो इन्हीं दोनों कार्यों की पूर्ति का महत्वपूर्ण अंग है वह विश्व के अन्य राज्यों के साथ सम्बन्ध स्थापित करना है। याने बाहरी आक्रमण से रक्षा करने का कार्य भी राज्य करता है।

इसके लिए राज्य राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरणार्थ जिसे हम संयुक्त राष्ट्र संघ कहते है, वास्तव में वह राष्ट्रों का संघ नहीं, राज्यों का संघ है। राष्ट्रों के प्रतिनिधि के रूप में वहाँ राज्य उपस्थित हैं। किन्तु यदि राज्य में विकृति आ जाये अथवा वह अपने दायित्व को निभाने में असमर्थ सिद्ध हो तो राष्ट्र ऐसे राज्य को बदल डालता है। राष्ट्र अपने प्रतिनिधि को बदल डालता है। साधारण अर्थ में कहते हैं कि अमुक देश में सरकार बदल गई। जिसे हम प्रजातंत्र कहते हैं वह भी राज्य के उपयोगी बनाये रखने और आवश्यकता पड़ने पर उसे बदल डालने की प्रक्रिया का ही नाम है। राज्य बदला जा सकता है किन्तु कोई भी प्रजातंत्र राष्ट्र

राष्ट्र के लिए राज्य है, राज्य के लिए राष्ट्र नहीं। इस प्रकार राजनीति के लिए राष्ट्रीयता नहीं राष्ट्रीयता के पोषण के लिए राजनीति होनी चाहिए।

वह राजनीति जो राष्ट्र को क्षीण करे अवांछनीय रहेगी। यही बात सुराज्य और स्वराज्य में भी भेद स्पष्ट करती है। स्वराज्य में यदि कष्ट हो तो भी वह उचित है बजाय उस सुराज्य के जो पराया हो।

को नहीं बदल सकता। राष्ट्र का अस्तित्व बहुमत और अल्पमत पर आधारित नहीं रहता। राष्ट्र की एक स्वयंभू सत्ता है। वह स्वयं प्रकट होती है और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में विभिन्न इकाइयों की स्थापना करती है। ये विभिन्न इकाइयाँ जिनमें राज्य भी एक है आपस में परस्पर अनुकूल होकर कार्य करें और राष्ट्र की शक्ति को मजबूत करने के लिए अथक प्रयत्नशील हों इसके लिए आवश्यक होता है कि राष्ट्र को सदैव जाग्रत रखा जाये।

राष्ट्र के सुप्त होने से ही सब प्रकार की खराबियाँ घर करती हैं। राष्ट्र सुप्त होने से उसकी विभिन्न इकाइयों का प्रतिनिधित्व करने वाली सत्ताएँ जैसे राज्य, पंचायत, परिवार आदि सभी अनियंत्रित और उच्छृंखल हो जाती है। राज्य भ्रष्ट हो सकता है। प्रभुता पाय काहि मद नाहीं वाली चौपाई सही उतरती है। किन्तु यदि राष्ट्र जाग्रत और दक्ष हो तो राज्य की प्रभुता मर्यादित रहती है। राज्य तो राष्ट्र का वकील है। कई बार वकील अपने मुवक्किल की ओर से पैरवी करते समय ऐसी भाषा में बातचीत करता है मानों वही प्रार्थी है। ऐसा करना जरूरी होता है। वकालतनामा लिख दिया जाता है किन्तु यदि वकील ठीक काम न करे तो वकालतनामा बदला जा सकता है। यही बात राज्य के साथ भी है। राज्य के समस्त अधिकार राष्ट्र द्वारा ही प्रदान किये जाते हैं और यदि राष्ट्र जाग्रत न रहा तो राज्य उन अधिकारों का दुरूपयोग कर सकता है। राज्य यदि अनियंत्रित होकर राष्ट्र के समस्त सत्ताओं का अपहरण कर ले तो तानाशाही स्थापित हो जाती है और राष्ट्र पंगु हो जाता है।

इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि राज्य का महत्व कम है। राज्य का महत्व विवादातीत है। राष्ट्र की अभिवृद्धि करना, संरक्षण करना वैभवशाली बनाना, राष्ट्र की आवश्यकतानुसार निर्णय लेकर विश्व सम्बन्धों में पग उठाना आदि कार्य राज्य के हैं। इतना होते हुए भी राज्य सदा स्थायी नहीं रहता। ऐसे अवसर भी आ सकते हैं जब राज्य न हो परन्तु राष्ट्र विद्यमान रहता है। सतयुग का ऐसा ही वर्णन मिलता है। सतयुग का वर्णन करते हुए कहा गया है न राज्य न च राजाऽऽसीत न दण्ड्यो न च दाण्डिकः याने तब न राज्य था, न राजा था, न दण्ड था, न दण्ड देने वाला। किन्तु तब भी राष्ट्र तो था ही। इसी प्रकार की कल्पना साम्यवादी उद्घोषक कार्लमार्क्स ने भी विदरिंग अवे आफ दी स्टेट (राज्य के क्षीण हो जाने) के माध्यम से स्वीकार की है। उसकी भी यही कल्पना है कि अन्त में राज्य नहीं रहेगा। तब क्या रहेगा? निश्चित ही किन्हीं सर्वमान्य सिद्धान्तों के आधार पर राष्ट्र रहेगा। भले ही १९वीं शती में मार्क्स ने राष्ट्र को नहीं माना किन्तु विगत ५० वर्षों के कम्युनिस्ट अनुभव से यह सिद्ध हो चुका है राष्ट्र की प्रेरणा महज पूंजीवादी व्यवस्था की उपज नहीं है, अपितु कम्युनिस्ट व्यवस्था में भी वही जीवन की सबसे शक्तिदायी प्रेरणा है। इतना ही नहीं जब कोई राष्ट्र गुलाम हो जाता है या उस राष्ट्र की भूमि का कोई हिस्सा गुलाम हो जाता है याने पराया राज्य स्थापित हो जाता है तब भी राष्ट्र रहता है। जैसे कि जब अंग्रेज यहाँ आये, उसका शासन हुआ देश गुलाम हुआ तो ब्रिटिश गवर्नमेंट कही जाने लगी।

उस समय भारतीय राज्य नष्ट हो गया था अथवा भारतीय राजाओं की संकुचित सीमाओं में कुण्ठित होकर पराये राज्य का आश्रित बन गया था। लेकिन क्या कोई कह सकता है कि तब भारतीय राष्ट्र नहीं रहा था? यदि भारत का राष्ट्रजीवन न रहा होता तो आजादी के प्रयत्न ही नहीं होते। राज्य नष्ट होने पर भी राष्ट्र विद्यमान था। इसलिए राष्ट्रीय-जागरण का मंत्र फूँका गया। चेतना जगी। राष्ट्र अपनी अभिव्यक्ति के लिए स्वराज्य घोष करने लगा। वह कौन था जो राज्य न होते हुए भी स्वराज्य की प्राप्ति के लिए फांसी के फंदों को चूमने या काले पानी की सजा भुगतने के समय हृदय में विश्वास और आनन्द की सृष्टि करता था? उस समय भी राष्ट्र विद्यमान था। साहित्य, कला, दर्शन, वाणिज्य के विविध क्षेत्रों में इसी के प्रतिबिम्ब मुखरित हो रहे थे। वन्दे मातरम् के घोष पर वह किसकी प्रेरणा थी जो बलिदान के लिए उद्यत करती थी? कौन था जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक भाव का अलख गुंजा रहा था? निश्चित ही वह राष्ट्र था राज्य नहीं। ऐसे ही जब राष्ट्र पूर्ण विकसित होता है तो उसके अन्तर्गत अनेक राज्य हो सकते हैं। ये राज्य भिन्न-भिन्न रूप और पद्धतियों के भी हो सकते हैं। भारतीय इतिहास में हम ऐसे कई राजवंशों का वर्णन पाते हैं। ये राज्य भिन्न-भिन्न पद्धतियों का भी पालन करते हैं। कहीं गणराज्य थे तो कहीं संघराज्य, कहीं वैराज्य था तो कहीं राजतंत्र। इनके आकार भी भिन्न थे। ये सब राज्य सत्ताएँ उभरती और विलीन होती रही। किन्तु राष्ट्र सर्वकाल विद्यमान रहा और इन परिवर्तनों का नियमन करता रहा। राज्य स्थायी नहीं रहते। जैसे शरीर पर कपड़े आवश्यकतानुसार बदलते रहते हैं वैसे राज्य भी राष्ट्र की आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रकट होते हैं और आवश्यकतानुसार उनके विविध स्वरूप हो सकते हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि राष्ट्र के लिए राज्य है, राज्य के लिए राष्ट्र नहीं। इस प्रकार राजनीति के लिए राष्ट्रीयता नहीं राष्ट्रीयता के पोषण के लिए राजनीति होनी चाहिए। वह राजनीति जो राष्ट्र को क्षीण करे अवांछनीय रहेगी। यही बात सुराज्य और स्वराज्य में भी भेद स्पष्ट करती है। स्वराज्य में यदि कष्ट हो तो भी वह उचित है बजाय उस सुराज्य के जो पराया हो। स्वराज्य की व्याख्या में तीन बातें प्रमुख रूप से आती हैं। पहली बात तो यह है कि राज्य उन लोगों के द्वारा संचालित हो जो राष्ट्र के अंग है। दूसरी विशेषता यह है कि ऐसा राज्य राष्ट्र के हित में चलना चाहिए याने राष्ट्रीय हित में नीतियों का संचालन होना चाहिए। और तीसरी बात यह है कि ऐसे राज्य में राष्ट्र का हित साधने का सामर्थ्य अपना स्वयं का होना चाहिए याने स्वावलम्बन के बिना स्वराज्य की कल्पना करना ही गलत है। राज्य अपने राष्ट्र के घटकों के हाथ में रहने पर भी यदि आर्थिक अथवा वैदेशिक मामलों में किसी अन्य राष्ट्र का पिछलग्गू बन गया या दबाव में आने लगा तो स्वराज्य निरर्थक हो जाता है। सुरक्षा के मामले में यदि राज्य आत्मनिर्भर नहीं, नीतियों के मामले में स्वतंत्र नहीं और आर्थिक योजना में स्वयं पूर्ण नहीं तो वह राष्ट्र के लिए अहितकर कार्य करने की ओर प्रेरित हो जाता है।

ऐसा परावलम्बी राज्य विनाश का कारण बनता है। इसलिए स्वराज्य भी तभी तक उपयोगी और सार्थक है जब तक वह स्वराष्ट्र की आवश्यकता की पूर्ति करता है। यह तभी हो सकता है जब राष्ट्रीय समाज राज्य से बढ़कर राष्ट्र की आराधना करें। सच्चा सामर्थ्य राज्य में नहीं राष्ट्र में ही रहता है। इसलिए जो राष्ट्र के प्रेमी हैं वे राजनीति के ऊपर राष्ट्रभाव का आराधन करते हैं। राष्ट्र ही एकमेव सत्य है। इस सत्य की उपासना करना सांस्कृतिक कार्य कहलाता है। राजनीतिक कार्य भी तभी सफल हो सकते हैं जब इस प्रकार के प्रखर राष्ट्रवाद से युक्त सांस्कृतिक कार्य की शक्ति उसके पीछे सदैव विद्यमान रहे। ▪

(राष्ट्र जीवन की दिशा से साभार)

▶ केन्द्रिय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने श्री पीतांबरा पीठ में पूजा-अर्चना की।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी के आगमन पर भव्य स्वागत किया गया।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने सार्वजनिक सभा को संबोधित किया।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी एवं वरिष्ठ नेताओं ने विधानसभा चुनाव के लिए संकल्प पत्र लॉन्च किया।

▶ केंद्रीय मंत्री श्री अमित शाह जी ने चुनाव प्रचार किया।

▶ मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने चुनावी सभा को संबोधित किया।

▶ केंद्रीय मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी ने जनसभा को संबोधित किया।

▶ राष्ट्रीय महासचिव श्री कैलाश विजयवर्गीय जी ने जनसभा को संबोधित किया।

चलता-चलाता कालचक्र,
अमृत काल का भालचक्र,
सबके सपने अपने सपने,
पनपे सपने सारे,
धीर चले, वीर चले,
चले युवा हमारे,
नीति सही रीति नई,
गति सही राह नई
चुनो चुनौती सीना तान,
जग में बढ़ाओ
देश का नाम।